December I 2014

Every Fortnight

मूल्य ♦ दस रुपए

बालवंस

- जंतु संसार के ठग
- बारह हो गये तेरह
- मेट्रो स्टेशन कहें या पर्यटन स्थल

चित्रकथा 'चाचा नेहरू' का समापन भाग

राजस्थान पत्रिका प्रकाशन

वर्ष- 29 अंक- 10 1-15 दिसम्बर, 2014 पृष्ठ- 68

JBC

वर्ष- 29 अंक-10

दिसम्बर (प्रथम) 2014, जयपुर

विविध

कविताएं- 5
गुदगुदी- 12-13
सीख सुहानी- 14
सैरसपाटा- 16-17
इल्यूजन- 18-19
बोलें अंग्रेजी- 21
तथ्य निराले- 22-23
सामान्य ज्ञान- 24-25
बालहंस न्यूज- 26
मेट्रो स्टेशन कहें या पर्यटन स्थल- 43-45
क्यों और कैसे/ कमाल है- 46
क्रॉसवर्ड पजल्स- 47
बालमंच- 48
नॉलेज बैंक- 49
आर्ट जंक्शन- 50-51
माथापच्ची- 52-53
किड्स क्लब- 54
ठिकाना तो बताना- 55
जंतु संसार के ठग- 56-57
ढूंढो तो...- 61
अंतर बताओ- 62
कैसा लगा- 66

कहानियां

बारह हो गये तेरह- 6-7
पूंछ नहीं मिली, कान भी गंवाए- 8-9
भूरे भेड़िए- 10-11

प्रतियोगिताएं

प्रतियोगिता परिणाम-58
ज्ञान प्रतियोगिता-59
रंग दे प्रतियोगिता-60

चित्रकथा

चाचा नेहरू (समापन भाग)- 27-42
बंदर का डर- 63-65

संपादक
आनन्द प्रकाश जोशी

उप संपादक
मनीष कुमार चौधरी

संपादकीय सहयोग
किशन शर्मा

चित्रांकन

पृष्ठ सज्जा: **शेरसिंह**

फोटो एडिटिंग: **संदीप शर्मा**

संपादकीय सम्पर्क

बालहंस (पाक्षिक)
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान) पिन-302 004
दूरभाष: 0141-3005857
e-mail: balhans@epatrika.com

ग्राहक शुल्क

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं।
वार्षिक- 240/-रुपए
अर्द्धवार्षिक- 120/-रुपए

अब बालहंस एक क्लिक पर, **log on** करें : **balhans.patrika.com**
फेसबुक पर पढ़िये: **www.facebook.com/patrikabalhans**

सब्सक्रिप्शन एवं वितरण संबंधी जानकारी के लिए 0141-3005825 पर संपर्क करें।

समय हमेशा कड़ी मेहनत करने वालों का मित्र रहा है।

संपादकीय

दोस्तो,

सर्दी ने दस्तक दे दी है। अब यह जल्दी ही रंग में आने वाली है। मौसम-ऋतु चाहे कोई भी हो, सबकी अपनी-अपनी पसंद होती है। किसी को सर्दी अच्छी लगती है तो किसी को गर्मी। कोई बारिश देखकर खुश होता है। मौसम केवल मन की इच्छा या केवल महसूस कर सकने का नामभर नहीं है। यह आपकी कार्य करने की इच्छा और उत्साह को भी प्रभावित करता है। यूं कहें कि मौसम कई बार हमें चार्ज या रिचार्ज कर देता है तो गलत नहीं होगा। लेकिन समझदारी इसी में है कि हम मौसम को अपने हिसाब से ढाल लें, क्योंकि मौसम यानी प्रकृति पर तो हमारा बस चलने से रहा। वैसे भारत जैसे मूलतः गर्म देश के लिये सर्दियां कंपा देने वाली यदाकदा ही होती हैं। हां, सेहत बनाने के लिये सर्दी से बेहतर मौसम कोई नहीं होता, जब शरीर में ज्यादातर खाया-पीया पच जाता है। तो दोस्तो, सर्दी में सवेरे उठने में आलस नहीं करना है, और खूब हेल्दी खानपान लेना है। क्योंकि आमतौर पर सर्दियों के बाद वार्षिक परीक्षा से सामना होता है। परीक्षा के लिये तन-मन स्वस्थ हो, यह सबसे जरूरी है।

तुम्हारा बालहंस

गरम पकौड़े

तरम-तरम, तर-तरम पकौड़े
अच्छे लगते गरम पकौड़े।

तेल कड़ाही का पी डाला,
आलू खाए, गोभी खाई,
बैंगन प्याज हजम कर डाले
फिर भी इनको लाज न आई।

हैं कितने बेशर्म पकौड़े
अच्छे लगते गरम पकौड़े,

चटनी के संग खाता कोई
कोई खाता दही चाट से,
मिर्च-मसाला लेकर कोई
उड़ा रहा है बड़े ठाट से।

रखते सबका भरम पकौड़े
अच्छे लगते गरम पकौड़े।

बबली का मुंह जलता इनसे
सी-सी कर के करे गरारे,
बड़े चाव से खाएं चाचा
भाते उनको कड़क-करारे।

कक्का मांगे नरम पकौड़े
अच्छे लगते गरम पकौड़े।

-अब्दुल मलिक खान

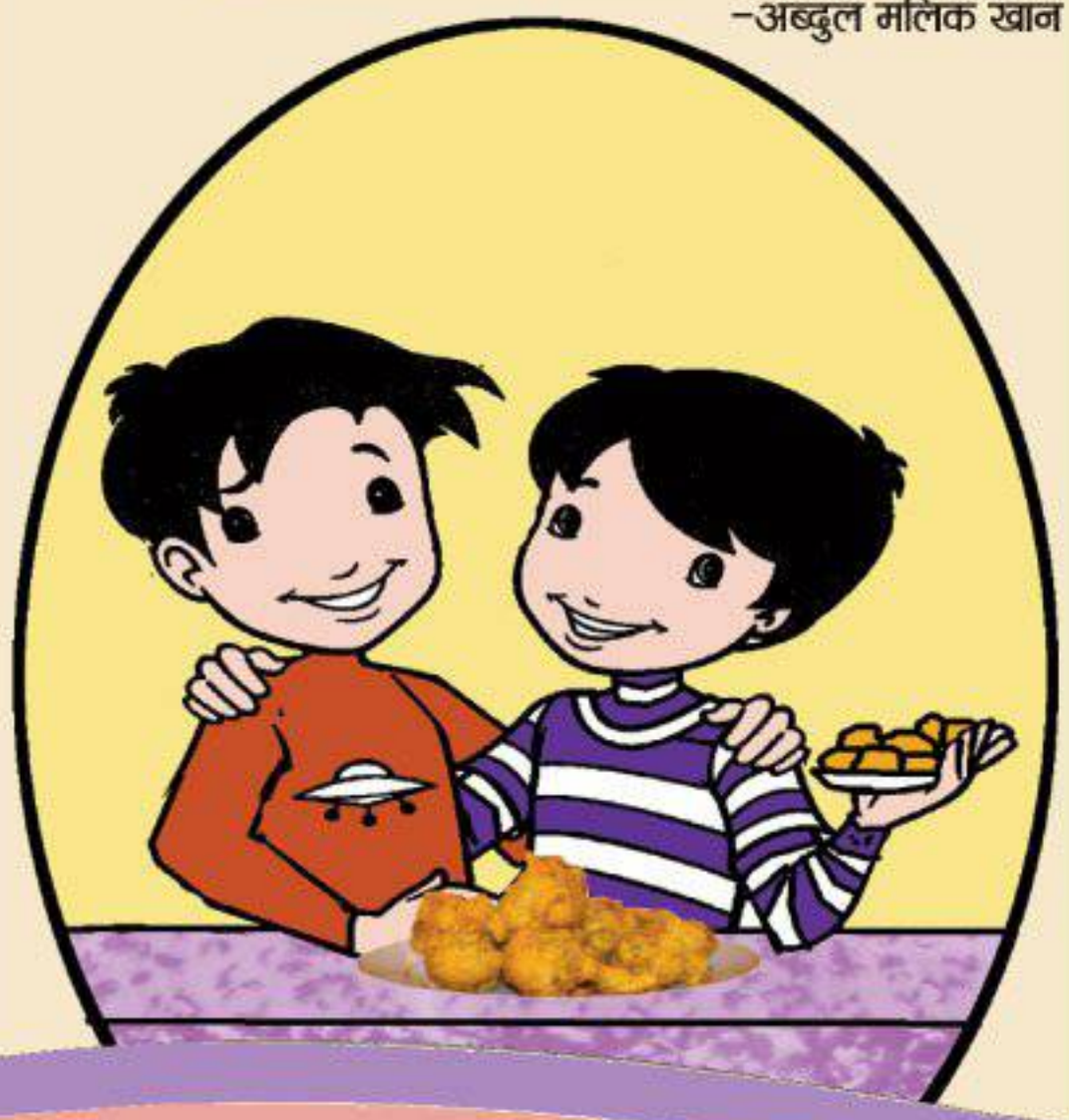

सरदी का ढोल

धूप लगे अब बड़ी अनमोल,
बजने लगा सरदी का ढोल।

सूरज दादा छिपकर बैठे
कोहरा जी अकड़ में ऐंठे,
कॉफी देख मन जाता डोल
बजने लगा सरदी का ढोल।

गरम वस्त्र अब तन को भावे
सर्द हवा लो हमें सतावे,
बढ़वा लिया स्वेटर ने मोल
बजने लगा सरदी का ढोल।

कसरत चुस्ती-फुर्ती लाती,
तन की मालिश बात बनाती,
जल्दी करो तुम बिस्तर गोल
बजने लगा सरदी का ढोल।

खेतों में फैले हरियाली,
सरसों की है बात निराली,
मीठे बड़े कोयल के बोल
बजने लगा सरदी का ढोल।

-राजेंद्र निशेश

बारह हो गये तेरह

एक बार एक गुरु अपने बारह चेलों के साथ तीर्थयात्रा पर निकला। अब न तो गुरु ज्ञानी था और न ही चेले। गुरु गुरु था, इसलिये चेले आंख मूंदकर उसकी आज्ञा का पालन करते। चलते-चलते दिन ढला और सामने पूरे वेग से बहती एक नदी नजर आयी।

गुरु ने अपनी छड़ी की दीवार बनाते हुए चेलों को पीछे करते हुए कहा, 'रुको! इस नदी से बच कर चलना है। न जाने कितने लापरवाह लोगों को इसने अपने पेट में समाया है। हो सकता है कि अब हमारी बारी हो। लेकिन तुम सब डरो नहीं, तु□हारे साथ तु□हारा गुरु है। गुरु का ज्ञान बड़ा भारी होता है। उसी ज्ञान के आधार पर कहता हूं कि नदी अभी जाग रही है। जब तक वह सो नहीं जाती, हमें कुछ समय के लिये यहीं विश्राम करना चाहिये।' गुरु की आज्ञा सिर-माथे। चेले विश्राम की तैयारी करने लगे।

चेलों ने अलाव जलाया। भोजन बनाने की जोर-शोर से तैयारियां होने लगीं। जब भोजन बन गया तो गुरु ने चेलों के साथ पेट-पूजा की और भोजन उपरान्त अपनी तोंद को थपथपाते एक चेले को बुला कर कहा, 'अलाव से एक जलती लकड़ी ले जाओ। उस लकड़ी को नदी से छुआ कर देखो कि वह अभी तक जाग रही है अथवा सो गयी।'

चेले ने गुरु का कहा किया। लेकिन जैसे ही अलाव की लकड़ी नदी के ठंडे पानी में उतरी, एक हल्की-सी सीटी बजने लगी। सारी आग बुझ कर धुआं हो गयी। चेला सिर पर पांव रख सरपट गुरु की तरफ भागा। गुरु के पास पहुंच थर-थर कांपते हुए बोला, 'गुरुजी! नदी तो नागिन की तरह जाग रही है। जैसे ही अलाव की लकड़ी ने उसे छुआ कि सी-सी करती, फुंफकारती वह मेरी तरफ झपटी। 'बाप रे! मेरी तो जान आज बाल-बाल बची।'

तभी पास खड़े एक अन्य शिष्य ने कहा, 'वाकई इस नदी का कोई भरोसा नहीं। अब देखो न, एक बार मेरे दादाजी नमक के बोरे लादे इस नदी को पार कर रहे थे। उस दिन बड़ी गर्मी थी। दादाजी ने एक डुबकी लगाई तो सारा शरीर शीतल हो गया। अचानक गधों को देख कर दादाजी को खयाल आया कि बेचारे जानवर, बोलते नहीं तो □या, इनको भी गर्मी सता रही होगी। बस, फिर □या था। पुण्य कमाने का मौका वे हाथ से यूं ही जाने देते! दादाजी ने दोनों गधों को पकड़कर उन नास्तिक गधों की रेंक-रेंक कर की गयी ना-नुकुर के बाद भी आखिर एक-एक

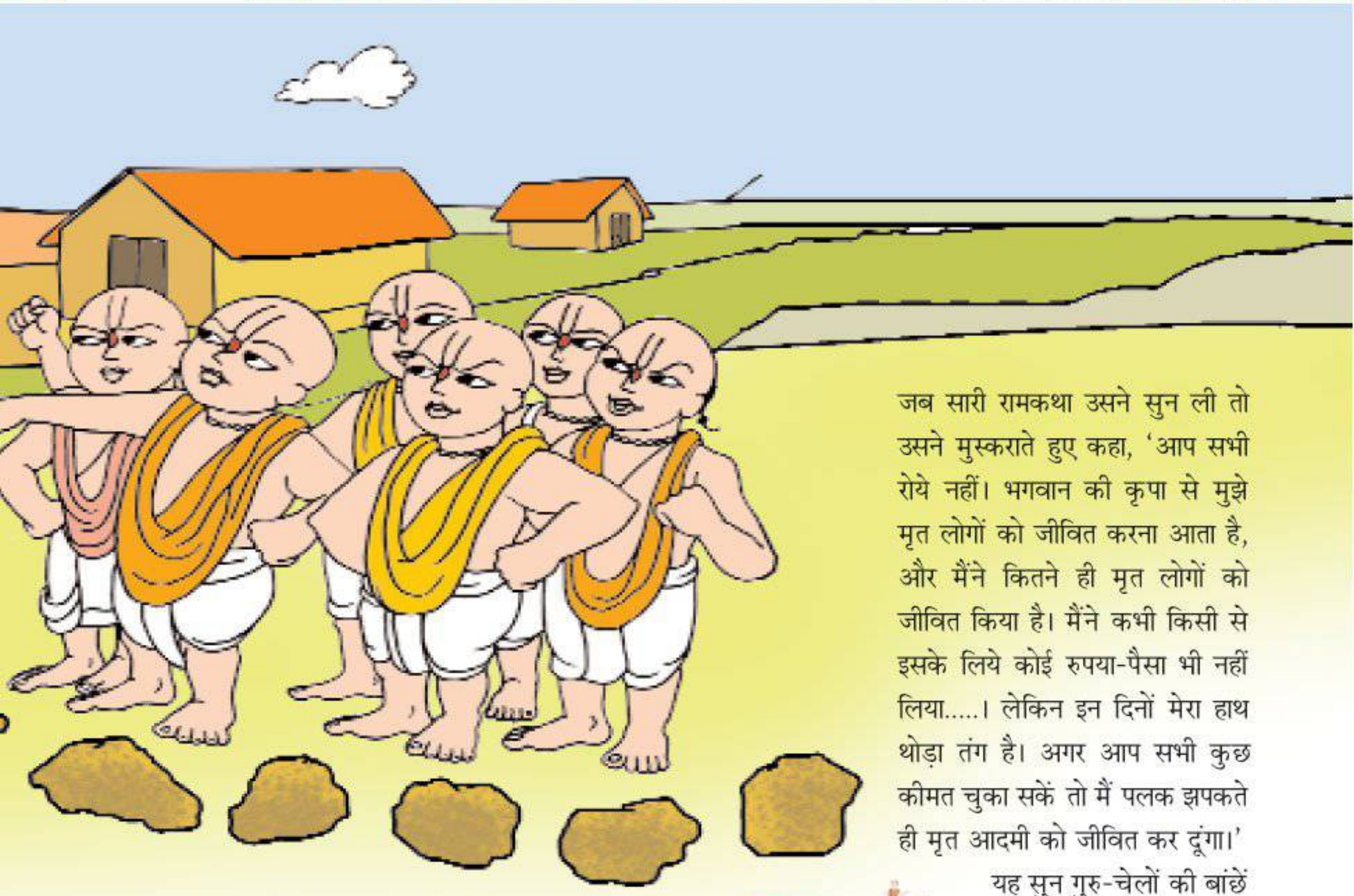

कहानी

दादाजी ने नदी पार जा कर जब नमक के बोरे संभाले तो उनमें र□ीभर भी नमक न था। अब बोलो, बोरों की सीवन सही, यहां तक कि किसी भी बोरे में किसी भी तरह का छेद भी नहीं। पता नहीं, इस बदमाश नदी ने दादाजी को कैसे चकमा दे कर बोरों का सारा नमक चट कर लिया।

खैर, सारी रात गुरु-चेलों ने नदी से सौ कदमों की दूरी पर विश्राम किया। सुबह हुई तो गुरु के आदेश पर चेले ने बुझी लकड़ी से नदी का पानी छू कर देखा। इस बार न कोई सी-सीकारा उठा और न कोई धुआं। गुरु ने खुश हो कर चेलों को नदी पार करने की आज्ञा दे दी। सभी एक-दूसरे का हाथ पकड़ नदी के उस पार उतरे। जब सभी उस पार सकुशल पहुंच गये तो गुरु ने चेलों से कहा, 'पार पहुंचे, यह अच्छा। लेकिन चालाक नदी का □या भरोसा! जो बंद बोरों का नमक चट कर सकती है वह पूरे के पूरे आदमी को भी आंखों में धूल झोंक कर निगल सकती है। अच्छा है कि हम सभी अपनी गिनती कर लें।'

अब गुरु ने खुद को छोड़ सिर्फ चेलों को गिना तो उसके मुंह से आह निकल गयी। 'हे भगवान! आखिर दुष्ट नदी ने मेरा एक शिष्य निगल ही लिया।' गुरु ने विलाप करते शिष्यों से कहा। मूढ़ शिष्यों ने अपने गुरु की भांति ही खुद को छोड़कर गिनती की और सभी ने सर्वस□मति से आह भरी, विलाप किया कि उनका एक साथी नदी का शिकार हो गया था। सभी नदी को कोसते हुए उसे तरह-तरह के श्राप देने लगे।

तभी उधर से एक आदमी गुजरा। जब उसने रोते-कलपते गुरु-शिष्यों को देखा तो आगे न बढ़ सका। माजरा जानने वह उन लोगों के पास पहुंचा। जब सारी रामकथा उसने सुन ली तो उसने मुस्कराते हुए कहा, 'आप सभी रोये नहीं। भगवान की कृपा से मुझे मृत लोगों को जीवित करना आता है, और मैंने कितने ही मृत लोगों को जीवित किया है। मैंने कभी किसी से इसके लिये कोई रुपया-पैसा भी नहीं लिया.....। लेकिन इन दिनों मेरा हाथ थोड़ा तंग है। अगर आप सभी कुछ कीमत चुका सकें तो मैं पलक झपकते ही मृत आदमी को जीवित कर दूंगा।'

यह सुन गुरु-चेलों की बांछें खिल गईं। उन सभी ने जो-जो अपनी अंटी में था, उस आदमी के हवाले कर दिया। उस आदमी ने सारी नकदी अपनी अंटी में खोंस एक चेले को एक टोकरीभर गाय का गोबर लाने को कहा। चेला कुछ ही समय में पास के गांव में जा कर एक टोकरीभर गोबर ले आया। अब चालाक आदमी ने एक कतार में गोबर डलवाया। फिर गोबर की ढेरियां लगवाईं। झूठ-मूठ का मंत्र पढ़ सभी को एक-एक कर ढेरियां गिनवाईं। सभी ने सावधानीपूर्वक गिना। एक, दो, तीन, चार...। अरे यह □या, पूरी तेरह की तेरह ढेरियां!

गुरु-चेले खुशी से झूम उठे। सभी मूर्खों ने चालाक आदमी के प्रति पूरे मन से अपना आभार व्यक्त किया। चालाक आदमी ने हंसते हुए वहां से विदा ली। उसे कुछ और बारह के तेरह करने थे...., ताकि

-शैलेन्द्र सरस्वती

पूंछ नहीं मिली, कान भी गंवाए

ईरानी मुहावरा है। बेचारे ख़र आरज़ू दुम कर्द न याफ़ते दुमए दो गूश गुम कर्द अर्थात बेचारे गधे ने पूंछ की कामना की, पर पूंछ तो मिली नहीं, दो कान भी हाथ से गये।

पुराने समय की बात है कि एक गांव के जानवरों के बीच एक मनमौजी और लापरवाह गधा था, जिसे इधर-उधर घूमना बहुत पसंद था। मनमौजी गधा जब भी चाहता किसी के खेत और बाग में घुस जाता और जमकर खाता, फिर खूब हड़कंप मचाता। गांववासी उससे तंग आ चुके थे। उन्होंने उसके मालिक से कहा, 'यदि तुमने अपने मनमौजी गधे को नहीं रोका तो उसके लिए समस्याएं खड़ी हो जाएंगी।'

एक दिन यह गधा एक किसान के खेत में घुसकर गेहूं खा रहा था कि फंस गया। कुछ लोग जिन्होंने किसान के खेत में घुसकर गेहूं खाते हुए गधे को देखा। उन्होंने उसे पकड़कर उसकी पूंछ काट दी। फिर बोले, 'ये इसलिये कि अब तुम दूसरों के खेत और बाग में न घुसो।' गधे के मालिक ने जब यह सुना तो वहां पहुंचा। किन्तु बहुत देर हो चुकी थी। उसने अपने पूंछ कटे गधे को पकड़ा और उसको घर के अस्तबल में ले आया। अस्तबल में पूंछ कटे गधे को देखकर सब हंस रहे थे और उसके बारे में बातें बना रहे थे।

अस्तबल में गधों के मध्य एक बुद्धिमान गधा भी था। उसने मनमौजी गधे से कहा, 'पिछली बातों को भूल जाओ। मैंने तुम से बार-बार कहा है कि अपने इस कार्य से स्वयं को फंसाओगे और बदनाम करोगे।' किन्तु तुमने एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया।

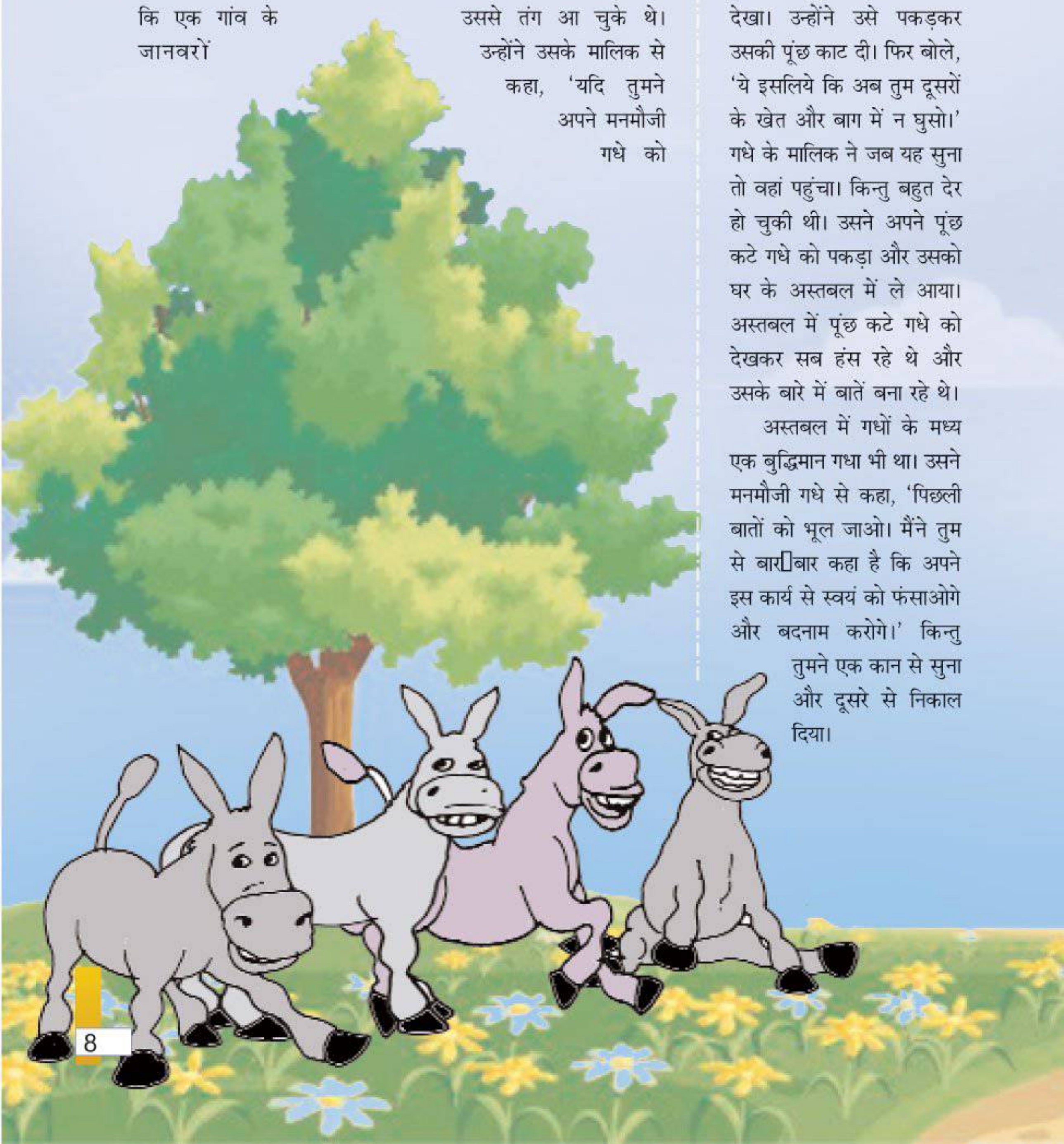

कहानी

'आज के बाद ध्यान रखना।' पूंछ कटे गधे ने कहा, '□या गधा भी पूंछ-कटा हो सकता है?' बुद्धिमान गधे ने कहा, 'अब तुम बिना पूंछ के हो गये हो, तुम □या करना चाहते हो?' मनमौजी गधे ने कहा, 'मैं चाहता था कि मेरे पूंछ होती। ऐसा न होता कि सब मुझे पहचान लें।' बुद्धिमान गधे ने कहा, 'यह वही आपदा है जिसे तुम ने स्वयं मोल लिया है। हां, तुम एक काम कर सकते हो।'

मनमौजी गधे ने अपने कान हिलाए और कहने लगा, 'कैसा रहेगा कि मैं उसी स्थान पर जाऊं, जहां मेरी पूंछ काटी गयी है, उसे ढूंढू और ले आऊं।' ये बातें सुनकर अस्तबल में मौजूद सभी जानवर हंसने लगे। बुद्धिमान गधे ने कहा, 'ये सब छोड़ो, □यों दोबारा समस्याओं को मोल लेना चाहते हो। □या तुमने ये नहीं सुना कि बुरे को और बुरा नहीं करना चाहिए।'

मनमौजी गधे ने कहा, 'इस प्रकार बुरा अच्छा हो जाएगा, तुम देख लेना।' मनमौजी गधा अपने ही में मस्त दूसरे दिन पुनः उसी स्थान पर पहुंचा, जहां उसकी पूंछ काटी गयी थी। उसने थोड़ा गेहूं पर हाथ साफ किया और उसके बाद अपनी कटी पूंछ ढूंढ़ने लगा। वह अपने कार्य में व्यस्त था कि अचानक उसने लोगों की आवाज सुनी।

'अरे-अरे सब यहां आओ। वही मनमौजी गधा फिर आ गया।' पलक झपकते ही गांववासी एकत्रित हो गये। एक ने कहा कि खूब जमकर इसकी पिटाई करो, ताकि बुद्धि आ जाए। दूसरे ने कहा कि इसे पकड़कर इसके मालिक के हवाले कर देते हैं। उनमें से किसी ने कहा कि इसका कोई लाभ नहीं है, यदि इसे बुद्धि आनी होती तो आ चुकी होती। उस बार हमने इसकी पूंछ काटी थी, इस बार इसके कान काट लिये जाएं।'

गधे की समझ में आ गया था कि उसने □या गलती की है। किन्तु अब बहुत देर हो चुकी थी, पछतावे का कोई लाभ नहीं था। गांववासियों ने उसके दोनों कान काट लिए और उसको उसी स्थिति में छोड़ दिया। पूंछ और कान कटा गधा चल पड़ा और अपने अस्तबल में आ गया।

उसके मालिक ने उसे देखा और कहा, 'देखो तुमने फिर समस्या मोल ले ली। तुम फिर मौज मनाने गये थे। दूसरे गधों से □या कहोगे।' मनमौजी गधा अस्तबल में प्रविष्ट हुआ। इस बार अस्तबल के जानवर इतना हंसे कि लोटपोट हो गये, किन्तु केवल बुद्धिमान गधा ही चुप था। एक ने पूछा, 'आप हंस □यों नहीं रहे हैं।' बुद्धिमान गधे ने कहा, '□यों हंसू! हम गधों को तो रोना चाहिए। इस कार्य से हमारे बारे में दोबारा बातें बनाई जाएंगी।' एक गधे ने पूछा कि लोग □या कहेंगे?

बुद्धिमान गधे ने कहा, 'इस चीज से बदतर □या कह सकते हैं कि बेचारे गधे ने पूंछ की कामना की। पूंछ तो मिली नहीं, दोनों कान भी गंवा दिये।'

उस दिन के बाद से जो व्य□ित गलती से अनुकंपा को गंवा देता है, और उसके बाद गंवाई गयी चीज को पाने का प्रयास करता है, फिर दूसरी अनुकंपा भी गंवा देता है तो उसके बारे में ये मुहावरा कहा जाता है कि बेचारे ख़र आरज़ू दुम कर्द न याफ़ते दुमए दो गूश गुम कर्द अर्थात बेचारे गधे ने पूंछ की कामना की। पूंछ तो मिली नहीं, दो कान भी हाथ से गये।

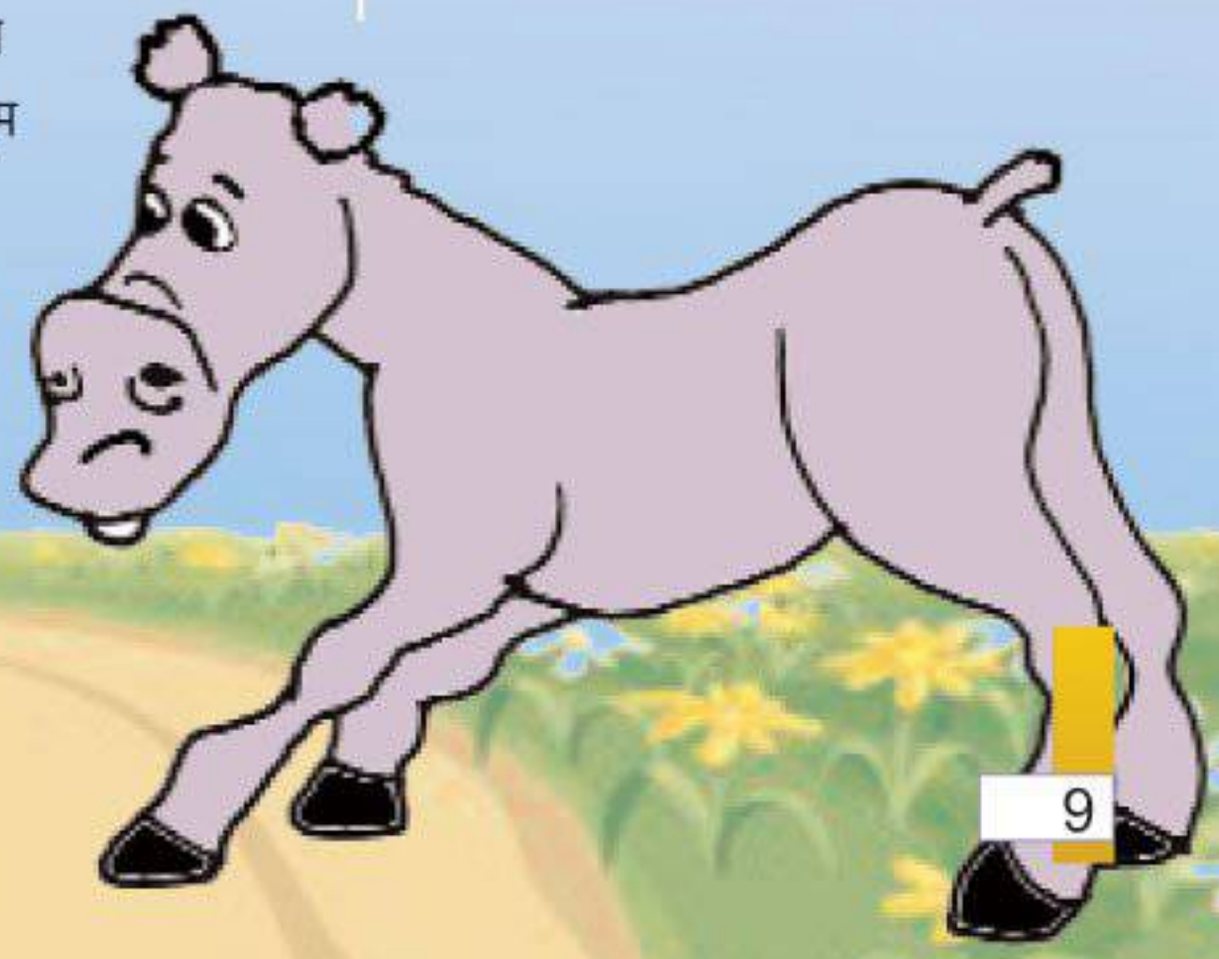

वैसे भी हिरनों को बहुत पानी नहीं चाहिए। यदि उन्हें पानी नहीं मिले तो वे ओस के अलावा पत्तों और डंठलों की नमी से अपनी प्यास बुझा लेते हैं। हिरनों के यहां रहने से भेड़ियों को भी खाने-पीने के लिए किसी अन्य जंगल में जाने की जरूरत नहीं पड़ती। अपने बढ़ते परिवार के लिए भेड़ियों को हिरन जैसे बड़े जानवर का शिकार करना अच्छा रहता है। सभी का पेट भरने के लिए।

एक दिन भूरे भेड़ियों का झुंड किसी शिकार की खोज में निकला। वे कभी-कभी शेर का किया हुआ शिकार भी खा लेते हैं। उन्हें मुफ्त के भोज में बहुत मजा आता है। यदि शेर अपना शिकार खा रहा होता है तो भेड़िये उसके आस-पास मंडराते रहते हैं। किसी आगे बढ़ते भेड़िये को धमकाने के लिए जब शेर आता है, तब दूसरे भेड़िये झपटकर शिकार नोच लेते हैं। इस प्रकार छीना-झपटी चलती रहती है। और भेड़िये मुफ्त की दावत उड़ाते हैं। एक बार शेर का पेट भर जाये, तो उसे भेड़ियों के भोज करने की चिंता नहीं रहती।

आज शिकार पर निकले भेड़ियों ने हवा में चारों ओर सूंघते हुए यह पता लगाने की कोशिश की कि कहीं कोई मरा हुआ जानवर है कि नहीं। उन्हें कहीं भी किसी मरे हुए जानवर की गंध नहीं मिली। इधर कई दिनों से कोई शिकार हाथ नहीं लगा, और कोई मरा हुआ जानवर भी नहीं मिला। 'आज भोजन जरूर लाना, वरना बच्चे भूख से मर जाएंगे।' नन्हे-मुन्ने भेड़ियों की मां ने कहा। 'अवश्य लाएंगे। हमें भी बहुत भूख लगी है।' बड़े भेड़िये ने घर से निकलते हुए कहा। वे सभी कई दिनों से भूखे हैं। भेड़ियों के झुंड ने हिरनों को ढूंढना शुरू कर दिया। कुछ भेड़िये पहले ही आगे भेज दिये गये हैं। वे जानते हैं कि उन्हें क्या करना है। आगे भेजे गये भेड़िये जंगल में लम्बी खाई की ओर गये हैं। वहां एक पतली और कम गहरी, लेकिन लम्बी खाई है।

कहानी

थोड़ी देर बाद भेड़ियों के झुंड को हिरनों की गंध मिली। वे बड़ी सावधानी के साथ हिरनों की ओर बढ़ने लगे। बड़ा भेड़िया सबसे आगे और दूसरे पीछे दौड़ रहे हैं। वे एक जगह रुक गये, क्योंकि अब केवल बड़े भेड़िये को आगे जाना है। वह जैसे ही हिरनों के करीब पहुंचा तो हिरन भाग निकले। वैसे भी हिरन सदैव चौकन्ने रहते हैं। बड़ा भेड़िया यही चाहता था कि हिरन अलग-अलग भागने लगे। फिर वह एक अकेले भागते हिरन के पीछे लग गया। यह संकेत मिलते ही अन्य भेड़िये भी उसी हिरन की ओर आ गये। उन्होंने हिरन को दोनों ओर से घेर लिया। बड़ा भेड़िया हिरन के पीछे लगा रहा। अब भूरे भेड़िये हिरन को संकरी खाई की ओर भगा रहे हैं। वह हिरन भी खाई में उतर कर कच्चे रास्ते पर दौड़ रहा है। यहां धूल और मिट्टी के सिवा कुछ भी नहीं है। अभी हिरन खाई के ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर दौड़ रहा था कि जमीन में गड्ढे बनाकर वहां छिपे हुए भेड़ियों ने उस पर हमला बोल दिया। ये वही भेड़िये हैं, जो पहले ही आकर यहां छिप गये थे। वे हिरन पर घात लगा कर टूट पड़े। अन्य पीछे आते भेड़ियों ने भी उसे दबोच लिया। थोड़ी देर में हिरन घायल होकर ढेर हो गया।

भूरे भेड़िये घात लगाकर शिकार करते हैं। इसलिए वे खतरनाक कहे जाते हैं। बेचारे हिरन और अन्य

मिंटू (चिंटू से)- जब मैं छोटा था तब कुतुबमीनार से गिर गया था।
चिंटू- फिर तू मर गया कि बच गया?
मिंटू- मुझे याद नहीं, क्योंकि तब मैं बहुत छोटा था।

एक दिन किट्टू को फांसी लगने वाली थी। जेलर ने पूछा, 'कोई आखिरी ख्वाहिश।'
किट्टू बोला- 'मुझे फांसी देते वक्त मेरे पैर ऊपर और सिर नीचे रखना।'

सुरेश (दिनेश से)- आज टीवी पर 30 फीट का सांप दिखाया जाएगा।
दिनेश- हां, पर मैं नहीं देख पाऊंगा।
सुरेश- क्यों?
दिनेश- मेरा टीवी तो 21 इंच का ही है।

चिंटू (गोलू से)- ये गांधी बापू हर नोट में हंसते क्यों रहते हैं?
गोलू- सिंपल है यार, रोएंगे तो नोट गीला नहीं हो जाएगा।

बनवारी ने सपना देखा कि किसी ने उसे मार दिया है। अगले ही दिन उसने अपना बैंक एकांउट बंद करवा दिया। क्योंकि बैंक का स्लोगन था, 'वी मेक योर ड्रीम्स कम ट्रू...'

हॉलीवुड के एक चित्र-निर्माता अपने स्टूडियो में बहुत शीघ्रता से आए, क्योंकि वहां एक विख्यात कहानीकार से मिलना था।
वह आकर कहानीकार के पास बैठ गए और कुछ देर बात करने के बाद उन्होंने सामने मेज पर रखी एक किताब उठाई। उनका ख्याल था कि वह कहानीकार की लिखी किताब उठा रहे हैं, पर वास्तव में वह किताब टेलीफोन डायरेक्टरी थी। कुछ देर तक चित्र-निर्माता किताब को गौर से देखते रहे। फिर वह बोले- 'कहानी बुरी नहीं है, पर इसमें पात्र अधिक हैं। कृपया कुछ पात्रों के नाम काट दीजिए।'

नायिका (नायक से)- मैं तुमसे तभी शादी करूंगी जब तुम कोई साहसिक काम करके दिखाओगे।
नायक (नायिका से)- तुमसे शादी करने से ज्यादा साहस का काम और क्या हो सकता है?

मालकिन (नौकरानी से)- क्यों महारानी जी, आज आने में इतनी देर क्यों लगा दी?
नौकरानी- मालकिन, मैं सीढ़ियों से गिर गई थी।
मालकिन- तो क्या उठने में इतनी देर लगती है।

अध्यापिका (छात्र से)- मोटर साइकिल के कितने टायर होते हैं?
छात्र- 6 टायर...
अध्यापिका- कैसे?
छात्र- 4 मोटर के 2 साइकिल के।

भिखारी- ऐ भाई एक रुपया दे दे, तीन दिन से भूखा हूं।
मनोज- तीन दिन से भूखा है तो एक रुपए का क्या करेगा?
भिखारी- वजन तोलूंगा, कितना घटा है!

पिताजी (पुत्र से)- इतने कम नंबर? दो थप्पड़ मारने चाहिए!
पुत्र- हां पापा, चलो मैंने उन मास्टर जी का घर देखा हुआ है!

बबलू (सिबलू से)- इंपोसिबल शब्द मेरी डिक्शनरी में नहीं है।
सिबलू- अरे यार, अब बताने से क्या फायदा। डिक्शनरी लेते समय चैक करना चाहिए था ना।

यात्री- मैं यहां सिगरेट पी सकता हूं?
स्टेशन मास्टर- नहीं, यहां सिगरेट पीना मना है।
यात्री- तो ये सिगरेट के टुकड़े यहां कैसे हैं?
स्टेशन मास्टर- उन लोगों ने फेंके हैं, जो पूछते नहीं है।

महेश, सुरेश और उनका एक मित्र बाइक से जा रहे थे, तभी ट्रैफिक पुलिसवाले ने उन्हें रोकने के लिए हाथ दिया।
संता- ओए पागल है क्या? पहले ही तीन बैठे हैं, तू कहां बैठेगा...

पत्नी (पति से)- मुझे 50 रुपए की जरूरत है!
पति (गुस्से से)- तुम्हें रुपए से ज्यादा अक्ल की जरूरत है!
पत्नी- आपसे वही चीज मांगी है, जो आपके पास है!

वीरू छत पर गुस्से में चिल्ला रहा था, 'बदमाशो, मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगा। तभी वहां बसंती आई और पूछा- 'क्यों चिल्ला रहे हो?'
वीरू- देखो ना, ये शोरूम वाले बड़े धोखेबाज निकले। मैंने उनसे दो टन का एसी खरीदा था, और घर आकर वजन देखा तो 13 किलो का निकला।

मेहमान खाना खाते हुए बोले-ये तुम्हारा कुत्ता मुझे बहुत देर से घूर रहा है?
चिंटू- अंकल आप जल्दी से खाना खा लो, वो अपनी प्लेट पहचान गया है।

मुश्किलों से मुकाबला

एक थका-मांदा शिल्पकार लंबी यात्रा के बाद किसी छायादार वृक्ष के नीचे विश्राम के लिये बैठ गया। अचानक उसे सामने एक पत्थर का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। उसने उस सुंदर पत्थर के टुकड़े को उठा लिया। सामने रखा, फिर औजारों के थैले से छेनी-हथौड़ी निकालकर उसे तराशने के लिए जैसे ही पहली चोट की, पत्थर जोर से चिल्ला उठा, 'उफ मुझे मत मारो।' दूसरी बार वह रोने लगा, 'मत मारो मुझे, मत मारो, मत मारो।' शिल्पकार ने उस पत्थर को छोड़ दिया।

अपनी पसंद का एक अन्य टुकड़ा उठाया और उसे हथौड़ी से तराशने लगा। वह टुकड़ा चुपचाप वार सहता गया और देखते ही देखते उसमें से एक एक देवी की मूर्ति उभर आई। मूर्ति वहीं पेड़ के नीचे रख वह अपनी राह पकड़ आगे चला गया। कुछ वर्षों बाद उस शिल्पकार को फिर से उसी पुराने रास्ते से गुजरना पड़ा, जहां पिछली बार विश्राम किया था। उस स्थान पर पहुंचा तो देखा कि वहां उस मूर्ति की पूजा-अर्चना हो रही है, जो उसने बनाई थी। भक्तों की पंक्तियां लगी हैं। जब उसके दर्शन का समय आया, तो पास आकर देखा कि उसकी बनाई मूर्ति का कितना आदर-सत्कार हो रहा है। जो पत्थर का पहला टुकड़ा उसने, उसके रोने-चिल्लाने पर फेंक दिया था। वह भी एक ओर पड़ा है। लोग उससे नारियल फोड़-फोड़ कर मूर्ति पर चढ़ा रहे हैं।

सीख : मुश्किलें हमें मजबूत बनाती हैं। इनसे हमें डट कर मुकाबला करना चाहिए।

सीख सुहानी

व्यर्थ का चिंतन

नईम नामक एक प्रसिद्ध हकीम थे। उनके नुस्खे दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। एक दिन एक युवक उनके पास आया और बोला, 'पेट दर्द ने मेरा जीना मुश्किल कर दिया है। मैंने अपने गांव के कई हकीमों को दिखाया, पर कोई मेरा मर्ज पकड़ नहीं पाया। कृपया मुझे बचाएं।' हकीम ने युवक के शरीर का मुआयना किया तो पाया कि उसके शरीर की अनेक नसें तनाव से ग्रस्त हैं। वे युवक से बोले, 'तुम्हें घर, रोजगार या परिवार की ऐसी कौन सी बात परेशान कर रही है, जिसके बारे में तुम अक्सर सोचते रहते हो?' युवक बोला, 'आपको कैसे पता लगा कि मैं किसी बात की फिक्र कर रहा हूं?' दरअसल पिछले महीने मेरा एक रिश्तेदार तपेदिक से मर गया। तब से मैं हर वक्त यही सोचता रहता हूं कि कहीं मुझे भी यह बीमारी न हो जाए।' उसकी बात पर नईम बोले, 'जिस मर्ज का दूर-दूर तक फिलहाल तुमसे कोई वास्ता ही नहीं है, तुम उसे सोचकर तनावग्रस्त होते रहोगे तो जरूर तुम्हें तपेदिक हो जाएगा। जीवन में अधिकतर लोग ऐसी चिंताओं में डूबे रहते हैं, जिनका उनसे कोई वास्ता नहीं होता। इसी चिंता में अनेक रोग उनके शरीर में लग जाते हैं। जीवन में दुख-सुख, बीमारी आदि चलती ही रहती है। उनका सामना करना चाहिए।'

'तुम्हें अगर सोचना ही है तो अच्छी-अच्छी बातें सोचो। जैसे, तुम्हें कुछ दिनों में अपना कारोबार बढ़ाना है या कोई और मकसद हासिल करना है।' युवक को बात समझ में आ गई और उसी क्षण से उसने बेवजह फिक्र करना छोड़ दिया।

सीख : अनावश्यक चिंतन कर चिंताएं न बढ़ाएं। खुश रहें-खुशहाल रहें।

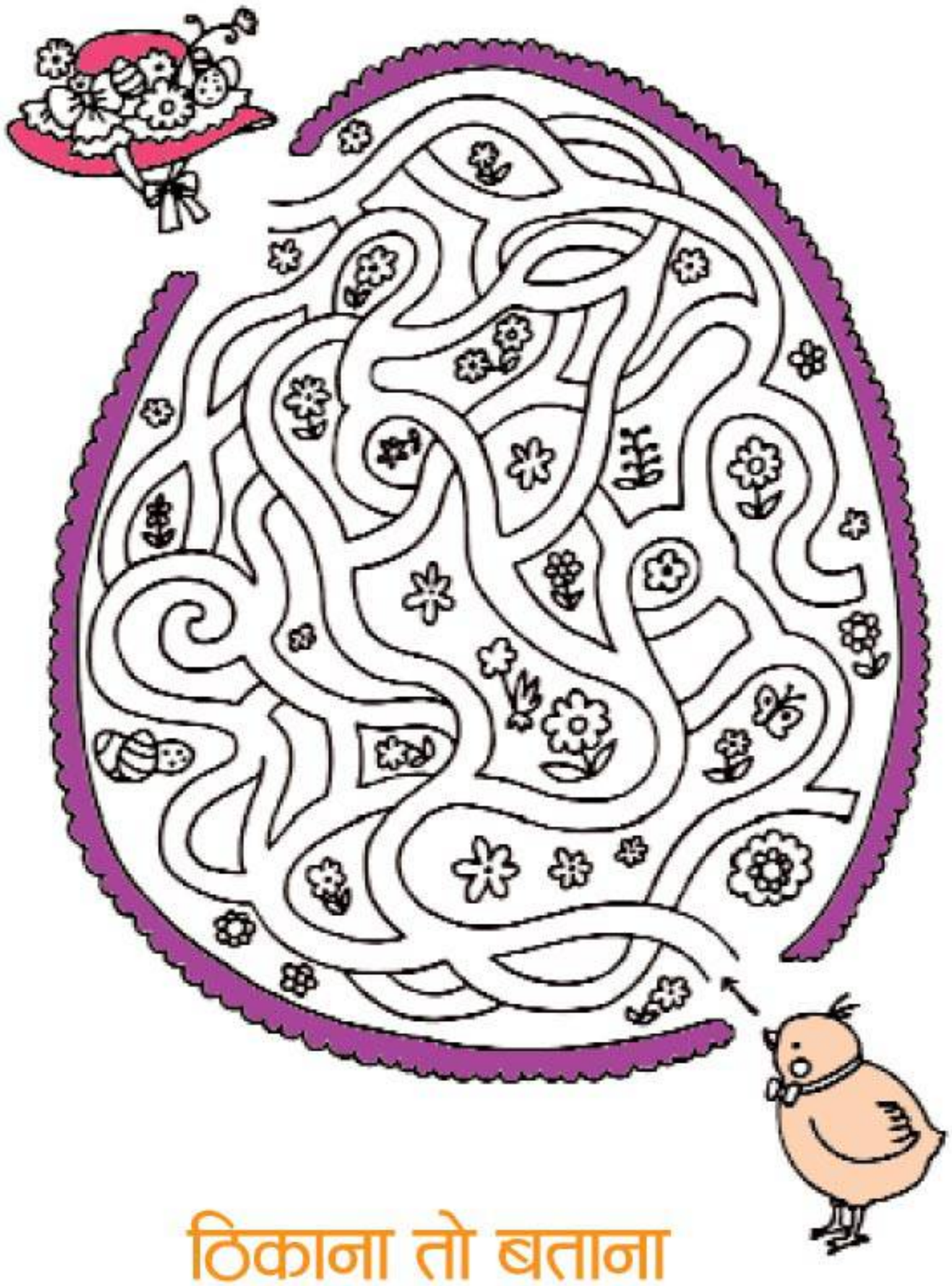

ठिकाना तो बताना

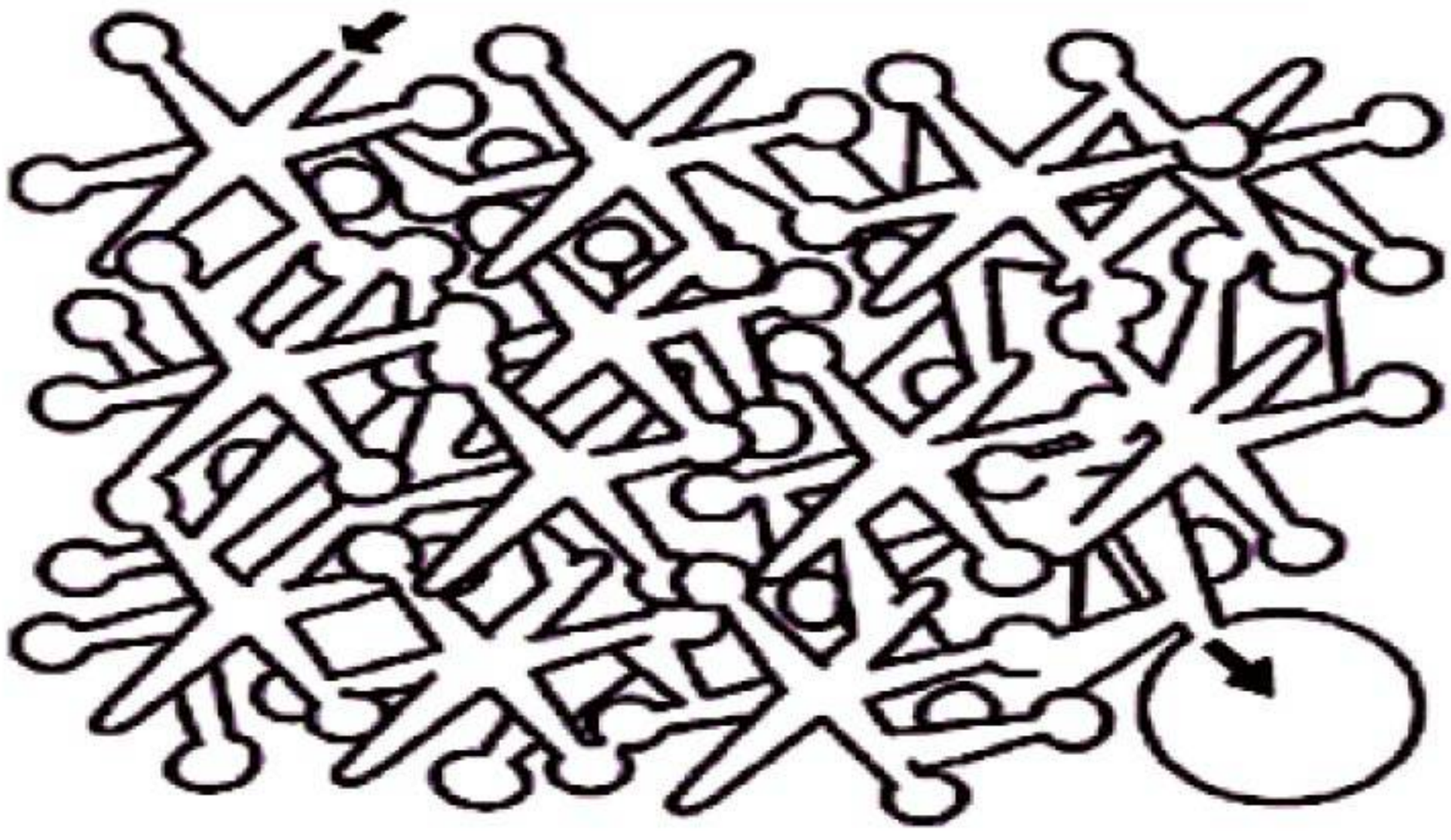

तिरुअनंतपुरम

सैर सपाटा

खूबसूरत राज्य केरल की राजधानी त्रिवेंद्रम, जिसे तिरुअनंतपुरम भी कहा जाता है, दक्षिण भारत का प्रमुख पर्यटन स्थल है। त्रिवेंद्रम में समुद्र के किनारे लंबे-लंबे नारियल के वृक्ष और सागर में उठती-गिरती लहरें, किले, महल, संग्रहालय, मंदिर पर्यटकों को खूब लुभाते हैं।

पद्मनाभस्वामी मंदिर : यह मंदिर भारत के सबसे प्रमुख वैष्णव मंदिरों में से एक है, और तिरुअनंतपुरम का ऐतिहासिक स्थल है। पूर्वी किले के अंदर स्थित इस मंदिर का परिसर बहुत विशाल है। इसका अहसास सात मंजिला गोपुरम देखकर हो जाता है। केरल और द्रविड़यिन वास्तुशिल्प में निर्मित यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। पदमा तीर्थम, पवित्र कुंड, कुलशेकर मंडप और नवरात्रि मंडप इस मंदिर को और भी आकर्षक बनाते हैं। इस मंदिर में पुरुष केवल सफेद धोती पहन कर ही आ सकते हैं।

तिरुअनंतपुरम वेधशाला : यह वेधशाला तिरुअनंतपुरम के संग्रहालय परिसर में स्थित है। महाराजा स्वाति तिरुल ने वर्ष 1837 में इसका निर्माण करवाया था। यह भारत की सबसे पुरानी वेधशालाओं में से एक है। यहां आप अंतरिक्ष से जुड़ी सारी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पहाड़ी के सामने एक खूबसूरत बगीचा है। यहां गुलाब के फूलों का बेहतरीन संग्रह है।

चिड़ियाघर : पी.एम.जी. जंशन के पास स्थित यह चिड़ियाघर भारत का दूसरा सबसे पुराना चिड़ियाघर है। 55 एकड़ में फैला यह जैविक उद्यान वनस्पति उद्यान का हिस्सा है। यहां देशी-विदेशी वनस्पति और जंतुओं का संग्रह है। यहां आने पर ऐसा लगता है जैसे कि शहर के बीचोंबीच एक जंगल बसा हो। रैप्टाइल हाउस में सांपों की अनेक प्रजातियां रखी गई हैं। इस चिड़ियाघर में नीलगिरी लंगूर, भारतीय गैंडा, एशियाई शेर और रॉयल बंगाल टाइगर भी दिख जाएंगे।

चाचा नेहरू बाल संग्रहालय : यह बच्चों के आकर्षण का केन्द्र है। इसकी स्थापना वर्ष 1980 में की गई थी। इस संग्रहालय में विभिन्न परिधानों में सजी दो हजार आकृतियां रखी गई हैं। यहां हेल्थ एजुकेशन डिस्प्ले, एक छोटा एवेरियम और मलयालम में प्रकाशित पहली बाल साहित्य की प्रति भी प्रदर्शित की गई है।

वाइजिनजाम- तिरुअनंतपुरम से 17 किलोमीटर दूर वाइजिनजाम मछुआरों का गांव है। यह आयुर्वेदिक चिकित्सा और बीच रिजॉर्ट के लिए प्रसिद्ध है। वाइजिनजाम का एक अन्य आकर्षण चट्टान को काट कर बनाई गई गुफा है। यहां विनंधरा दक्षिणमूर्ति का एक मंदिर है। इस मंदिर में 18 वीं शता□दी में चट्टानों को काटकर बनाई गई प्रतिमाएं रखी गई हैं। मंदिर के बाहर भगवान शिव और देवी पार्वती की अर्धनिर्मित प्रतिमा स्थापित है। वाइजिनजाम में मैरीन ए□वेरियम भी है। यहां रंगबिरंगी और आकर्षक मछलियां जैसे □लाउन फिश, सि□वरिल फिश, लायन फिश, बटर□लाई फिश, ट्रिगर फिश रखी गई हैं। इसके अलावा आप यहां सर्जिअन फिश और शार्क जैसी शिकारी मछलियां भी देख सकते हैं।

शंखमुखम बीच- यह बीच शहर से लगभग आठ किलोमीटर दूर है। इसके पास ही तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डा है। इंडोर मनोरंजन □लब, चाचा नेहरू ट्रैफिक ट्रैनिंग पार्क , मत्सय कन्यक और स्टार फिश के आकार का रेस्टोरेंट यहां के मु□य आकर्षण हैं। नाव चलाते सैंकड़ों मछुआरे और सूर्यास्त का नजारा यहां बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। मंदिरों में होने वाले उत्सवों के समय इस बीच पर भगवान की प्रतिमाओं को पवित्र स्नान कराया जाता है।

कोवलम बीच- तिरुवनंतपुरम से सोलह किलोमीटर दूर स्थित कोवलम बीच केरल का एक प्रमुख पर्यटक केन्द्र है। रेतीले तटों पर नारियल के पेड़ों और खूबसूरत लैगून से सजे ये बीच पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कोवलम बीच के पास तीन और तट भी हैं। जिनमें से दक्षिणतम छोर पर स्थित लाइट हाउस बीच सबसे अधिक प्रसिद्ध है। यह विश्व के सबसे अच्छे तटों में से एक है।

आट्टकाल देवी का मंदिर- आट्टकल पोंगल महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला एक प्रसिद्ध उत्सव है। यह उत्सव तिरुवनंतपुरम से दो किलोमीटर दूर देवी के प्राचीन मंदिर में मनाया जाता है। दस दिनों तक चलने वाले पोंगल उत्सव की शुरुआत मलयालम माह मकरम-कुंभम (फरवरी-मार्च) के भरानी दिवस (कार्तिक चंद्र) को होती है। पोंगल एक प्रकार का व्यंजन है। इसे गुड़, नारियल और केले के निश्चित मात्रा को मिलाकर बनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह देवी का पसंदीदा पकवान है। पोंगल के दौरान पुरुषों का मंदिर में प्रवेश वर्जित होता है। मु□य पुजारी देवी की तलवार हाथों में लेकर मंदिर प्रांगण में घूमता है और भ□तों पर पवित्र जल

कनक कुन्नु महल- नेपिअर संग्रहालय से 800 मीटर उ□र पूर्व में स्थित यह महल केरल सरकार से संबद्ध है। एक छोटी-सी पहाड़ी पर बने इस महल का निर्माण श्री मूलम तिरुनल राजा के शासन काल में हुआ था। इस महल की आंतरिक

सजावट के लिए खूबसूरत दीपदानों और शाही फर्नीचर का प्रयोग किया गया है। यहां स्थित निशागंधी ओपन एयर ओडिटोरियम और सूर्यकांति ओडिटोरियम में अनेक सांस्कृतिक स□मेलनों और कार्यकमों का आयोजन किया

नेपियर संग्रहालय- लकड़ी से बनी यह आकर्षक इमारत शहर के उ□र में □यूजियम रोड पर स्थित है। यह भारत के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है। इसका निर्माण वर्ष 1855 में हुआ था। मद्रास के गवर्नर लॉर्ड

चार्ल्स नेपियर के नाम पर इस संग्रहालय का नाम रखा गया है। यहां शिल्प शास्त्र के अनुसार आठवीं से 18 वीं शता□दी के दौरान कांसे से बनाई गई शिव, विष्णु, पार्वती और लक्ष्मी की प्रतिमाएं

OPTICAL

ILLUSIONS

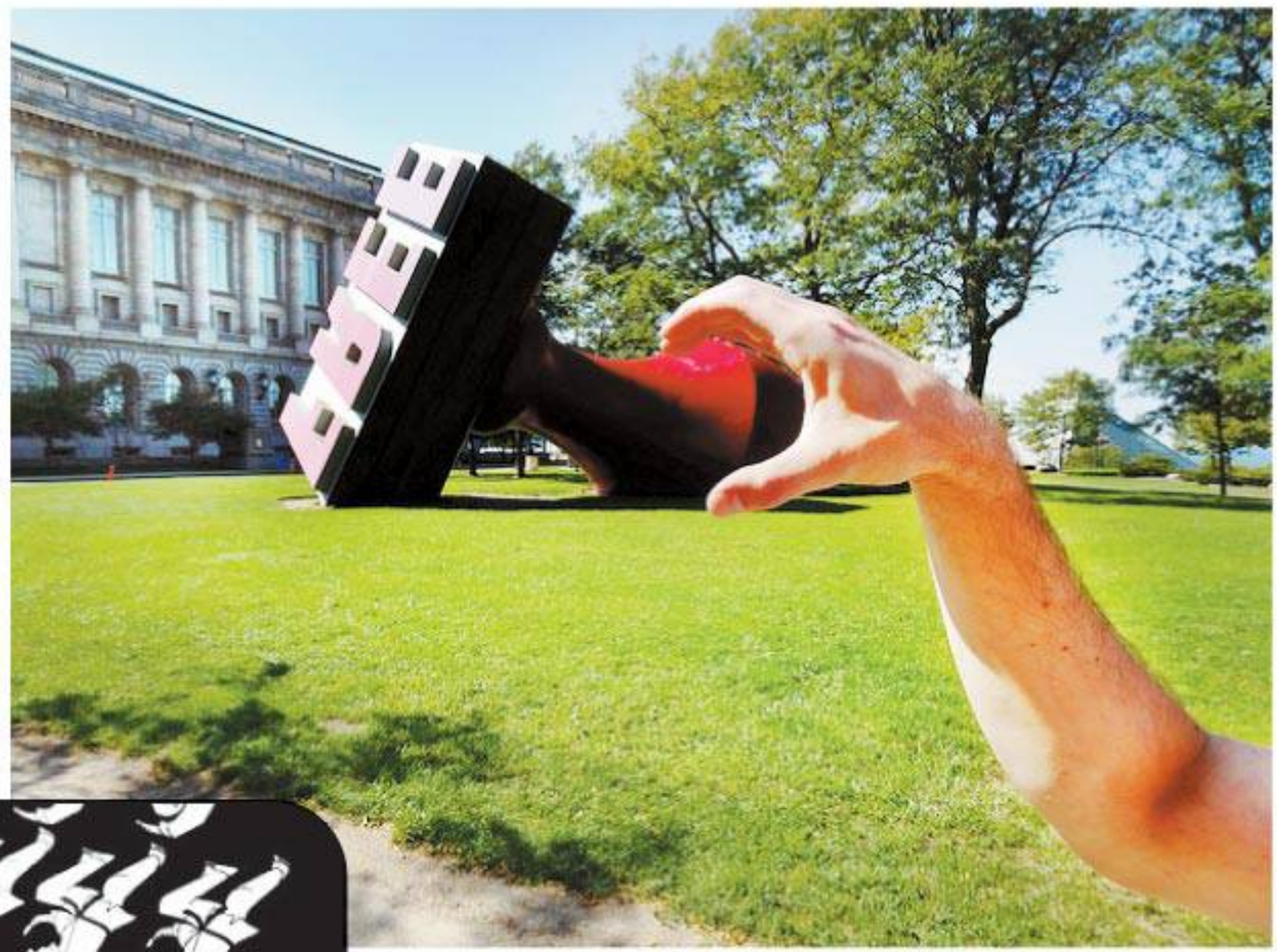

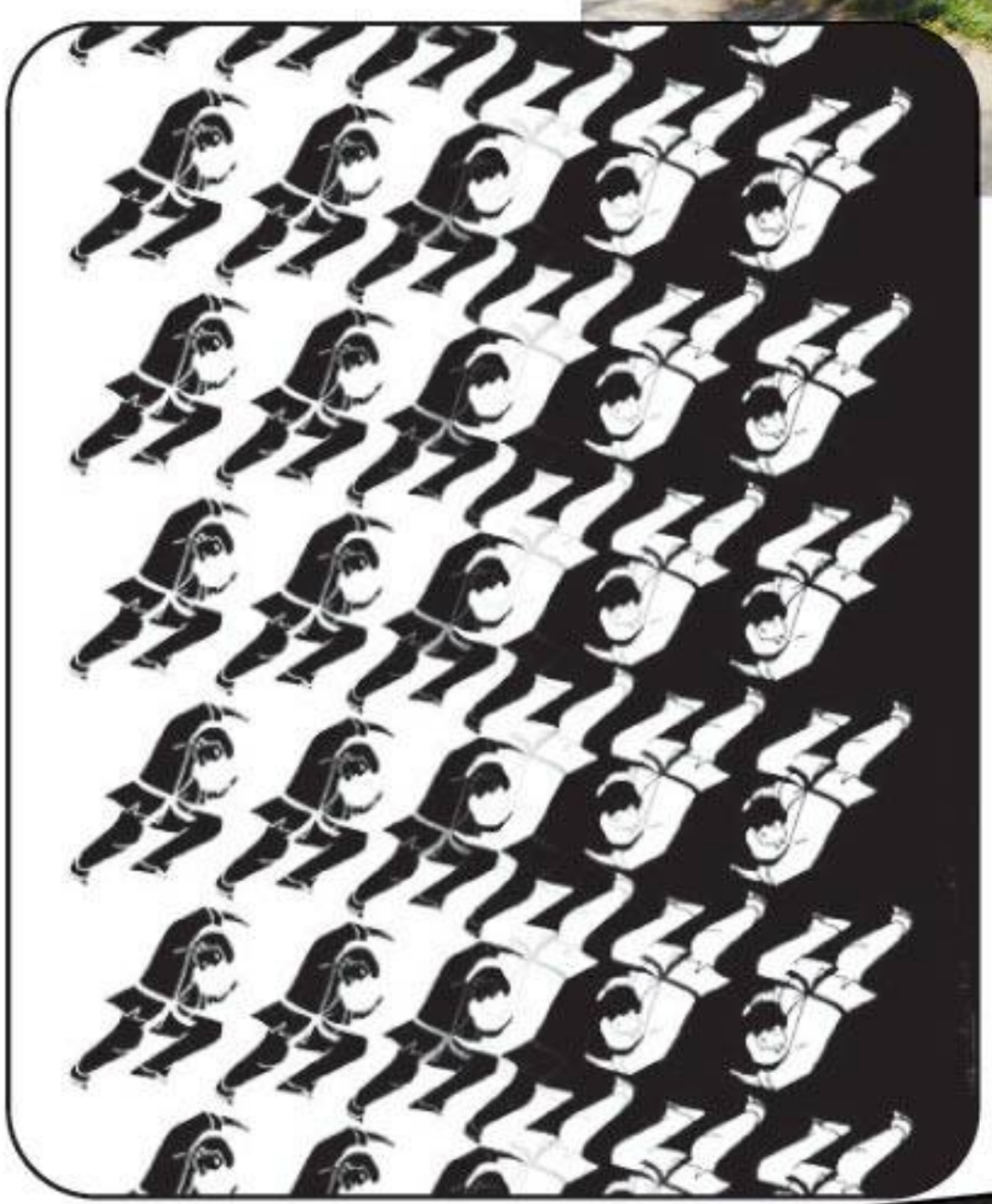

shake your head

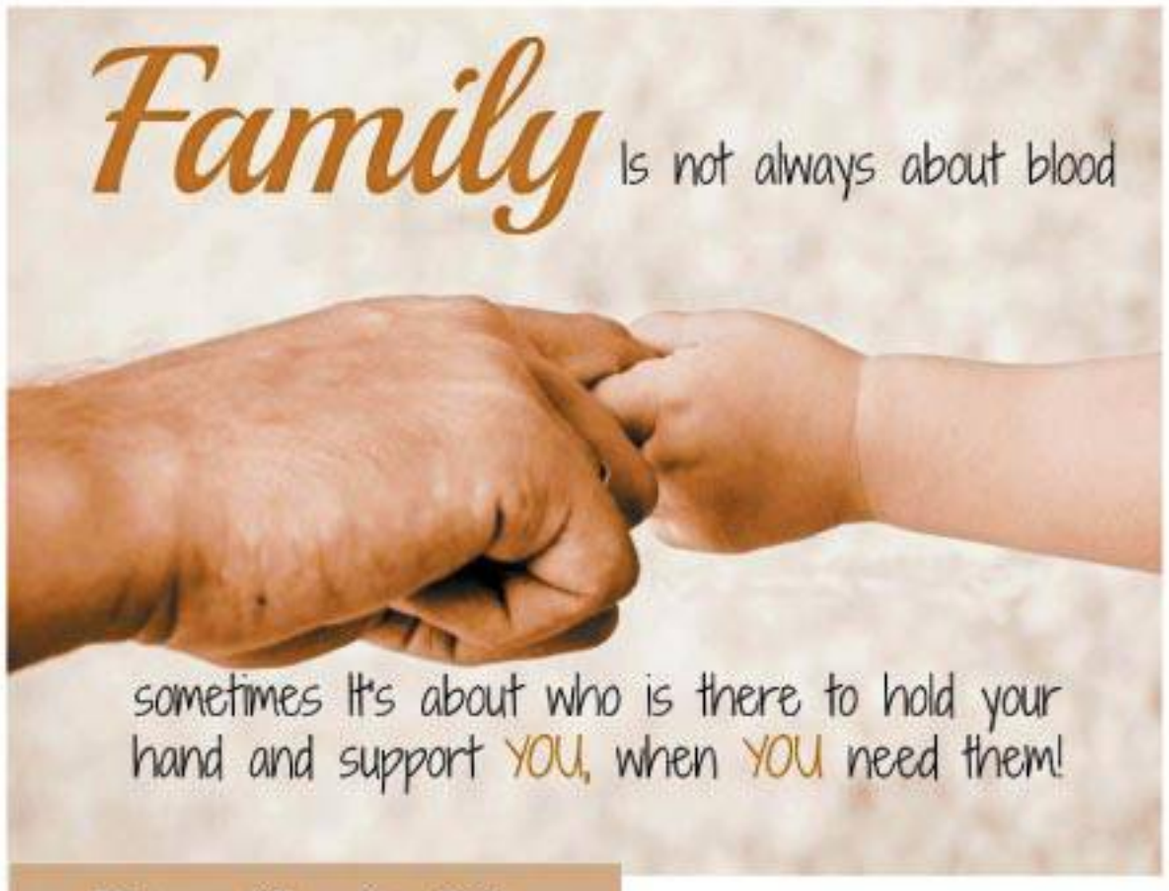

Family is like music, some high notes, some low notes, but always a beautiful song

Family Quotes

You don't choose YOUR FAMILY. They are God's gift to you, as you are to them.

No family is perfect.. we argue, we fight. We even stop talking to each other at times, but in the end, family is family..the love will always be there.

Today's Reality :

Big house but small family.
More Education but less Common sense.
Advanced medicine but poor health.
Touched Moon but Neighbours unknown.
High income but less peace of Mind.
High IQ but less Emotions.
Good knowledge but less Wisdom.
And finally
Lots of human beings but less Humanity.

Family like *branches* on a tree, we all *grow* in different *directions*, yet our *roots remain* as one

You don't need money to lead a rich life. Good friends and a loving family are worth their WEIGHT IN GOLD.

बच्चो, तुहें रोजाना अपने घर-स्कूल में अंग्रेजी बोलना चाहिए। इससे अंग्रेजी पर अच्छी पकड़ तो बनेगी ही, साथ ही तुहारी अंग्रेजी बोलने में होने वाली हिचकिचाहट भी दूर होगी और कॉन्फिडेंस भी बढ़ेगा। यहां तुहें रोजाना घर-बाहर बातचीत में काम में आने वाले वाय दिए जा रहे हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और अयास करें।

1. मैं ठिठुर रहा हूं।
I am shivering.
आइ एम शिवरिंग।

2. मैं नहीं भीगा।
I did not get drenched.
आइ डिड नॉट गैट ड्रैंच्ड।

3. भयंकर धूल है।
It's terribly dusty.
इट्स टैरिबली डस्टी।

4. मैं आशा करता हूं कि मौसम अच्छा रहेगा।
I hope the weather will remain pleasant.
आइ होप द वैदर विल रिमेन प्लेजेंट।

5. बाहर तूफान आ रहा है, मौसम बहुत खराब है।
A Tempest is raging outside, the weather has turned bad.
ए टैपेस्ट इज रेजिंग आउटसाइड, द वेदर हैज टर्न्ड बैड।

6. मूसलाधार वर्षा हो रही है।
It's raining heavely.
इट्स रेनिंग हैविली।

7. आज सुबह ओले पड़े थे।
There was a hail-strom this morning./ It hailed this morning.
देअर वाज ए हेल-स्टॉर्म दिस मार्निंग/ इट हेल्ड दिस मार्निंग।

8. गर्मी बहुत है, और हवा बिल्कुल बंद है।
It's sultry weather.
इट्स सलट्री वैदर।

9. उमस बहुत बढ़ गई है।
It's very humid.
इट्स वेरी ह्यूमिड।

10. हवा लगभग बंद है।
The wind is almost still.
द विंड इज आलमोस्ट स्टिल।

Antonyms

Attic- अटारी	Cellar- तहखाना
Attractive- आकर्षक	Repulsive- अनाकर्षक
Awake- जागना	Asleep- सोना
Backward- पीछे का	Forward- आगे का
Beautiful- सुंदर	Ugly- भद्दा

Word-Power

- Aristocrat- उच्चकुलीन — Arithmetic- अंक गणित
- Ascribe- कारण बताना — Aspiration- महवाकांक्षा
- Assemble- जोड़ना — Assent- स्वीकार, सहमति

English-Hindi Phrases

Dispose of- निपटाना।
Dispense with- अलग करना।
Devoid of- से रहित, के बिना।
For consideration- विचारार्थ।
For disposal- निपटान के लिए।
Discussed- बातचीत हो गई / चर्चा हुई।

Synonyms

Fast- तेज, जल्दी, तुरंत, शीघ्र
Quick, Rapid, Speedy, Fleet, Hasty, Snappy, Mercurial, Swiftly, Rapidly, Quickly, Expeditious.

IDIOM

Come into fashion- प्रचलन में आना- Become fashionable. She says that although bell-bottom pants have come into fashion again. She will never wear them.

आप को किसी चीज से ईर्ष्या-जलन है, और अगर आप केले खाएं तो यह कम हो सकती है। क्योंकि इन में एक प्राकृतिक अम्ल होता है, जो कि हमारे शरीर के अंदर जाकर इसके प्रभाव को कम करता है।

केला वास्तविकता में एक फल नहीं है, यह एक जड़ी-बूटी है।

जार्ज वॉशिंगटन जिन्दा दफनाए जाने से बहुत डरते थे। वे चाहते थे कि जब वह मर जाए तो उसके तीन दिन बाद तक उन्हें न दफनाया जाए, ताकि यह पूरी तरह से सुनिश्चित हो जाए कि वह मर गए हैं।

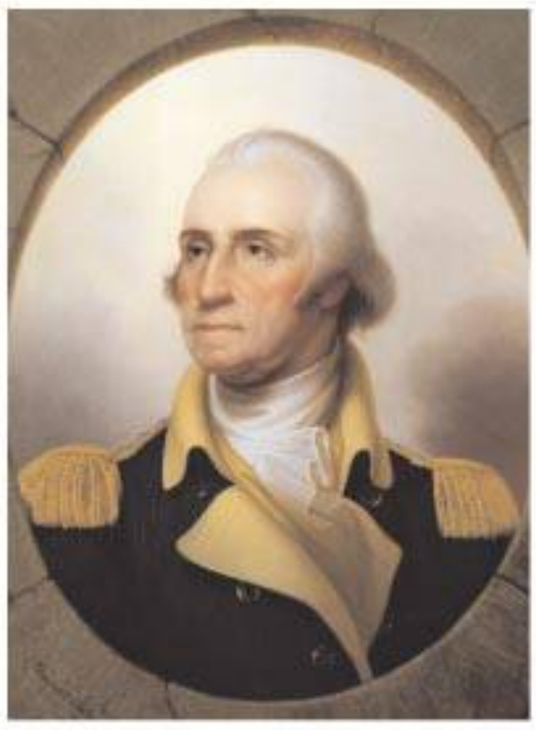

अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष यानों में मौजूद रहते समय अपने स्पेस सूट्स में डाइपर्स पहनते हैं।

एक फला-फूला पिस्सु 10 साल तक बिना आहार के रह सकता है।

गोभी में भी तरबूज के जितना ही पानी होता है। तरबूज में 92 प्रतिशत, जबकि गोभी और गाजर में क्रमशः 90 प्रतिशत और 87 प्रतिशत होता है।

ऊंट रेगिस्तान में भी बिना पानी पीये 15 दिनों तक रह सकता है। इसके शरीर की संरचना इस प्रकार है कि यह बहुत ही कम पानी का उपयोग करता है, और दूसरा इसे पेशाब बहुत कम आता है।

दुनिया में कॉफी की सुगन्ध सबसे ज्यादा जानी-पहचानी है।

मनुष्य की आंखों का आकार जन्म से लेकर बड़े होने तक एक जैसा ही रहता है, परंतु मनुष्य के कान और नाक उम्र के अनुसार बढ़ते हैं।

विश्वभर में तोते की 328 प्रजातियां पायी जाती हैं।

तोतों के सिर बड़े, जबकि गर्दन छोटी होती हैं।

प्रेसीडेंट मैकेनली के पालतू तोते का नाम वॉशिंगटन था।

चॉकलेट्स तोते के लिए जहर समान होती हैं।

ज्यादातर मछलियों की तरह सूर्यमछली के पूंछ नहीं होती। एक मादा सूर्यमछली एक साल में तीस करोड़ अंडे दे सकती है। प्रत्येक अंडे का आकार महज एक बिंदु के जितना होता है।

जिन मछलियों के पंख पतले और पूंछ कटी-फटी हो तो वह बहुत तेज गति से बड़ी से बड़ी दूरी को भी कम समय में तय कर सकती है।

तथ्य निराले

हर हाथी की गर्जना भी हम मनुष्यों की आवाज की तरह भिन्न होती है।

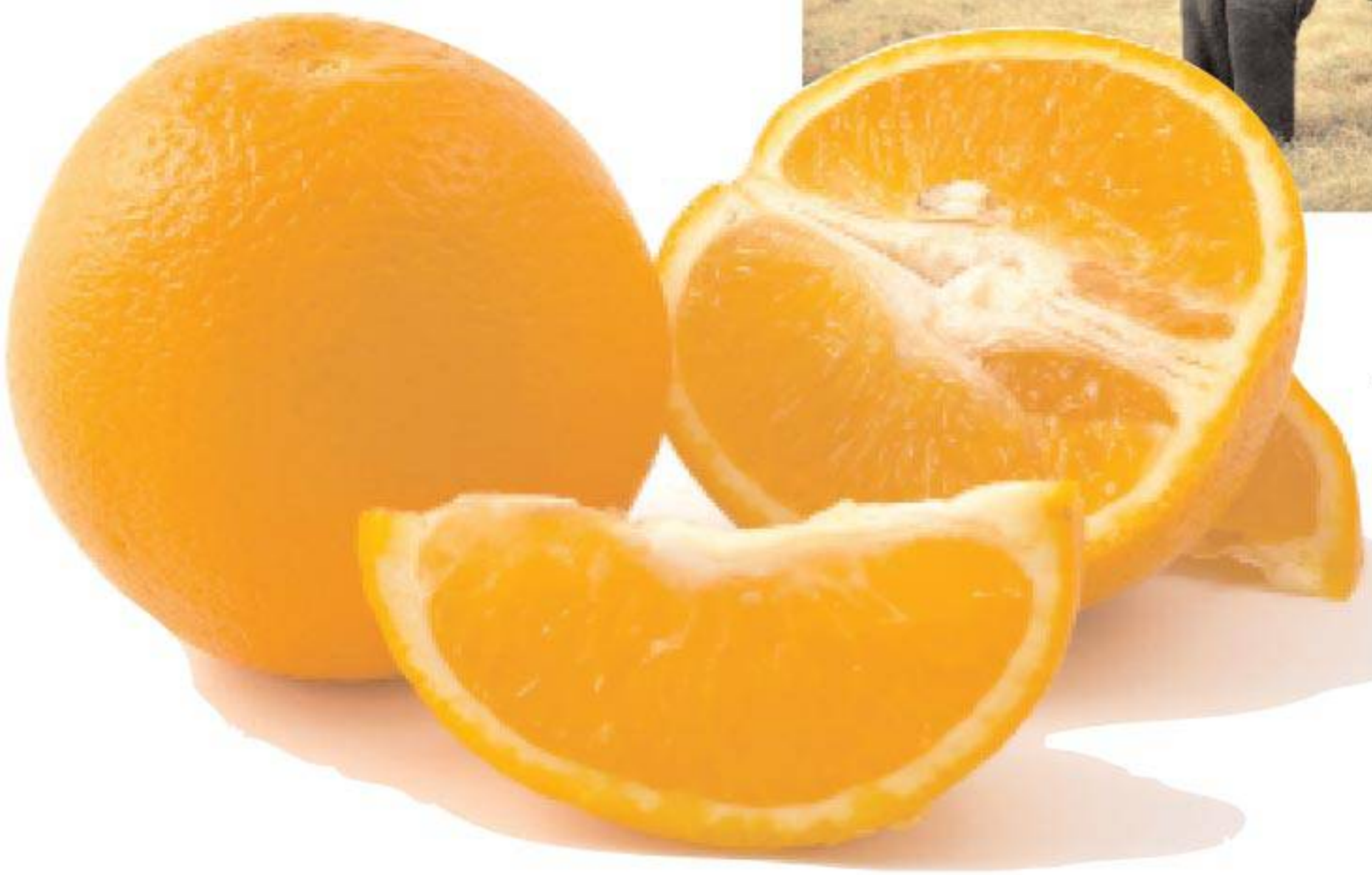

संतरे में ऐसे एंटीऑक्सीडेंट होते हैं, जो कि हमारी त्वचा को बाहरी हानिकारक कारकों से लड़ने में मदद करते हैं।

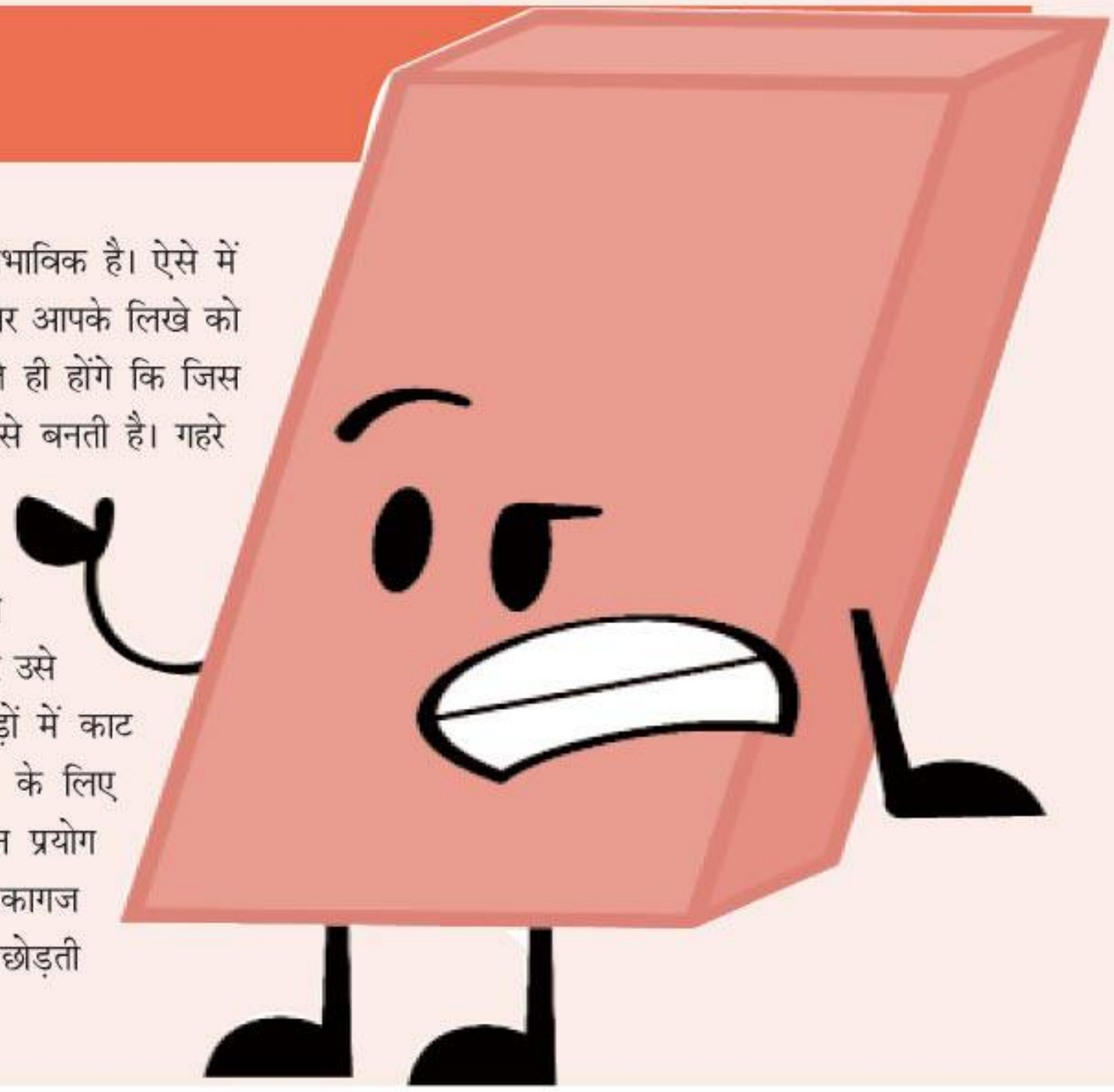

बच्चे हैं तो गलत लिखना स्वाभाविक है। ऐसे में इरेजर ही गलती को मिटाता है। इरेजर आपके लिखे को कैसे मिटाता है? आप ये तो जानते ही होंगे कि जिस पेंसिल से आप लिखते हो वह कैसे बनती है। गहरे कार्बन ग्रेफाइट को मिट्टी के साथ मिलाकर उससे लैड बनाते हैं।

इस लैड को लकड़ी के एक लंबे होल्डर में फिट किया जाता है। फिर उसे आपकी पेंसिल के साइज के टुकड़ों में काट दिया जाता है। रंगीन पेंसिल बनाने के लिए ग्रेफाइट के स्थान पर रंगीन सामान प्रयोग किया जाता है। आप जब पेंसिल से कागज पर लिखते हो तो वह कार्बन के कण छोड़ती हुई लिखती जाती है।

क्या है पिन कोड

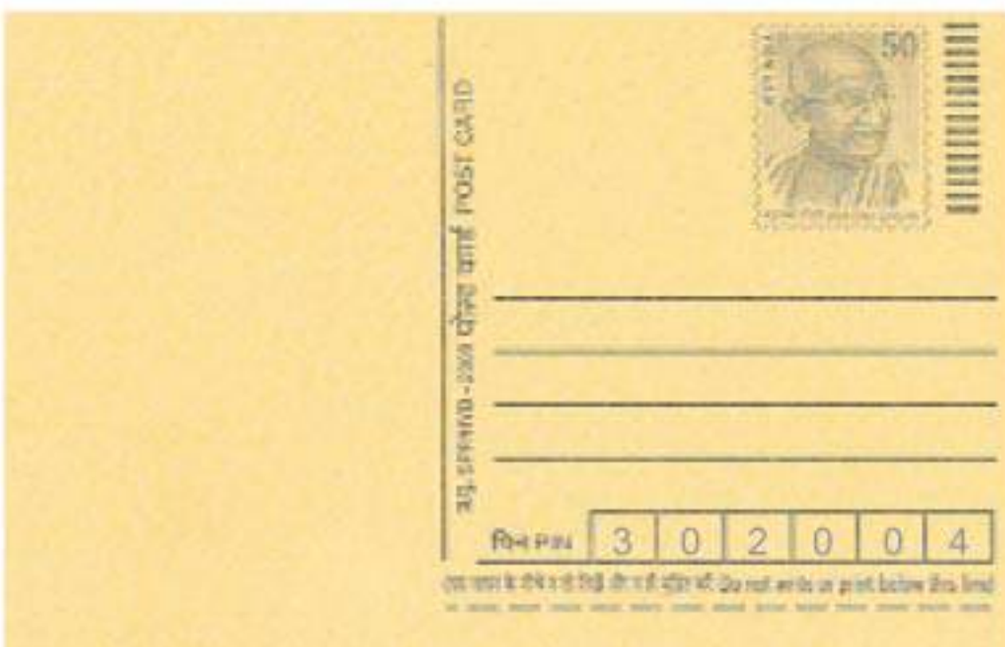

डाक से भेजे जाने वाले लिफाफे, अंतर्देशीय अथवा पोस्टकार्ड आदि में पते के स्थान पर एक छोटा आयताकार बॉ□स बना होता है। यह बॉ□स छह हिस्सों में बंटा होता है। इसमें अंक भरे जाते हैं। डाक विभाग के लिए ये छह नंबर बेहद अहम होते हैं। इन्हें पिन कोड कहा जाता है। जानें पिन कोड □या होता है?

पिन कोड, पोस्टल इंडे□स नंबर (पिन) का संक्षिप्त नाम है। यह छह अंकों का विशेष कोड है, जो भारत में डाक वितरण करने वाले सभी डाकघरों को आवंटित किया जाता है। एक कोड केवल एक ही डाकघर से संबंधित होता है। अगर पत्र या किसी डाक में पते के साथ पिन कोड लिखा होता है, तो उसका सही गंतव्य तक जल्दी पहुंचना सुनिश्चित हो जाता है। छह अंकों के पिन कोड में पहला अंक एक खास क्षेत्र या राज्य को दर्शाता है। दूसरा एवं तीसरा अंक मिलकर उस क्षेत्र को दर्शाते हैं, जहां वितरण करने वाला डाकघर स्थित है। अगले तीन अंक उस विशेष डाकघर को दर्शाते हैं, जहां पत्र या डाक का वितरण होना है। संक्षेप में पहले तीन अंक मिलकर उस छंटाई करने वाले या राजस्व जिले को दर्शाते हैं, जहां डाक भेजा जाना है। अंतिम तीन अंक उस वास्तविक डाकघर से संबंध रखते हैं, जहां डाक को अंतिम रूप से भेजा जाना है।

पिन कोड से पहले वितरण क्षेत्र प्रणाली थी। इसके

कार्बन के ये कण लिखे हुए अक्षरों में छिपे होते हैं। यह भी कह सकते हैं कि अक्षर कार्बन के कणों से ही बने होते हैं।

इरेजर से रगड़ने पर कार्बन के कण इरेजर की नरम और मुलायम सतह से चिपक जाते हैं। फिर वे इरेजर के कणों के साथ मिल कर कागज पर आ जाते हैं। इरेजर से मिटाने के बाद इन्हीं कणों को आपको कागज पर हाथ फेर कर हटाना पड़ता है। इस तरह पेंसिल का लिखा मिट जाता है। बच्चो, पेंसिल का लिखा तो साधारण इरेजर से मिट जाता है, लेकिन स्याही से लिखा इससे नहीं मिटता। पेन से लिखने पर कागज स्याही को चूस लेता है। इसलिए इसे मिटाने के लिए रेत वाले इंक-इरेजर का प्रयोग किया जाता है।

पहले इसे मुंबई, कोलकाता, दिल्ली और चेन्नई जैसे बड़े नगरों में लागू किया गया था। एक अप्रेल, 1774 को जब डाक की सुविधाएं जनता को उपल□ध कराई गईं, उस समय मात्र तीन ही डाक सर्कल थे, बंगाल, बंबई और मद्रास। भारत में पिन कोड सिस्टम है, तो अमेरिका में जिप यानी जैड आईपी सिस्टम है। उसमें मूलतः पांच अंक होते हैं, जिसे 1980 में शुरू किया गया। यूनाइटेड किंगडम में डाक कोड प्रणाली को पोस्ट कोड कहा जाता है। उसमें अंकों और श□दों दोनों का प्रयोग होता है। भारत में 15 अगस्त, 1972 को वर्तमान पिन कोड सिस्टम की शुरुआत हुई। इस समय देश में 9 पिन कोड रीजन है। इससे पहले रीजनल सिस्टम लागू था। जिसे 1946 में शुरू किया गया। इसे वितरण क्षेत्र सं□या प्रणाली कहा जाता था।

सीरिया

प्रथम विश्वयुद्ध में इंग्लैण्ड ने सीरिया पर आक्रमण किया। वर्ष 1920 में यह फ्रांस के अधीन हो गया। सन् 1946 में सीरिया को स्वतंत्रता मिली। वर्ष 1958 में सीरिया ने मिस्र एवं यमन के साथ मिलकर 'संयु□त अरब रिपा□लिक' का गठन किया, लेकिन सन् 1961 में वह इस संघ से अलग हो गया। वर्ष 1990-91 में इराक के कुवैत पर आक्रमण के विरोध में इसने संयु□त राष्ट्र सेना का समर्थन किया।

आधिकारिक नाम-ज□हुरिया-अल-अरबिया-अस-सुरिया।

राजधानी- दमिश्क। **मुद्रा**-सीरियन पौण्ड।

मानक समय-जी एम टी से 2 घंटे आगे।

भाषा- अरबी (आधिकारिक) कुर्दिश, आर्मेनियाई।

कुल जनसं□या-1,84,48,752

क्षेत्रफल-1,85,180 वर्ग किलोमीटर।

स्थिति-मध्य पूर्व एशिया में लेबनान व तुर्की के मध्य भूमध्य सागर के तट पर स्थित है।

जलवायु-भूमध्य सागरीय। पूर्वी भाग मरुस्थलीय है। तटीय क्षेत्र संकुचित है। **प्रमुख नदी**-अल फरात। **सर्वोच्च शिखर**-जबल अश शैक-2,814 मीटर।

प्रमुख बड़े शहर-दमिश्क, अलेप्पा, हो□स।

निर्यात- कच्चा तेल, पेट्रोलियम उत्पाद, फाइबर, मांस।

आयात- मशीनरी, परिवहन उपकरण, धात्विक उत्पाद।

प्रमुख उद्योग- वस्त्रोद्योग, इंजन, विद्युत उपकरण।

प्रमुख फसलें- गेहूं, म□का, कपास, मसूर, जैतून, चुकंदर, आलू, टमाटर। **प्रमुख खनिज**- जिप्सम, सीसा, फॉस्फेट, लवण, क्रोम, निकल।

शासन प्रणाली-गणतंत्रात्मक। **संसद**- मजलिस-अल-शाब।

राष्ट्रीय ध्वज- सफेद, काली व लाल रंग की पट्टियों पर दो हरे रंग के सितारे अंकित हैं।

स्वतंत्रता दिवस-17 अप्रेल, 1946

प्रमुख धर्म- मुस्लिम।

प्रमुख हवाई अड्डा- दमिश्क अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा।

प्रमुख बंदरगाह- लटाकिया।

इंटरनेट कोड-.sy

कमाल के बाल

न्यूयॉर्क की आशा के बाल 55 फीट 7 इंच लंबे हैं। लेकिन आशा के बाल साधारण बाल नहीं हैं। आशा ने अपने बालों को बढ़ाने के साथ ही उसमें कंघी करना भी छोड़ दिया। आज उनके बाल आम बाल नहीं 55 फीट 7 इंच लंबे बालों की लटें हैं। इसके लिए आशा का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज हो चुका है। आशा मंडेला को बाल साफ करने में एक बार में छह शैंपू के बॉटल लग जाते हैं। बाल सूखने में 2 दिन लगते हैं। इनके बालों का वजन 17 किलोग्राम है, जिसे वह सिर पर हमेशा ढोती है। डॉ□टर कहते हैं कि उसके बालों के वजन के कारण उसे लकवा मार सकता है, और वह अपाहिज हो सकती है। 25 सालों से उसने बाल नहीं कटाए, न कंघी की है। आज भी अपने बाल

पूरी दुनिया नाप डाली

पचपन साल के काशी समादार ने सबसे कम समय-छह साल, दस महीने और सात दिन में दुनिया के 194 देशों की सैर करके, सबसे कम समय में दुनिया की सैर करने का नया विश्व रेकॉर्ड बनाया है। इसके लिए काशी का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में भी दर्ज कर लिया गया है। काशी ने अपना यह सफर जुलाई 2002 में शुरू किया था। उनका पहला पड़ाव हॉलैंड था और आखिरी पड़ाव कोसोवो था। दुबई में रह रहे बिजनेसमैन काशी ने अपने जीवन की लगभग सारी जमा-पूंजी खर्च कर डाली। इस टूर पर उनके करीब ढाई करोड़ रुपए खर्च हो गए। कोलकाता में जन्मे काशी का इस सफर में उनकी पत्नी बरनाली ने पूरा साथ दिया और 70 देशों में वह भी इनके साथ रहीं। काशी को ऑस्ट्रेलिया सहित कई देशों की नागरिकता का ऑफर भी मिला। पर उन्होंने सबको ठुकरा दिया। उनका कहना है, 'मैं यह साबित करना चाहता था कि भारतीय पासपोर्ट पर भी दुनिया की सैर की जा सकती है। साथ ही यह भी कि भारतीय भी कुछ भी कर सकते हैं।' कई देशों, जैसे-सोमालिया, अफगानिस्तान, सुरीनाम आदि में जान भी जाते-जाते बची। लेकिन लगभग हर जगह अच्छे लोग ही रहते हैं, इसलिए कोई खास समस्या नहीं हुई। कुछ जगहों पर कड़े कानूनों के कारण वीजा आदि मिलने और टिकट आदि मिलने में देर हुई। नारू में तो □लाइट ही आठ बार कैंसल हुई जिसकी वजह से उन्हें वहां बिना किसी वजह के डेढ़ महीने

मैथ्स में मास्टर माइंड

लंदन के यी फेन में दस साल की उम्र में ही बड़े-बड़े मैथेमैटिशियन्स को मात करने की काबिलियत है। अपने अद्भुत और विलक्षण बच्चे के कारण उसके माता-पिता फूले नहीं समा रहे हैं। यूई फेन की मैथ्स की काबिलियत के कारण स्कूल ने उसके लिए यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर को मैथ्स की ट्यूशन के लिए बुलाया है। यूई के पिता मिजी फेन का कहना है कि यूई जब तीन साल का था, उस व□त वह फ्रै□शन के सवाल हल कर लिया करता था। यूई की मां आईहा का कहना है कि उनके बेटा काफी जिज्ञासु है, और उसमें हर व□त सीखने की

बच्चों से अगाध स्नेह रखने वाले पंडित जी की संक्षिप्त आत्मकथा की पहली चित्रात्मक कथा हमने पिछले अंक में दी थी। सोलह पृष्ठों का अंतिम व समापन भाग इस बार दिया जा रहा है। आप चाहें तो दोनों अंकों के इन मध्यपृष्ठों को निकालकर चाचा नेहरू पर एक पूरी चित्रकथा तैयार कर सकते हैं।

चाचा नेहरू

(संक्षिप्त आत्मकथा)

समापन भाग

कथा: कुमार मोहनचलम **आर्ट:** अजय

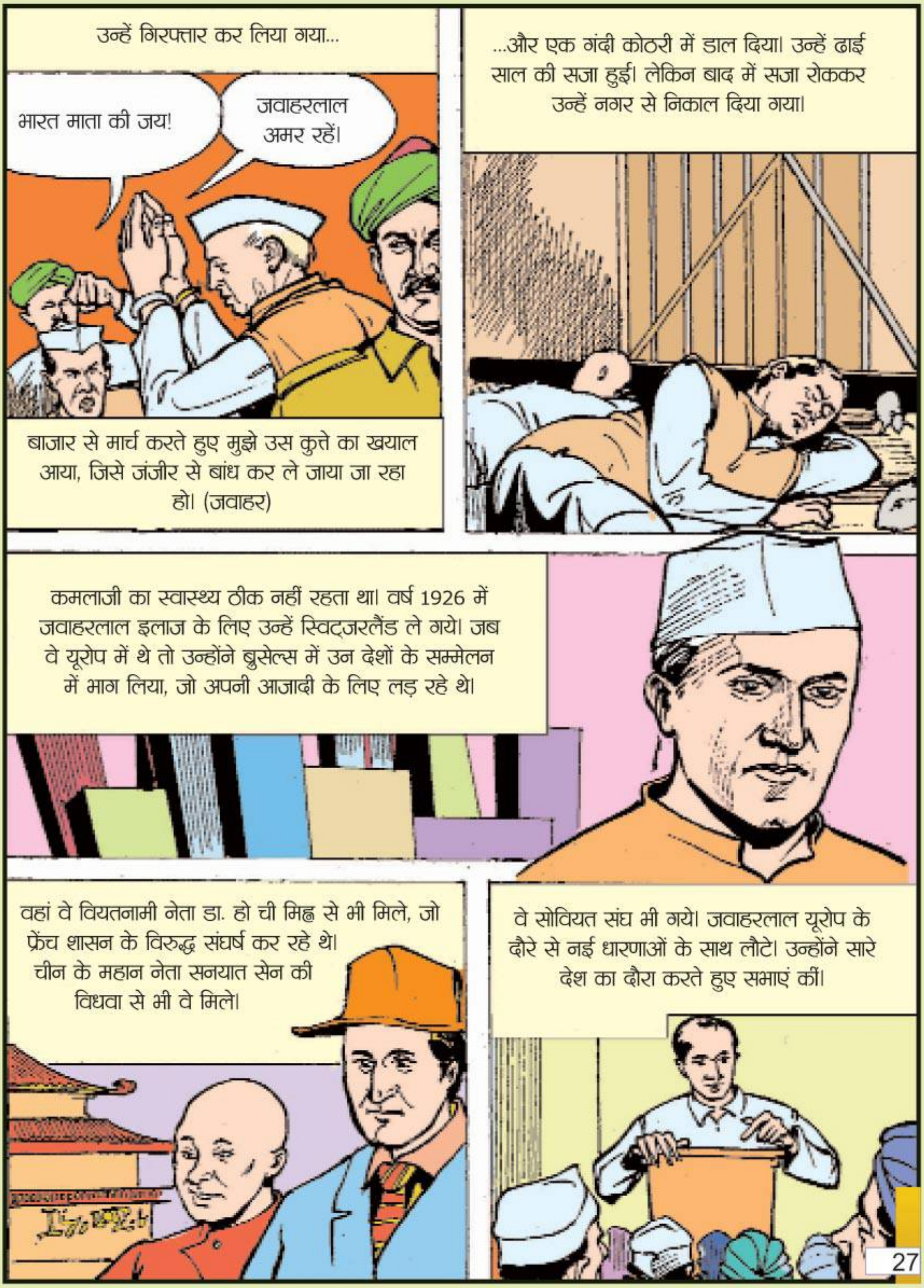

वर्ष 1928 में साइमन कमीशन भारत आया। कमीशन जहां भी गया, काले झंडे हाथों में लिये प्रदर्शनकारियों ने उसका स्वागत किया। लखनऊ में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व किया।

प्रदर्शकारियों पर पुलिस वालों ने खूब लाठियां बरसाईं, जवाहरलाल को बहुत चोटें आईं।

जवाहरलाल को गांधीजी का एक अत्यन्त मर्मस्पर्शी पत्र मिला।

मेरे प्रिय जवाहर,

बहुत-बहुत प्यार। तुमने बहुत हिम्मत दिखाई। तुम्हें और भी साहसिक कार्य करने हैं। भगवान तुम्हें लंबी उम्र दे और भारत को आजाद कराने का माध्यम तुम्हें बनाए।

तुम्हारा बापू।

वर्ष 1929 में कांग्रेस का अधिवेशन लाहौर में होना था। गांधीजी जवाहरलाल को उसका अध्यक्ष बनाना चाहते थे। वे निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये।

वर्ष 1928 में मोतीलाल कांग्रेस के अध्यक्ष थे और अब पुत्र ने पिता की जगह ले ली।

जवाहरलाल सफेद घोड़े पर सवार होकर कांग्रेस के अधिवेशन में पहुंचे। मोतीलाल और स्वरूपरानी ने एक दुकान की बालकनी से यह दृश्य देखा। उन्होंने अपने पुत्र पर फूल बरसाये।

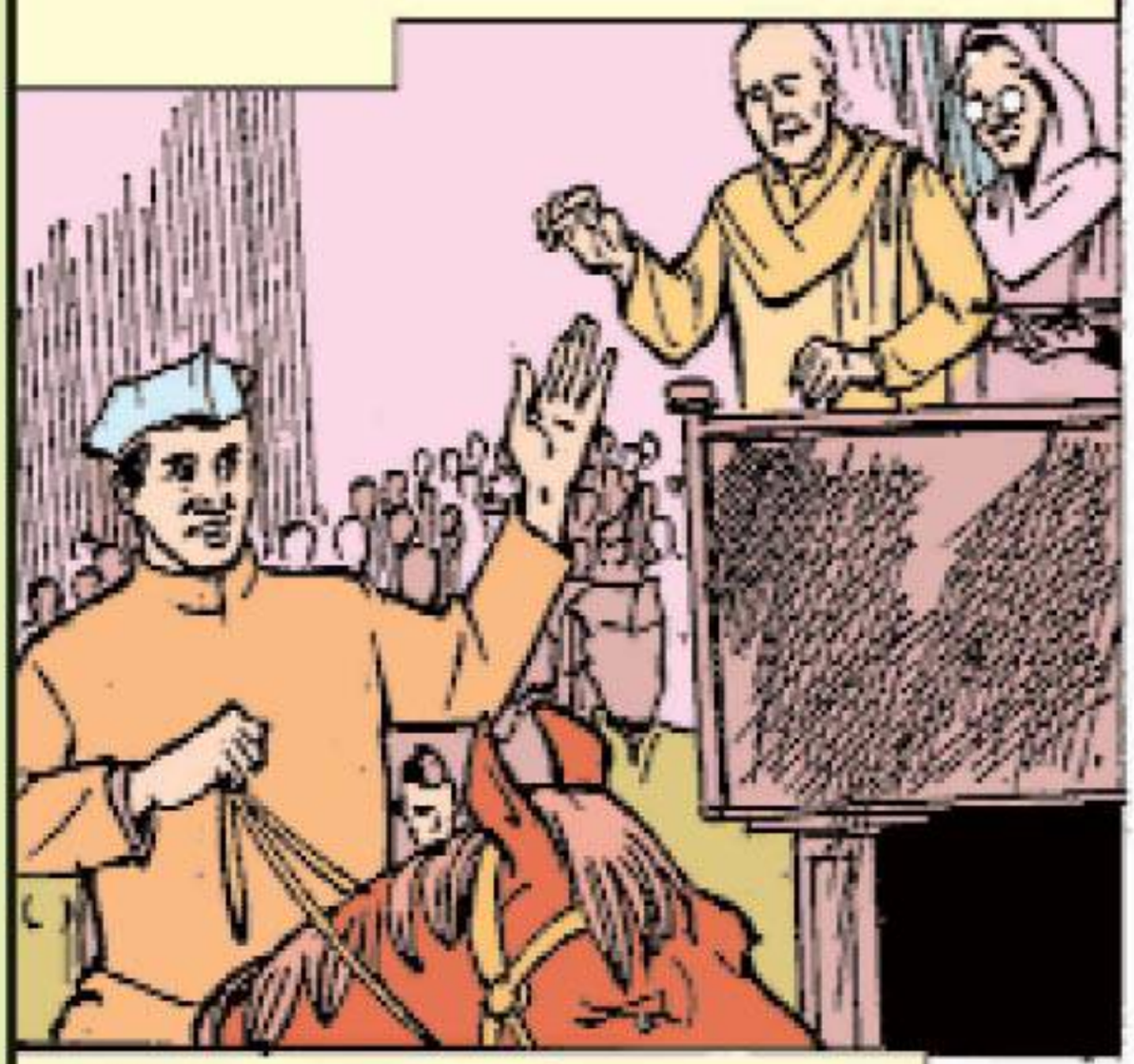

31 दिसंबर 1929 को ठीक रात के 12 बजे जवाहरलाल ने कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में आजादी का प्रस्ताव पढ़ा।

26 जनवरी, 1930 प्रथम स्वतंत्रता दिवस निर्धारित किया गया। उस दिन देशभर के लाखों लोगों ने आजादी की शपथ ली।

वर्ष 1947 तक 26 जनवरी को हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। उस दिन आजाद भारत का संविधान उद्घाटित किया गया। अब 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

गांधीजी को लगा कि अब संघर्ष तेज करने का समय आ गया है। उन्होंने घोषणा की...

आंदोलन को नमक सत्याग्रह नाम दिया गया। 12 मार्च, 1930 को वे 78 स्वयंसेवकों के साथ साबरमती आश्रम से 200 मील दूर नदी...

...किनारे बसे गांव दांडी की ओर पैदल चल दिये।

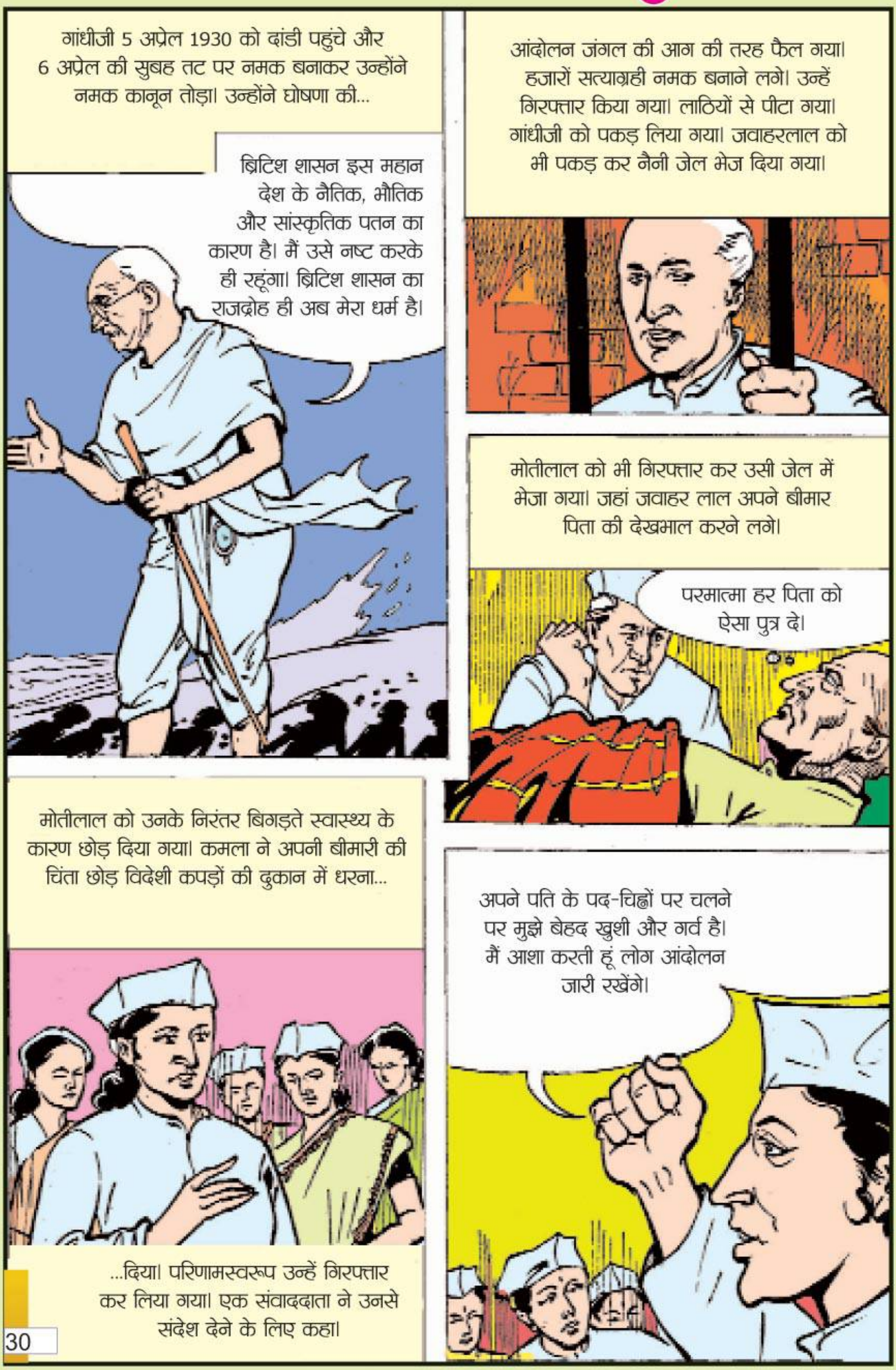
गांधीजी 5 अप्रेल 1930 को दांडी पहुंचे और 6 अप्रेल की सुबह तट पर नमक बनाकर उन्होंने नमक कानून तोड़ा। उन्होंने घोषणा की...
ब्रिटिश शासन इस महान देश के नैतिक, भौतिक और सांस्कृतिक पतन का कारण है। मैं उसे नष्ट करके ही रहूंगा। ब्रिटिश शासन का राजद्रोह ही अब मेरा धर्म है।
आंदोलन जंगल की आग की तरह फैल गया। हजारों सत्याग्रही नमक बनाने लगे। उन्हें गिरफ्तार किया गया। लाठियों से पीटा गया। गांधीजी को पकड़ लिया गया। जवाहरलाल को भी पकड़ कर नैनी जेल भेज दिया गया।
मोतीलाल को भी गिरफ्तार कर उसी जेल में भेजा गया। जहां जवाहर लाल अपने बीमार पिता की देखभाल करने लगे।
परमात्मा हर पिता को ऐसा पुत्र दे।
मोतीलाल को उनके निरंतर बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण छोड़ दिया गया। कमला ने अपनी बीमारी की चिंता छोड़ विदेशी कपड़ों की दुकान में धरना...
...दिया। परिणामस्वरूप उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। एक संवाददाता ने उनसे संदेश देने के लिए कहा।
अपने पति के पद-चिह्नों पर चलने पर मुझे बेहद खुशी और गर्व है। मैं आशा करती हूं लोग आंदोलन जारी रखेंगे।

12 साल की इंदिरा भी पीछे नहीं रही। उसने बच्चों की सेना का गठन कर उसे वानरसेना नाम दिया।

मोतीलाल की हालत गंभीर हो गई। जेल से छूटने पर गांधीजी और जवाहरलाल उनको देखने गये।

मोतीलाल 6 फरवरी 1931 को चल बसे। उन्होंने देश को बहुत कुछ दिया। उन्होंने देश को जवाहर लाल जैसा रत्न भी दिया।

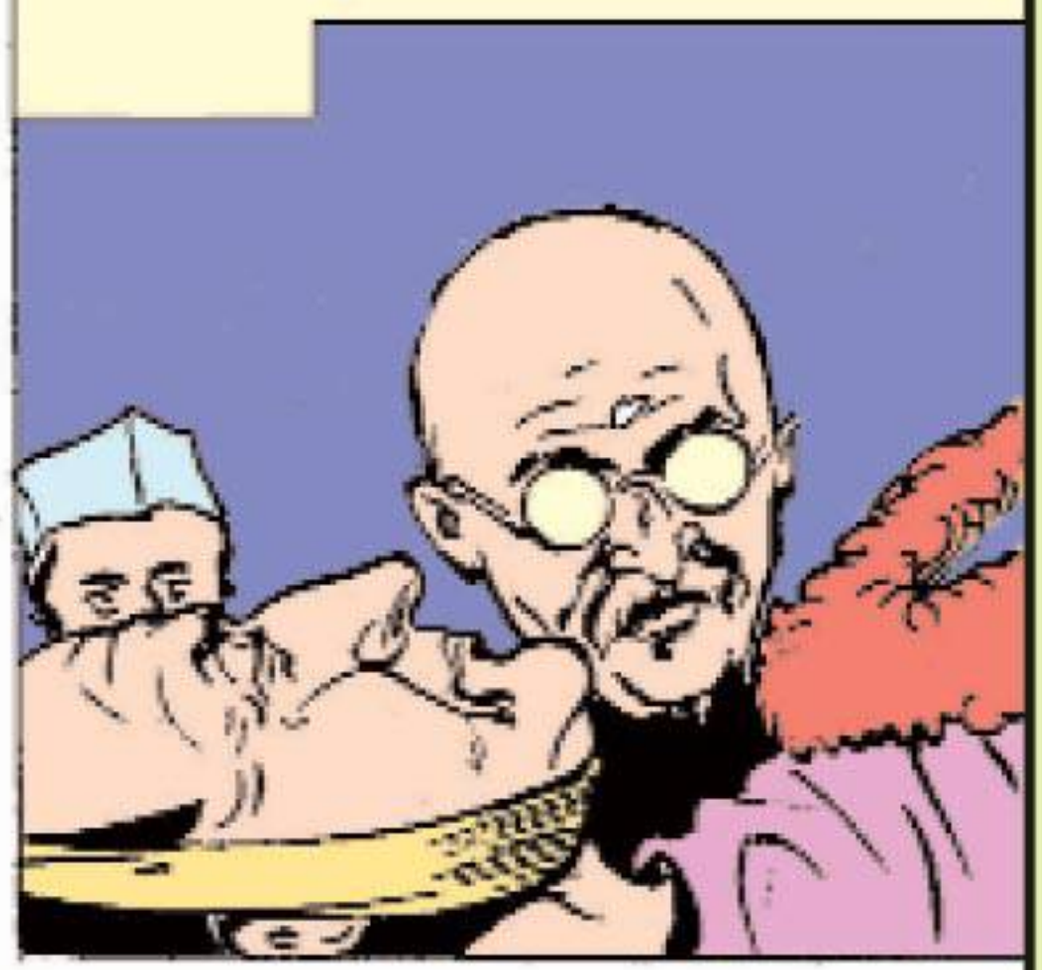

वाइसराय लार्ड इरविन से समझौता हो जाने पर गांधीजी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने लंदन चले गये। कानून तोड़ने का आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

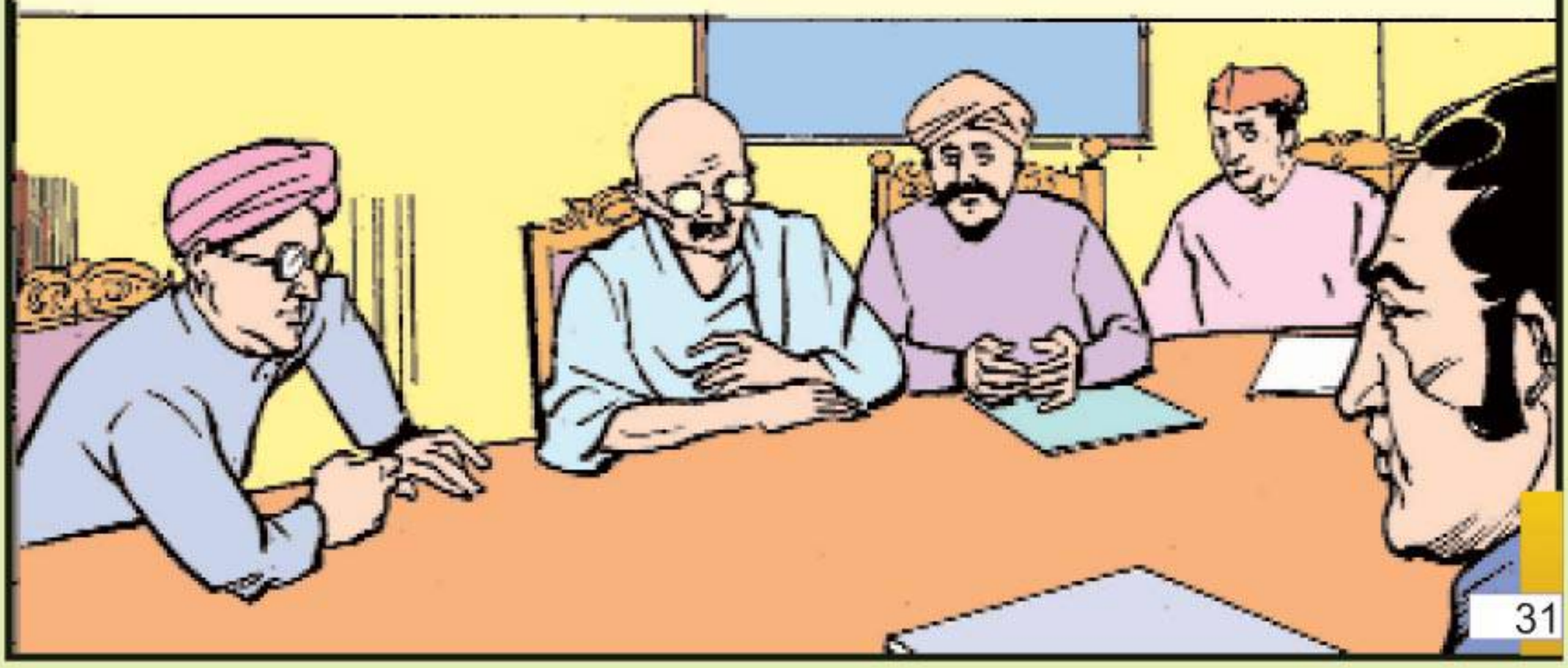

सम्मेलन विफल रहा। ब्रिटिश सरकार ने स्वराज देना अस्वीकार कर दिया। जवाहरलाल, महात्मा गांधी और अन्य कांग्रेसी नेताओं को फिर से गिरफ्तार...

...कर लिया गया। आंदोलन पुनः चल पड़ा। सत्याग्रहियों के एक प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए स्वरूप रानी को पुलिस ने निर्ममता से पीटा।

समाचार पाकर जवाहरलाल अशांत हो गये। कुछ दिन बाद स्वरूप रानी अपने बेटे को देखने जेल गई।

सितम्बर 1935 में नेहरू को छोड़ दिया गया, जिससे वे कमलाजी के पास जा सके। कमलाजी का इलाज चल रहा था।

कमलाजी को पहले जर्मनी और स्विट्जरलैंड ले जाया गया था। उन्होंने बड़े प्यार से उनकी देखभाल की।

28 फरवरी 1936 को कमला का देहांत हो गया। लासेन में ही उनका अंतिम संस्कार किया गया। उन्होंने इंदिराजी को लिखा, 'भगवान तुम्हें कमला के गुण अपनाने की शक्ति दे।'

जवाहरलाल उनकी राख लिये भारत लौटे। इलाहाबाद में उनको अस्थियां संगम में प्रवाहित की गयीं।

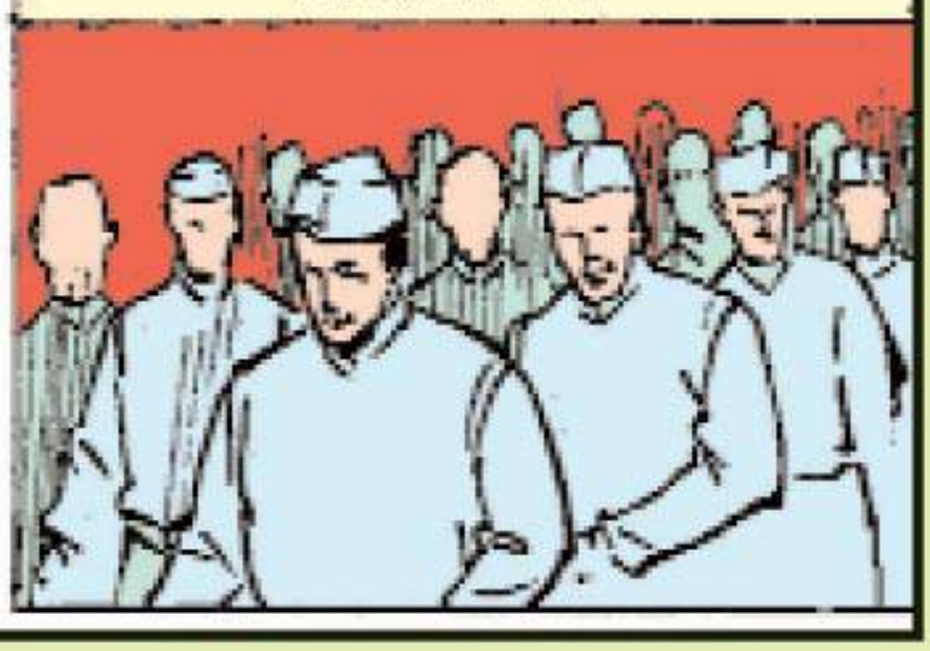

अधिकतर प्रदेशों में कांग्रेस ने शानदार सफलता पायी। ग्यारह में से आठ प्रदेशों में कांग्रेस ने मंत्रिमंडल बनाये।
ब्रिटिश अफसर हमारी राह में रोड़े अटका रहे हैं। फिर भी, अपने देश के लोगों की हालत सुधारने के लिए जो कुछ हमसे हो सकता है, हम कर रहे हैं।
वर्ष 1938 में नेहरू यूरोप गये। वे स्पेन भी गये, जहां गृहयुद्ध चल रहा था। वहां लोगों ने राजा का तख्ता उलट कर गणतंत्र स्थापित कर लिया था, पर...
...फ्रैंको नाम का जनरल विदेशी शक्तियों के सहारे उन्हें दबा रहा था। वे गणतंत्रवादी सैनिकों से मिले।
ब्रिटेन और फ्रांस लोकतंत्र के दावे करते हैं, पर वे स्पेन में लोकतांत्रिक शक्तियों की सहायता के लिए कुछ नहीं कर रहे। इटली का तानाशाह मुसोलिनी जनरल फ्रैंको की सहायता कर रहा है।
नेहरू गांधीजी के साथ....
हम ब्रिटेन की सहायता तभी करेंगे...
...जब वे हमें स्वतंत्र करेंगे।

भारतीय नेताओं से पूछे बिना ही ब्रिटेन ने घोषणा की, कि भारत जर्मनी के विरुद्ध लड़ने को तैयार है।
पर पहले भारत को स्वतंत्र घोषित किया जाए।
कांग्रेस नेताओं ने विरोध में इस्तीफा दे दिया।
वर्ष 1940 में गांधीजी ने युद्ध नहीं सत्याग्रह शुरू किया, जिसमें खास-खास व्यक्तियों...
विनोबा, तुम पहले सत्याग्रही होंगे। जवाहर, तुम दूसरे...।
... को न कि आम जनता को भाग लेना था। दोनों को पकड़ लिया गया।
गोरखपुर में अपने मुकदमे की सुनवाई के दौरान नेहरू ने कहा...
सर, मैं आपके सामने एक व्यक्ति के रूप में खड़ा हूं। जिस पर...
...राजद्रोह होने का आरोप लगाया गया है। आप राज्य के प्रतीक हैं...मैं भारतीय राष्ट्रीयता का प्रतीक हूं।...आप मुझे नहीं, बल्कि हजारों-लाखों...
...भारत के लोगों को अपराधी ठहराने जा रहे हैं। ...शायद अब खुद ब्रिटिश साम्राज्य ही विश्व के कठघरे में खड़ा है।
एक साल बाद उन्हें छोड़ दिया गया। उनकी बेटी इंदिरा ने वर्ष 1941 में फिरोज गांधी से विवाह कर लिया।

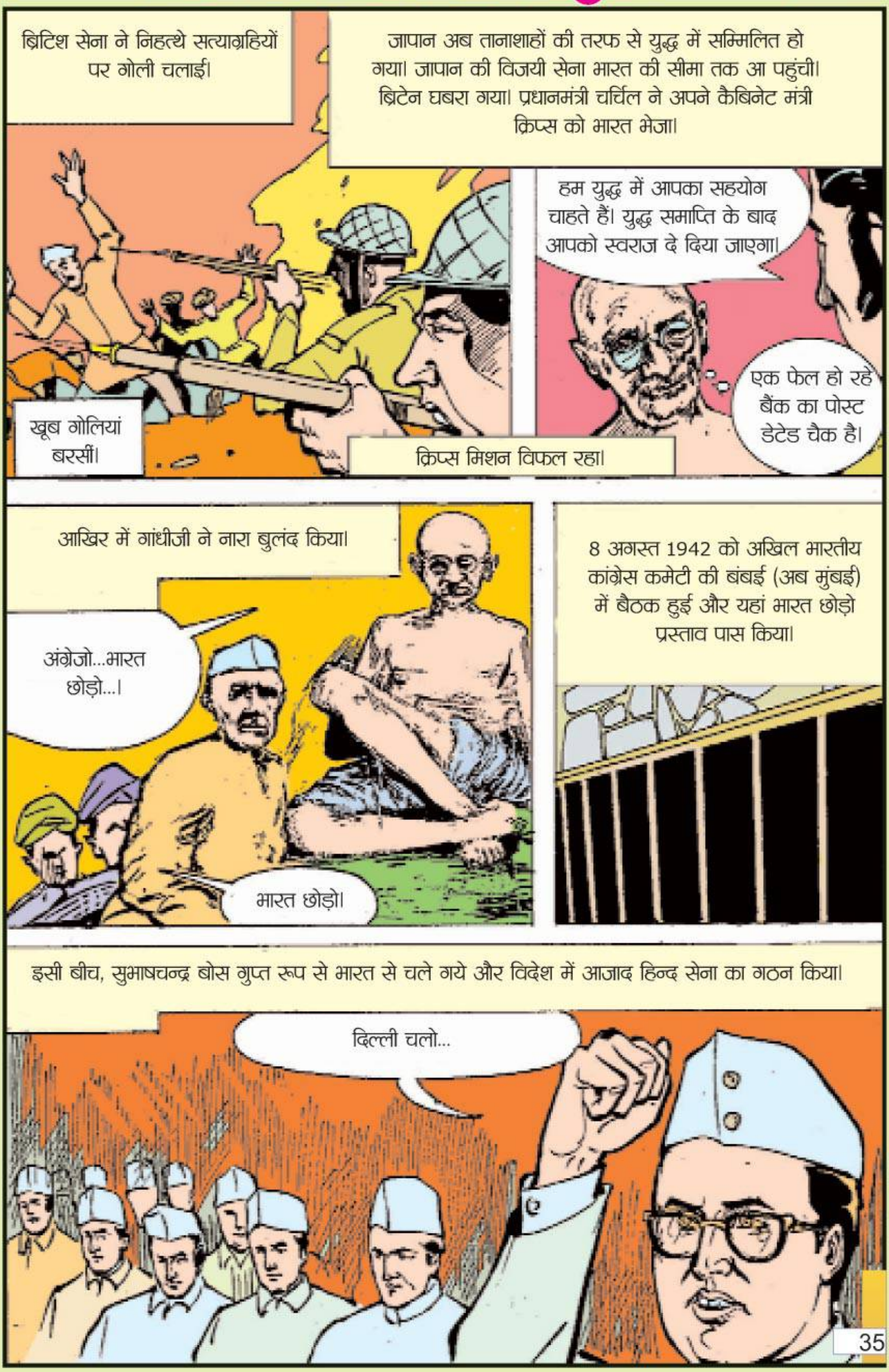
ब्रिटिश सेना ने निहत्थे सत्याग्रहियों पर गोली चलाई।
जापान अब तानाशाहों की तरफ से युद्ध में सम्मिलित हो गया। जापान की विजयी सेना भारत की सीमा तक आ पहुंची। ब्रिटेन घबरा गया। प्रधानमंत्री चर्चिल ने अपने कैबिनेट मंत्री क्रिप्स को भारत भेजा।
खूब गोलियां बरसीं।
हम युद्ध में आपका सहयोग चाहते हैं। युद्ध समाप्ति के बाद आपको स्वराज दे दिया जाएगा।
एक फेल हो रहे बैंक का पोस्ट डेटेड चैक है।
क्रिप्स मिशन विफल रहा।
आखिर में गांधीजी ने नारा बुलंद किया।
अंग्रेजो...भारत छोड़ो...।
भारत छोड़ो।
8 अगस्त 1942 को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बंबई (अब मुंबई) में बैठक हुई और यहां भारत छोड़ो प्रस्ताव पास किया।
इसी बीच, सुभाषचन्द्र बोस गुप्त रूप से भारत से चले गये और विदेश में आजाद हिन्द सेना का गठन किया।
दिल्ली चलो...

इससे पहले कि नया सत्याग्रह चलाया जाता, गांधीजी, जवाहरलाल और अन्य नेता पकड़ लिये गये। लोग गुस्से से भड़क उठे। उन्होंने खुला विद्रोह कर दिया। पुलिस थाने, रेलवे स्टेशन, डाकघर...सब पर धावा बोला गया। सरकार ने आतंक का राज शुरू कर दिया।

महिलाओं ने भारत छोड़ो आंदोलन में खुलकर भाग लिया। सितम्बर 1942 में इंदिरा गांधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

...गया था कि अंग्रेजों का भारत में ज्यादा दिन तक टिक पाना संभव नहीं है।

इसी बीच एक दुखद घटना हो गई। अंग्रेजों द्वारा उकसाए जाने पर मुस्लिम लीग के नेता जिन्ना ने मुसलमानों के लिए अलग राज्य की मांग पर जोर देना शुरू कर दिया।

वर्ष 1945 में युद्ध समाप्त हुआ। इंग्लैंड में लेबर पार्टी सत्ता में आई। जवाहरलाल छोड़ दिये गये। जब लालकिले में आजाद हिन्द फौज के तीन अफसरों पर मुकदमा चला, तो अन्य कई प्रसिद्ध वकीलों के साथ नेहरू ने भी उनकी वकालत की।

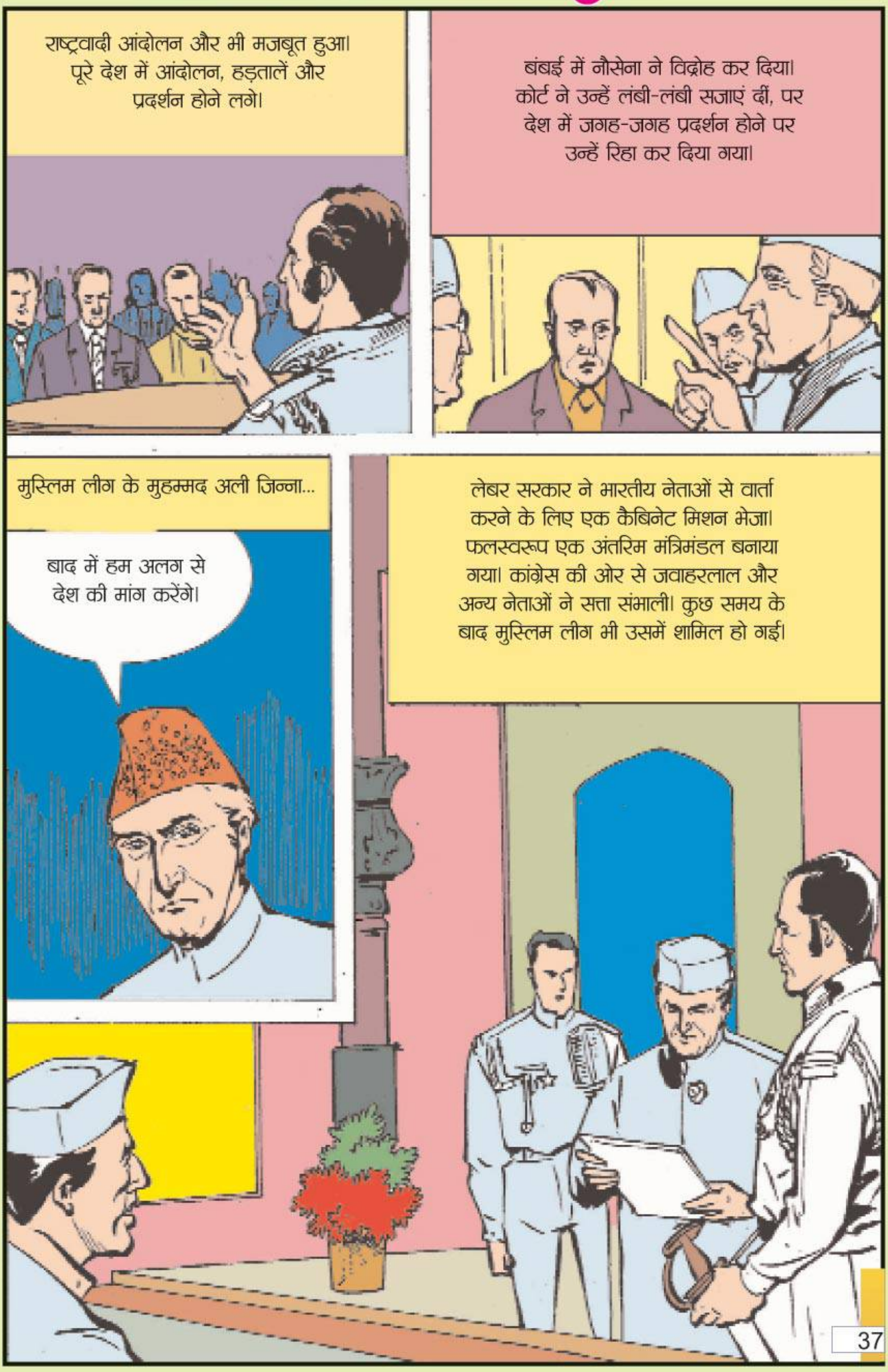
राष्ट्रवादी आंदोलन और भी मजबूत हुआ। पूरे देश में आंदोलन, हड़तालें और प्रदर्शन होने लगे।
बंबई में नौसेना ने विद्रोह कर दिया। कोर्ट ने उन्हें लंबी-लंबी सजाएं दीं, पर देश में जगह-जगह प्रदर्शन होने पर उन्हें रिहा कर दिया गया।
मुस्लिम लीग के मुहम्मद अली जिन्ना...
बाद में हम अलग से देश की मांग करेंगे।
लेबर सरकार ने भारतीय नेताओं से वार्ता करने के लिए एक कैबिनेट मिशन भेजा। फलस्वरूप एक अंतरिम मंत्रिमंडल बनाया गया। कांग्रेस की ओर से जवाहरलाल और अन्य नेताओं ने सत्ता संभाली। कुछ समय के बाद मुस्लिम लीग भी उसमें शामिल हो गई।

लॉर्ड वेवल के स्थान पर लॉर्ड माउंटबैटन भारत के नए वायसराय और गवर्नर जनरल नियुक्त किये गये। उन्होंने भारतीय नेताओं से विचार-विमर्श किया।
तुम्हारे निर्णय विश्व इतिहास को प्रभावित करेंगे। भारत की एकता खंडित नहीं होनी चाहिए।
लेकिन यह प्रबंध ठीक से न चल सका। मुस्लिम लीग ने शासन चलाने में सहयोग नहीं दिया। वह बंटवारे पर तुल गई। जगह-जगह दंगे शुरू हो गये। अनेक जानें गईं।
मगर जिन्ना पाकिस्तान की मांग पर अड़े रहे। साम्प्रदायिक दंगे बढ़े।
बंटवारा अब टाला नहीं जा सकता।
अब भारत को हमें अलग देश देना ही होगा।
ओह!

गांधीजी बंटवारे के खिलाफ थे। पर वे रास्ते में न आना चाहते थे।

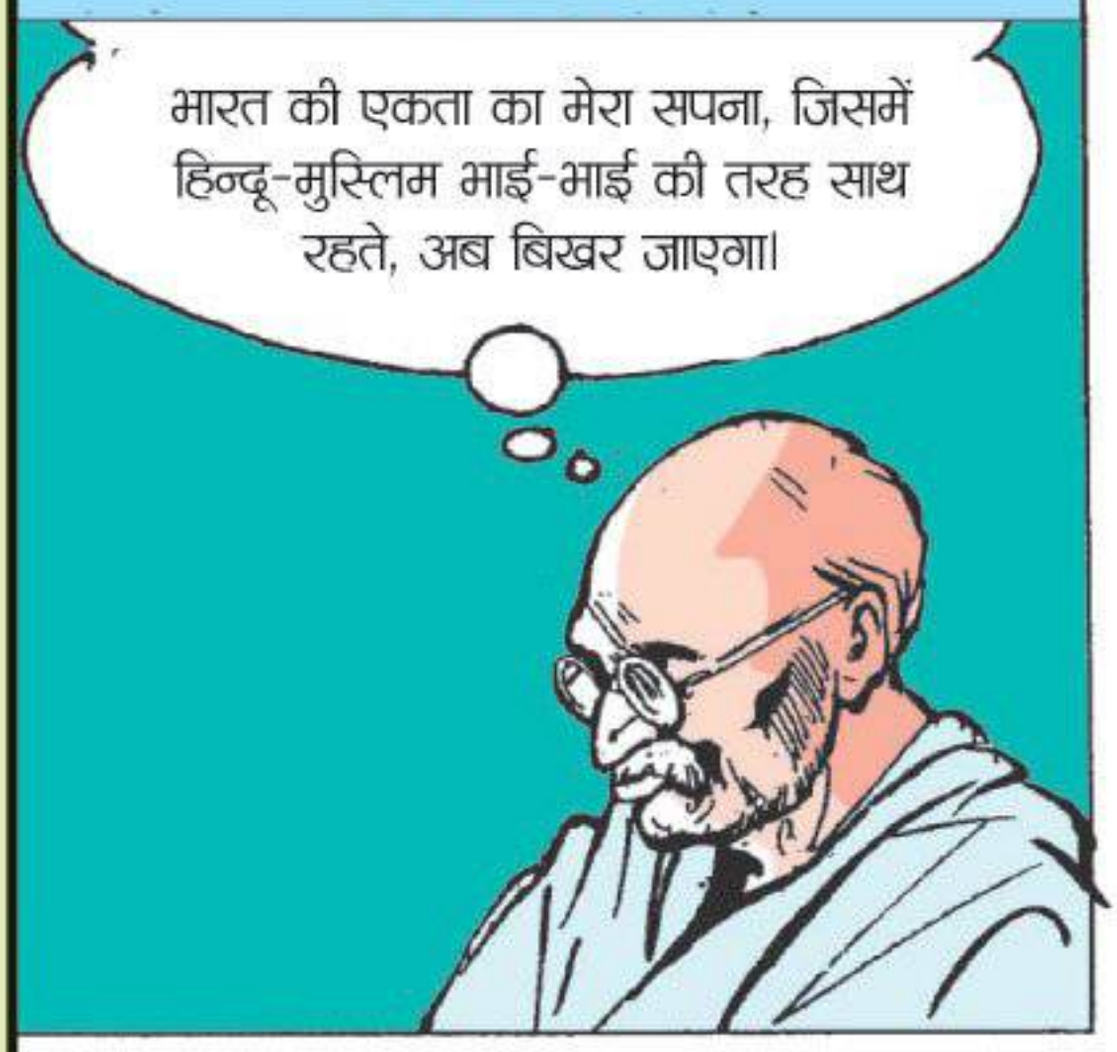

भारत 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ। पर वह गांधीजी के सपने का भारत न था।

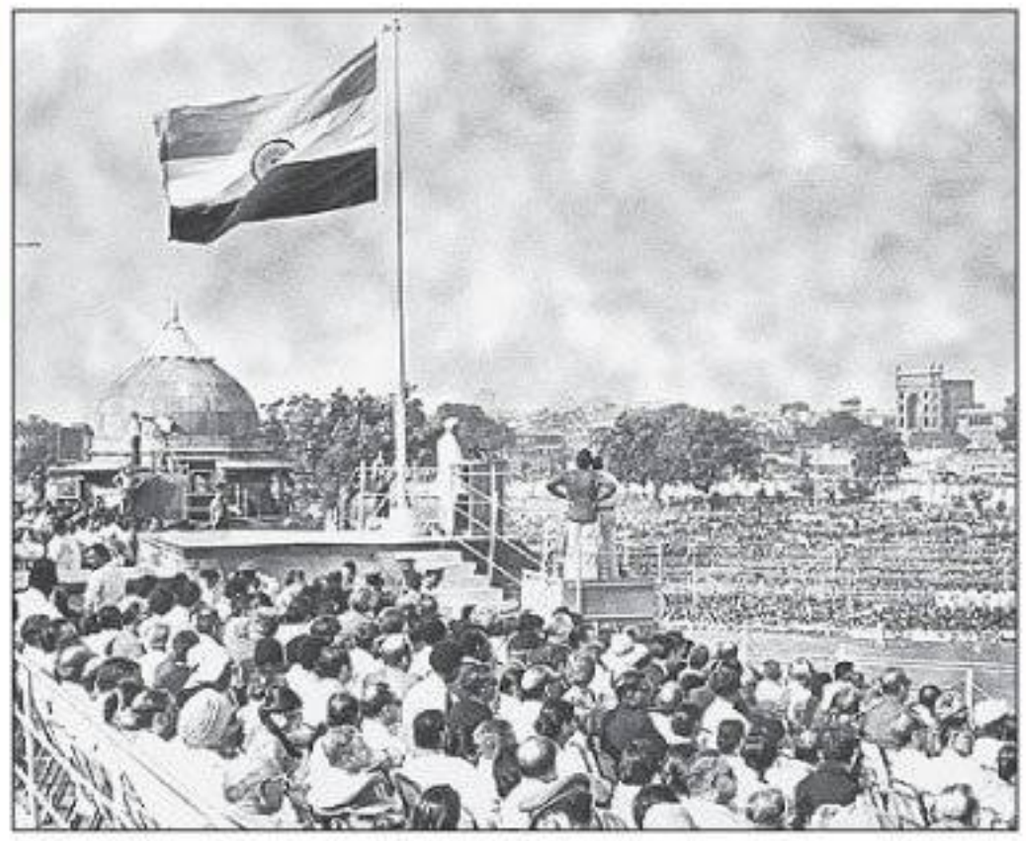

उसका एक हिस्सा पाकिस्तान बन गया।

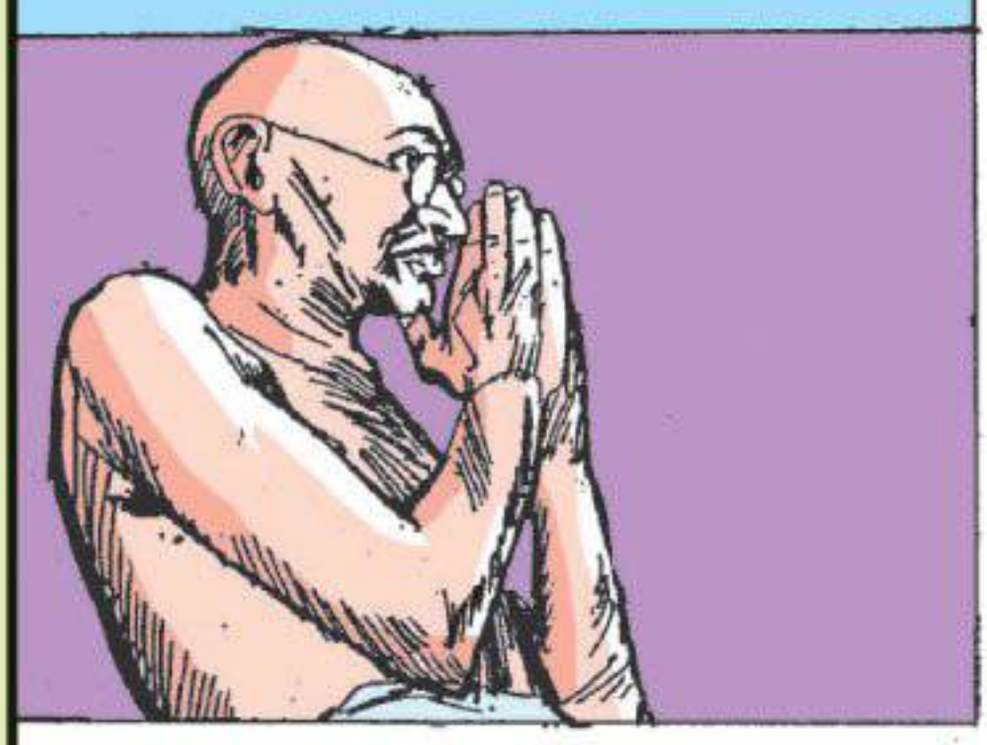

जवाहरलाल को आजाद भारत का प्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। 14 अगस्त को संवैधानिक असेम्बली में उन्होंने कहा-

जवाहरलाल ने पहली बार 15 अगस्त 1947 को लाल किले में तिरंगा फहराया। लाल किले से उन्होंने देश को संबोधित करते हुए कहा...

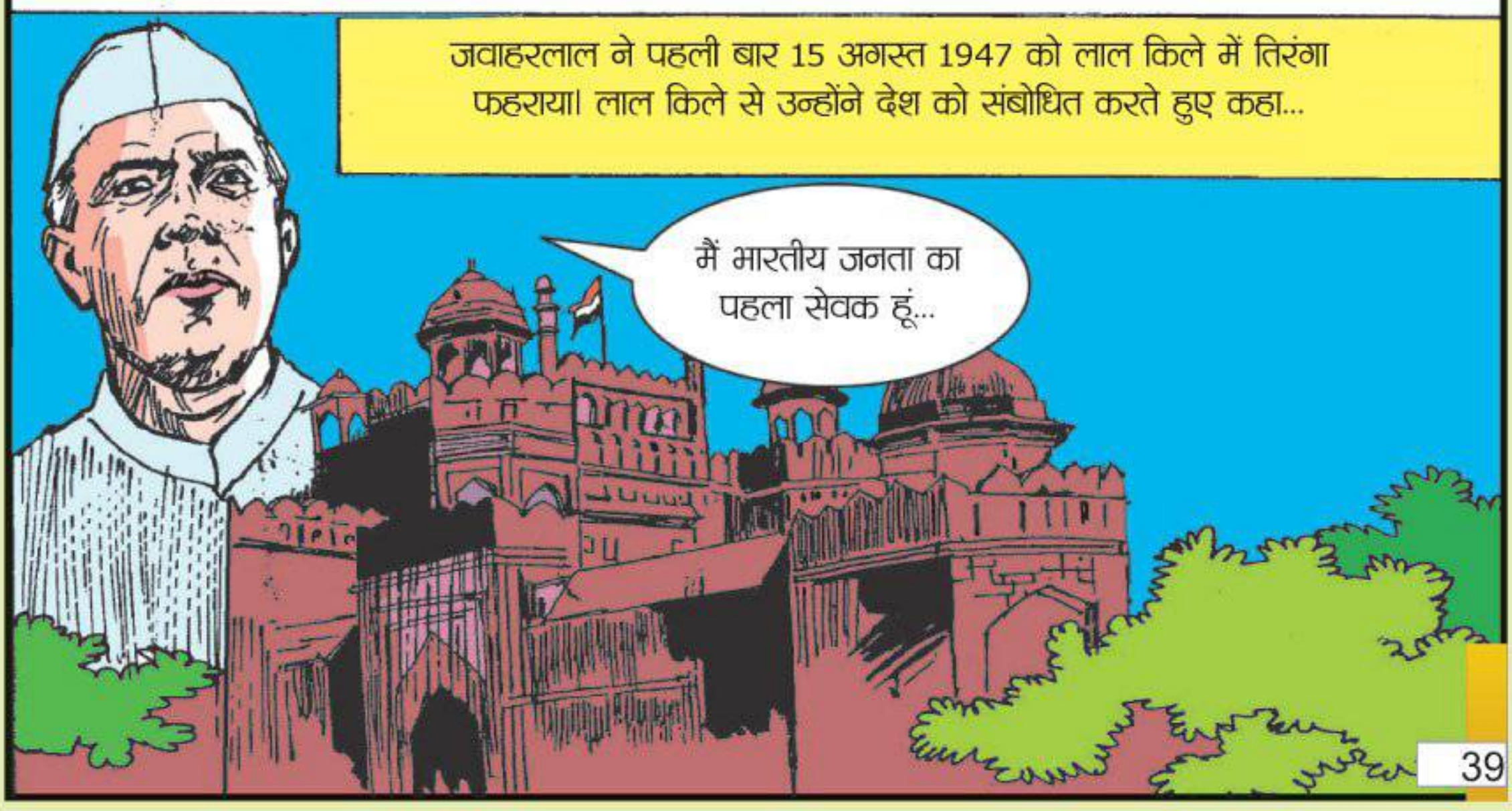

जब आजाद भारत स्वतंत्रता दिवस मना रहा था, गांधीजी बंगाल के गांवों का दौरा कर साम्प्रदायिक झगड़ों के शिकार लोगों के घाव भर रहे थे। साम्प्रदायिक दंगों ने हजारों जानें लीं और लाखों को बेघर कर शरणार्थी बना दिया। 30 जनवरी को शांति और साम्प्रदायिक एकता के दूत गांधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी गयी।
हमारे जीवन की रोशनी चली गई है और सब तरफ अंधेरा ही अंधेरा है।
नेहरू बापू के बिना अकेले हो गये। पर हिम्मत नहीं हारे। उन्हें अभी बहुत बड़ी-बड़ी समस्याएं निपटानी थीं। यह आराम का वक्त नहीं था।
वे राष्ट्र निर्माण में जुट गये। आजाद भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू किया गया। जब भारत गणतंत्र घोषित किया गया।
जवाहरलाल का विचार था कि सिर्फ विदेशी शासन से मुक्त हो जाना पर्याप्त नहीं। लोगों को समृद्ध और शक्तिशाली होना चाहिए...
...जिसके लिए पहले योजना बनानी होगी। इसलिए एक योजना आयोग बैठाया गया।

उन्होंने भारत को आधुनिक बनाने के लिए विज्ञान और तकनीक का इस्तेमाल किया। देशभर में बड़े-बड़े बांध, स्टील प्लांट और वैज्ञानिक प्रयोगशालाएं लगाई गईं।
उन्होंने लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता और समाजवाद के आदर्श देश के सामने रखे।
सबसे बड़ा मंदिर वह है, जहां आदमी मानवता की भलाई के लिए काम करता है।
उन्होंने विश्व शांति के लिए बहुत कुछ किया। भारत को पूंजीवादी या साम्यवादी विदेशी गुटों से दूर रखते सब देशों का मित्र रहने की नीति अपनाई।
गुटों की राजनीति से दूर, तटस्थ रहने की नीति निरपेक्षता कहलाती है। चीन ने वर्ष 1962 में आक्रमण करके भारत और नेहरू को धोखा दिया। मिस्र के राष्ट्रपति नासिर और युगोस्लाविया के माशर्ल टीटो के साथ मिल कर उन्होंने गुट-निरपेक्षता आंदोलन को विश्व में फैला दिया।

चाचा नेहरू बच्चों को खूब प्यार करते थे।
उनके कोट के ऊपर स्नेह का प्रतीक लाल गुलाब लगा रहता था।
उन्हें प्रकृति से भी बहुत प्यार था।
वे अक्सर पुत्री और नातियों के साथ समय बिताते।
27 मई, 1964 को इस अनुपम शांति दूत मानव की जीवन-यात्रा समाप्त हो गई। सारा देश शोक में डूब गया। समस्त विश्व दुखी हो गया। भारत की अमूल्य निधि थे, नेहरूजी।
कुछ दिनों बाद, उनकी अंतिम वसीहत प्रकाशित हुई। इसमें उन्होंने कहा था...
मुझे मेरे देश के लोगों ने इतना प्रेम और मुहब्बत दी है कि चाहे मैं जितना भी करूं वह उसके एक छोटे हिस्से का बदला नहीं हो सकता...मैं यह दरख्वास्त करता हूं कि मेरी भस्म की मुट्ठी इलाहाबाद के पास गंगा में डाल दी जाए और उसके बाकी हिस्से को हवाई जहाज से उन खेतों में बिखेर दिया जाए, जहां भारत के किसान मेहनत करते हैं, ताकि वह भारत की मिट्टी में मिलकर उसका एक अभिन्न अंग बन जाए।
(समाप्त)

मेट्रो स्टेशन कहें या पर्यटन स्थल

आज के व्यस्त यातायात में किसी भी देश के लिये मेट्रो ट्रेन न सिर्फ आवश्यकता बन चुकी है, बल्कि किसी देश की मेट्रो वहां की यातायात व्यवस्था का पैमाना निर्धारित करने का जरिया भी बन चुकी है। समय के साथ दुनिया के कई शहरों के मेट्रो स्टेशनों को भव्यता के साथ सजाया जाता रहा है। आधुनिक और प्राचीन कला के ये जीते-जागते नमूने हैं। ये स्टेशन न सिर्फ यातायात के लिये काम आते हैं, बल्कि पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी हैं। आपको दुनिया के टॉप 20 बेहतरीन मेट्रो स्टेशनों से परिचित कराते हैं।

नेपल्स इटली

इटली का नेपल्स देश में सबसे सुंदर मेट्रो स्टेशन है। इटली का टोलेडो मेट्रो स्टेशन अपने पानी और प्रकाश की थीम आर्ट के लिये प्रसिद्ध है।

मास्को रूस

मास्को में यदि आपको पारंपरिक रूसी कला का पता लगाना हो तो यहां के किसी भी मेट्रो स्टेशनों पर चले जाइये। मास्को के कई स्टेशनों पर धनुषाकार कॉलम और उ□दा भि□ा

स्टॉकहोम, स्वीडन

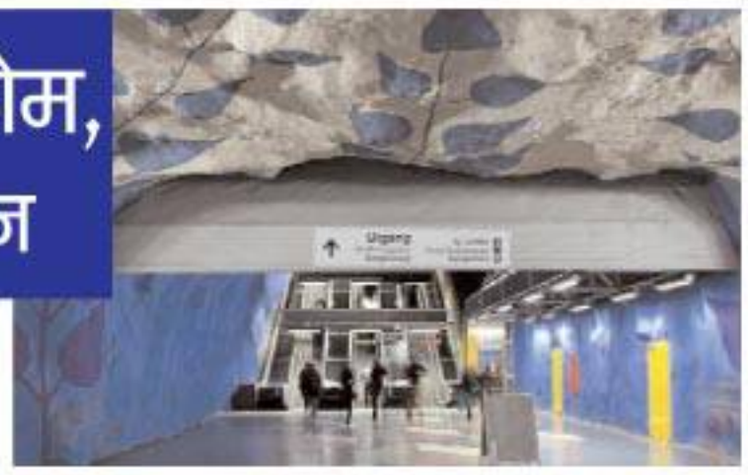

स्वीडिश मेट्रो स्टेशन आधुनिक मूर्तियों, मोजेक की छटा लिये होते हैं। स्टॉकहोम के मेट्रो स्टेशन पर दुनिया की सबसे लंबी कला प्रदर्शनी 'टनलबाना' है।

उत्तर कोरिया

उ□र कोरिया का प्योंगयांग मेट्रो स्टेशन अपने में इतिहास समेटे है। वैसे यह गुप्त भूमिगत सैन्य सुविधाओं से जोड़ने के लिए बनाया गया था। लेकिन अब भव्य वास्तुकला, शानदार गुंबदों व भि□ा चित्रों से अटी दीवारों के साथ परिवहन के बुनियादी ढांचे का एक

बर्लिन जर्मनी

बर्लिन के मेट्रो स्टेशन एक कला स□पन्न परिदृश्य समेटे हैं। यहां का हेडलबर्गर प्लात्ज स्टेशन जर्मन वास्तुकार विल्हेम लीगेबेल द्वारा डिजाइन सबसे चमकीले स्टेशनों में से एक है।

दुबई

दुबई की मेट्रो प्रणाली विरासत और आधुनिक डिजाइन का एक संयोजन है। खालिद बिन वालिद अल स्टेशन जेलीफिश के आकार में बड़े दीपकनुमा झूमर के साथ प्रकृति के चार त□वों (जल,

(पृष्ठ 44-45 भी देखें)

लंदन, इंग्लैण्ड

यदि आप पुराने इंग्लैण्ड के जॉली इलाके में हैं तो लंदन के प्रसिद्ध ट्यूब मेट्रो प्रणाली में वेस्टमिंस्टर स्टेशन को अवश्य परखें। माइकल हॉपकिंस द्वारा डिजाइन किये गये आकाश छूती छत, ठोस बीम, स्टील ट्यूब और एस्केलेटर की

सैंटियागो, चिली

सैंटियागो का डी चिली मेट्रो स्टेशन चिली के राजनैतिक और धर्म की त्रासदियों का इतिहास दर्शाता है। इसे देखकर इतिहास में विचरण करने-सा अनुभव होता है।

बार्सिलोना, स्पेन

बार्सिलोना के सीटेट जिले में स्थित ड्रेसंस स्टेशन सफेद कांच की दीवारों से अटा है। पुराने प्लेटफॉर्म पर आधुनिक कला चित्रित की गई है। यहां का प्लेटफॉर्म इस तरीके से

न्यूयॉर्क, अमरीका

न्यूयॉर्क की मेट्रो अपने आप में एक लोकप्रिय आकर्षण है। सिटी हॉल लें या ग्रांड सेंट्रल स्टेशन, दोनों सुंदरता की मिसाल हैं। एस्टर प्लेस पर एक साथ छह ट्रेनों की आवाजाही होती है। यह मनभावन ज्यामितीय चीनी मिट्टी के

काऊशुंग सिटी, ताइवान

ह्यताइवान में काऊशुंग स्टेशन पर रोशनी की चमक से चकित कर देने वाला बड़ा डोम है, जो रंगीन कांच के अलग-अलग टुकड़ों से बना है।

म्यूनिख, जर्मनी

□यूनिख का वेस्टफ्रीडओफ मेट्रो स्टेशन पीले और नीले प्रकाश के 11 अवतल एल्यूमीनियम के ल्यूमिनेयर्स से आपका स्वागत करता है। जो देखने में बड़े विशाल और रोमांचकारी

शंघाई, चीन

शंघाई में पर्यटकों के लिये सबसे ज्यादा उत्सुकता जगाने वाली शंघाई साइटसीन टनल है, जो होंगपु नदी के नीचे बनी है। यह मूल रूप से बुंड से पुडोंग को जोड़ती है। रंगीन रोशनी की चकाचौंध से यह

इलिनोइस, शिकागो

शिकागो मेट्रो का मुनरो/स्टेट रेड लाइन स्टेशन पुराने समय की सैर कराता है। यह वर्ष 1940 की वास्तुकला का एक बड़ा उदाहरण है, और उस वर्ष की कई चीजें अभी भी स्टेशन पर कला प्रदर्शित करने के लिये लगाई गयी हैं।

लिस्बन, पुर्तगाल

लिस्बन का ओलेयस मेट्रो स्टेशन महाद्वीप के सबसे अच्छे भूमिगत स्टेशनों में से एक होने के रूप में यूरोप में प्रसिद्ध है। स्टेशन एक ज्यामितीय आकार की छत, विभिन्न रंगों, प्रभावशाली कॉलम और जटिल मोजेक में लगी टाइल्स के

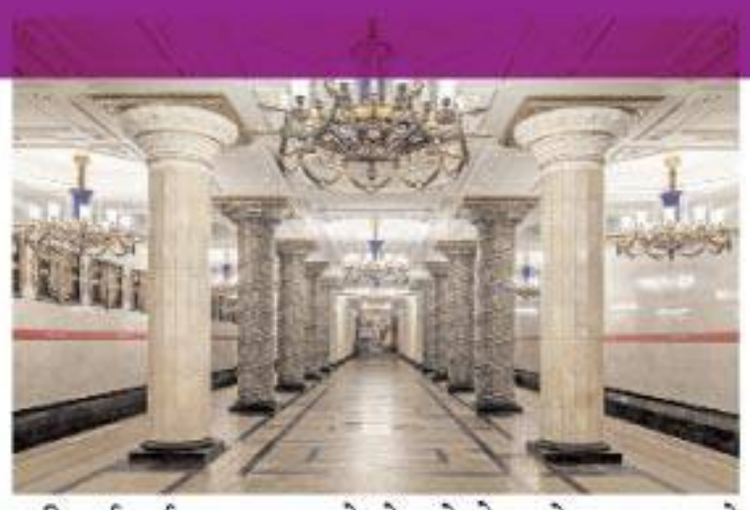

सेंट पीटर्सबर्ग का एवटोवो मेट्रो स्टेशन अपने भव्य डिजाइन और प्रभावशाली वास्तुकला के लिये प्रसिद्ध है। यह

ब्रुसेल्स, बेल्जियम

बुसेल्स के कोमे दी □लेंद्रे मेट्रो स्टेशन पर प्रसिद्ध बेल्जियम चॉकलेट का मजा लेते हुए इसे निहारना एक अलग ही

पेरिस, फ्रांस

पेरिस में मेट्रो स्टेशनों उतने ही चौकाते हैं, जितनी शहर की अन्य चीजें। यहां के मेट्रो प्रवेश द्वार अलंकृत आर्ट से सजे होते हैं। ओबर स्टेशन पर आकर लगेगा कि किसी अंडरग्राउंड पार्क में आ गये हैं।

फ्रेंकफर्ट, जर्मनी

फ्रेंकफर्ट के बोकनहीमर स्टेशन के प्रवेशद्वार बड़े आकर्षक हैं। यथार्थवादी कलाकार रेने का इन पर प्रभाव नजर आता है।

बिलबाओ, स्पेन

स्पेन का बिलबाओ स्टेशन काफी विशाल जगह में फैला है। जब ट्रेन इसमें प्रवेश करती है तो एक ग्लास ट्यूब में से होकर जाती है।

क्यों और कैसे?

सेंट एल्मो'स फायर

गरज के साथ तूफान वाले मौसम में कभी-कभी चर्च की मीनार पर प्रकाश की एक चमक देखी जाती है। यही वह चमक है, जिसे सेंट एल्मो'स फायर (Saint Elemo's Fire) के नाम से जाना जाता है। वैसे तो यह प्रायः नीले रंग की होती है, लेकिन हरे, बैंगनी और यदाकदा गुलाबी रंग की आभा के साथ भी इसे देखा गया है।

यह तथ्य बहुत कम प्रचारित हो पाया है कि सेंट एल्मो'स फायर वास्तव में सेंट इरैसमस फायर (Saint Erasmus Fire) का विस्तृत रूप है। क्योंकि इस तरह

की आग का जो रूप जलयानों के मस्तूल शिखर पर नजर आता है, उसका नाम सेंट इरैसमस की वजह से पड़ा है। जिसकी छवि नाविकों के संरक्षक संत के रूप में मानी जाती थी। इन नाविकों का यह विश्वास था कि यह आध्यात्मिक प्रकाश इस बात का संकेत है कि संत तूफान के दौरान उनके जहाजों पर निगाह रखे हुए हैं, इसलिए वे संकट के क्षणों में भी पूर्ण सुरक्षित रहेंगे।

वैज्ञानिक आधार पर जांचें तो हम पाएंगे कि सेंट एल्मो'स फायर तूफान के समय वातावरण में छाए विद्युत आवेश का परिणाम है। होता क्या है कि इस दौरान विद्युत एक हानिरहित प्रकाश की चमक के रूप में वायु में निरावेशित होकर समुद्री जहाजों के मस्तूल के चारों ओर झिलमिलाती हुई ऐसी नजर आती है, मानो वहां आग लगी हो। परंतु यहां आकाशीय विद्युत की तुलना में वोल्टेज इतना कम होता है कि इससे किसी तरह के नुकसान की संभावना बिल्कुल नहीं होती।

गांठ लगे फटाफट

सामग्री- साठ सेंटीमीटर लम्बी रस्सी का एक टुकड़ा।

शुरू करो- पहले तो तुम रस्सी के एक सिरे को अपने बायें हाथ के अंगूठे और तर्जनी के बीच दबाकर पकड़ लो। फिर रस्सी के दूसरे सिरे को दायें हाथ पर पीछे की ओर से इस प्रकार लटकाओ ताकि यह सिरा इसकी हथेली के आगे नीचे की ओर लटकने लगे। इसके बाद दोनों हाथों को करीब ले आओ, जिससे दायां हाथ रस्सी के

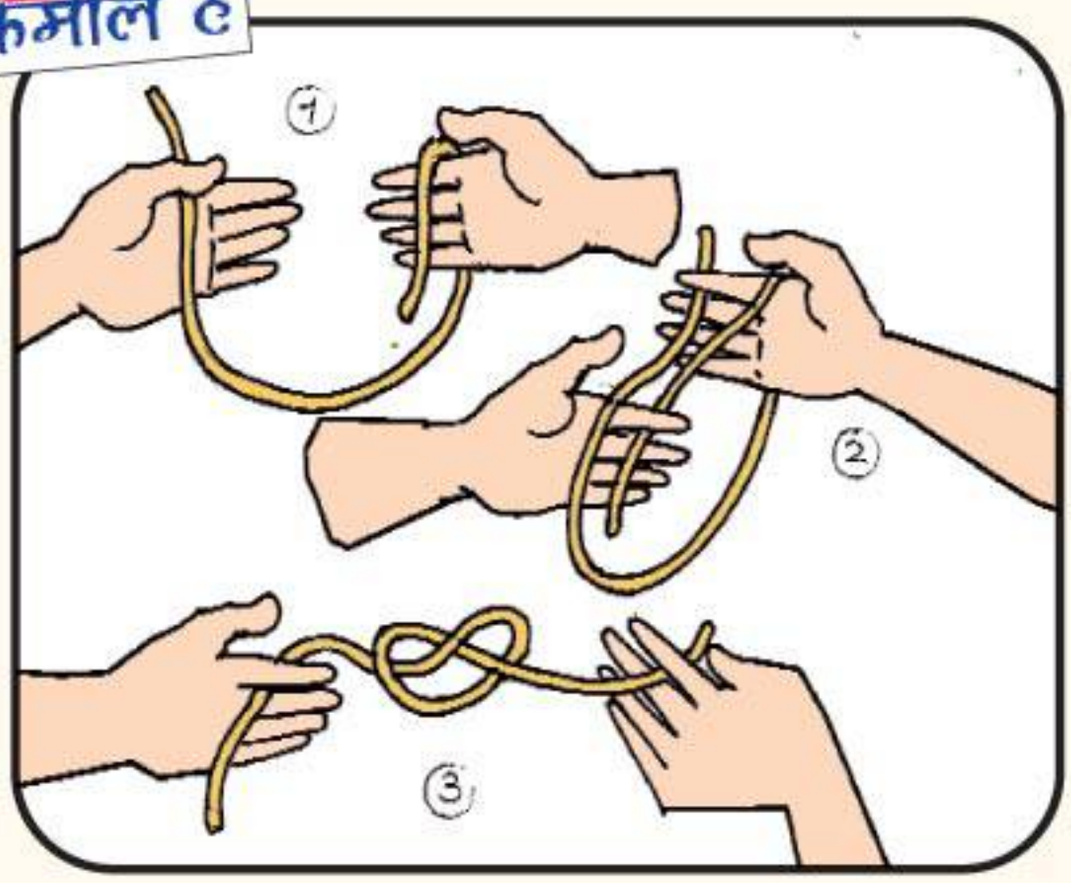

बायें सिरे का अपनी तर्जनी और मध्यमा के बीच दबा सके। साथ ही बायां हाथ दाहिने के नीचे की स्थिति में ही रहते हुए रस्सी को अपनी तर्जनी और मध्यमा से दबा ले।

अब मैं अगर अपने हाथों को वापस खींच लूं तो क्या होगा। बता सकते हो? दर्शकों से ऐसा पूछते हुए, जब आप अपने हाथ वास्तव में ही वापस खींच लेते तो वे सब हैरान रह जाएंगे। तुम्हारे द्वारा लगाई गई फटाफट वाली इस गांठ को देखकर।

-आइवर

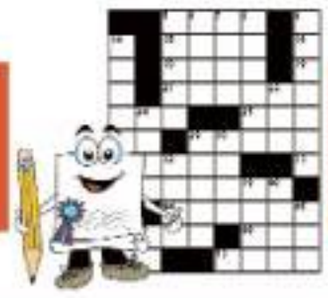

CrossWord PuzzLeS

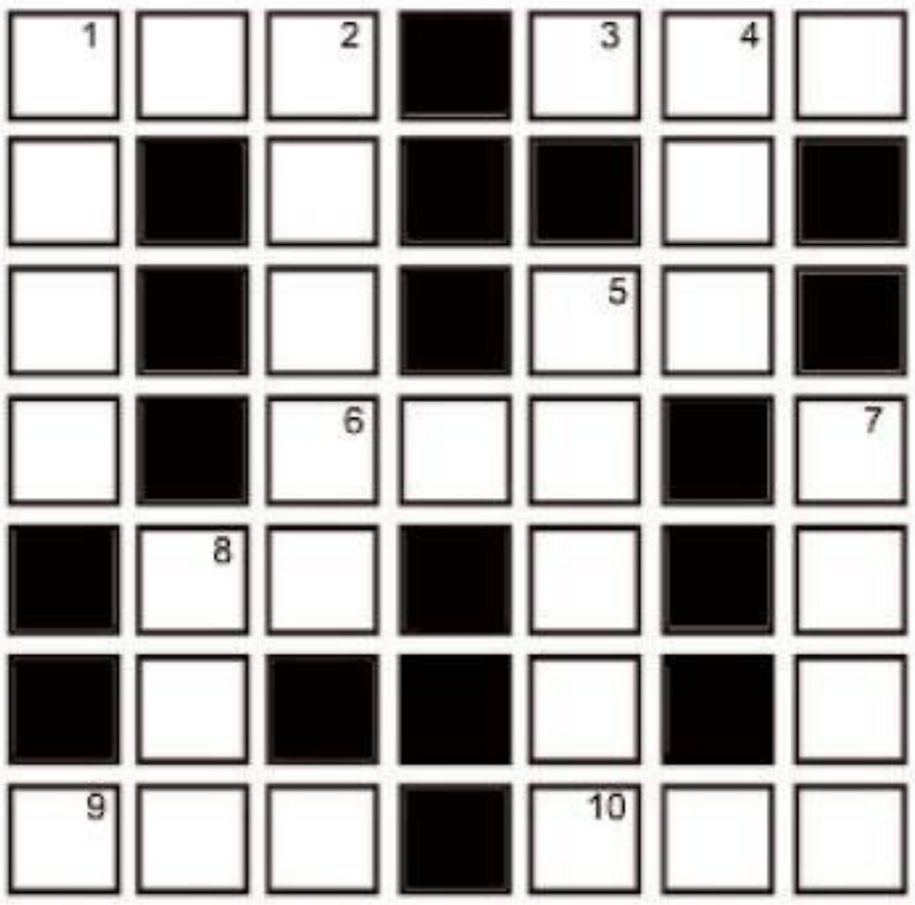

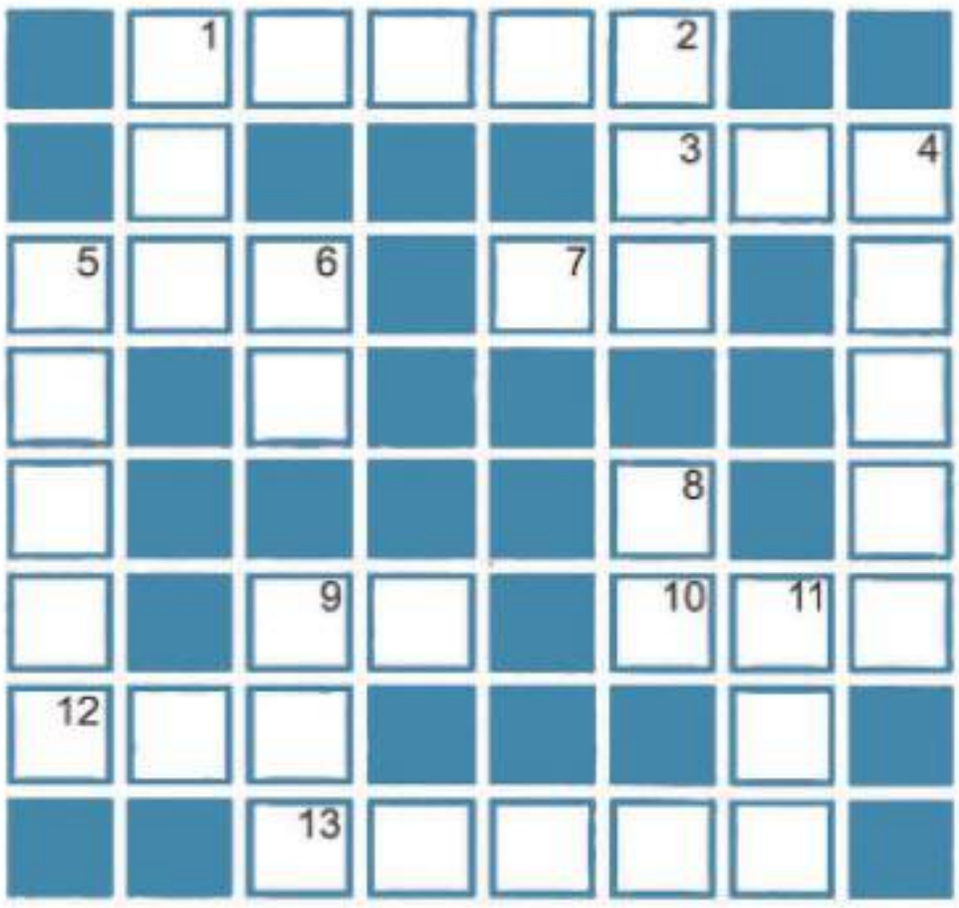

बाएं से दाएं

1. किसी काम का परिणाम, अंत (3)।
3. माना जाता है कि यह पत्थर लोहे को सोना बना देता है (3)।
5. चमड़ा, त्वचा (2)।
6. रोकने वाला, दबा देने वाला (3)।
8 . इसका मतलब पराजय भी होता है और माला भी (2)।
9. कठिन का उल्टा होगा (3)।
11. बिना मतलब का, बेवजह

ऊपर से नीचे

1. गायब हो जाना...होना (4)।
2. स्वादिष्ट को यह भी कहते हैं (5)।
4. ईश्वर का दूत, पैग□बर (3)।
5. मारा-मारा फिरना (2,3)।
7. अपने सामर्थ्य के अनुसार पूरी कोशिश...प्रयास (4)।
8. बुरी घटना,

ACROSS

1. The most forward part of something (5).
3. Different to what is usual or expected (3).
5. Organ of sight (3).
7. Physically in contact with and supported by a surface (2).
9. Therefore, Thus (2).
10. Make an or effort to do something (3).
12. The female of hart (3).
13. Bequeath an income or property to a person or institution (5).

DOWN

1. Cook (food) in hot fat or oil (3).
2. 1016.05 Kilogram=1... (3).
4. Confused (5).
5. A small piece of glowing coal or wood (5).
6. On the way... route (2).
8. In, Towards (2).
9. Perceive with the eyes, Discern visually (3).
11. No. of person or thing in a line (3).

Answer

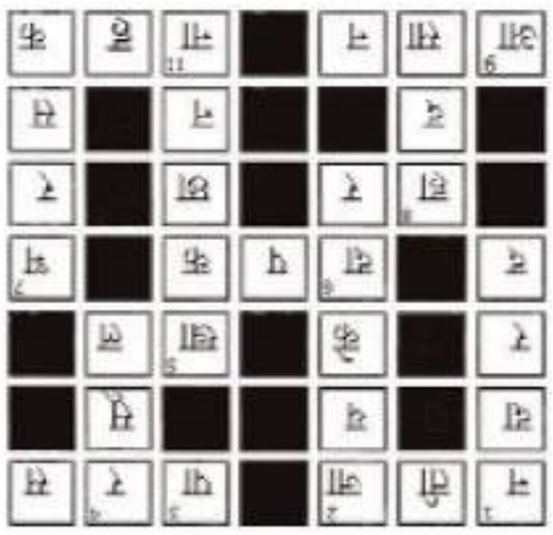

प्रांजल शर्मा
नोहर, हनुमानगढ़ (राज.)

शाजीना सिद्दिकी
शाहपुर बघौनी, समस्तीपुर

साक्षी शर्मा
भगीरथपुर, महराजगंज (उ.प्र.)

सबको सहलाती सर्दी

शीत ऋतु में आती सर्दी
सबको खूब सहलाती सर्दी।
कांप रहे हैं, गली-मौहल्ले
सर्दी की फटकार से।
गरम पकौड़े हमें खिलाये
मां ने कितने प्यार से।
शीत लहर है खड़ी द्वार
कोई दरवाजा ना खोले।
सर्दी जब आती है
हमें बहुत कंपाती है।

-धीरज गौतम, मण्डावरी, दौसा (राज.)

रंग रंगीली ऋतुएं

सर्दी-गर्मी और बरसात
तीन ऋतुओं से जीवन आबाद।
गर्मी पानी भाप बनाए
बादलों से आकाश सजाए।
बरसे पानी ताल भर जाए
जीव-जन्तु जीवन पा जाएं।
संतापों को दूर भगाए
ठंडी-ठंडी सर्दी आए।
फल-सब्जियां और मिठाई
गरमा-गरम पकौड़े खाएं।
हृष्ट-पुष्ट तन बनाएं
जीवन को खुशहाल बनाएं।

-हेमलता शर्मा, अजमेर (राज.)

बालमंच

लिटिल स्टार

टीवी धारावाहिकों में अपने अभिनय के दम पर अनुष्का सेन लिटिल स्टार की श्रेणी में आगे खड़ी दिखती है। सीरियल 'बालवीर' में मेहर की महत्त्वपूर्ण भूमिका में वह वाह-वाही लूट चुकी है। सीरियल में इसका रोल बढ़ता ही गया। इस सीरियल के करीब दो सौ एपिसोड दिखाए जा चुके हैं। वह कहती है, 'बाल कलाकार किसी भी दृष्टि से कम नहीं होते। एक बार सही अवसर मिल जाए तो वह अपनी एक्टिंग का लोहा मनवा ही लेते हैं।'

अनुष्का सेन

अनुष्का सेन को अभिनय का शौक बचपन से ही रहा है। वह स्कूल समारोह में मोनो-एक्टिंग करती थी। वहां हौसला बढ़ा तो फिर समर कैम्प, एक्टिंग क्लासेज, वर्कशॉप में जाने लगी। मॉडलिंग क्षेत्र में भी भाग्य आजमाया तो वहां भी कामयाबी मिलती गयी। किसी गॉड फादर के बिना उसने टीवी जगत में पर्दापण करने का मन बनाया।

सर्वप्रथम उसे हास्य धारावाहिक 'कॉमेडी सर्कस' में मौका मिला। सुप्रसिद्ध अभिनेत्री भारती सिंह के साथ विविध भूमिकाएं निभाते हुए उसने दर्शकों-समीक्षकों से वाहवाही हासिल की। उसका कहना है कि टीवी सीरियल ऐसा माध्यम है, जहां बाल प्रतिभाओं को तरह-तरह के किरदार निभाने को मिलते हैं। जब हम सफल होते हैं, तो प्रशंसा मिलती है। सीरियल 'अमृत मंथन' में अनुष्का सेन ने नायिका निमरित के बचपन को ऐसा साकार रूप दिया कि दर्शक सराहना करते नहीं थके। धार्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित सीरियल 'देवो के देव महादेव' में वह बाल पार्वती बनी और सराहना बटोरने में सफल रही।

अनुष्का की आयु अभी मात्र 12 वर्ष है। वह पढ़ाई में होशियार है। उसकी कक्षा में टॉप रेंक बनी हुई है। उसे बाल पत्रिकाएं पढ़ने का बहुत शौक है।

-राजू कादरी रियाज

शब्द युग्म

अंगार- अंगारा

अंगारी- अंगीठी

अंगना- स्त्री

अंगन- आंगन

अर्क- सूर्य

अरक- सत

अंगद- बालिपुत्र

अगद- निरोग

अंतर- फर्क

अतर- इत्र

पर्यायवाची शब्द

अधर- ओठ, ओष्ठ, लब

अनुपम- अनोखा, अनूप, अनूठा, निराला, अतुल

अनजान- अजनबी,अपरिचित, अनभिज्ञ, बेगाना, गैर

अत्याचार- अनाचार, अन्याय, उत्पात, जुल्म, अपकार

आम- आम्र, रसाल, सहकार, अमृतफल, पिकबन्धु, मधुदूत

परिश्रम ही सौभाग्य की जननी है।

Diligence is the mother of good luck.

कमजोर गुस्सा ज्यादा।

A little pot, soon hot.

चेहरा दिल का दर्पण है।

Face is the index of mind.

To go bad-सड़ना

Bag of bones- अति दुर्बल मुनष्य

To let out of bay- रहस्य खोलना

To strike a balance- आय-व्यय का हिसाब निकालना

अंतर है

Lion-शेर

Loin-कमर

Prey-शिकार

Pray-प्रार्थना करना

Pole-खंभा

Poll-मतदान करना

Main-खास

Mane-जानवरों के गर्दन के बाल

एक के तीन

Poison- पोइजन-जहर-विषम्

Sapphire- सैफायर-नीलम-नीलमणिः

Refusal- रि□यूजल-इन्कार-अस्वीकरणम्

Identification- आइडेंटिफिकेशन-पहचान-अभिज्ञानम्

लोकोक्तियां

अंधेर नगरी चौपट राजा- कुप्रशासन और अजागरुक जनता।

अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग- अपनी मनमानी करना और एक-दूसरे के साथ तालमेल न रखना।

अपनी गली में कु□ा भी शेर होता है- अपने घर में, क्षेत्र में तो सब जोर बताते हैं।

उर्दू/ हिन्दी

आरिज- रोग, बीमारी, व्याधि

आला- सर्वश्रेष्ठ, उ□ाम, बढ़िया

आरिफ- ज्ञाता, जानने वाला, परिचित

आरजू- इच्छा, मनोकामना, उ□मीद

One Word

-Water fit for drinking- **Potable.**

-Tendency to quarrel- **Pugnacity.**

-A remedy which never fails- **Infallible.**

-Too much official formalities- **Redtapism.**

प्रस्तुतिः किशन शर्मा

- पर्वत के नीचे तलहटी की भूमि- **उपत्यका।**
- जो दूसरों की उन्नति देखकर जलता हो- **ईर्ष्यालु।**
- उ□र और पूर्व के बीच की दिशा- **ईशान्य, ईशान।**
- वह पर्वत जहां से सूर्य और चन्द्रमा उदित होते माने जाते हैं-**उदयाचल।**

पत्तियों का हार

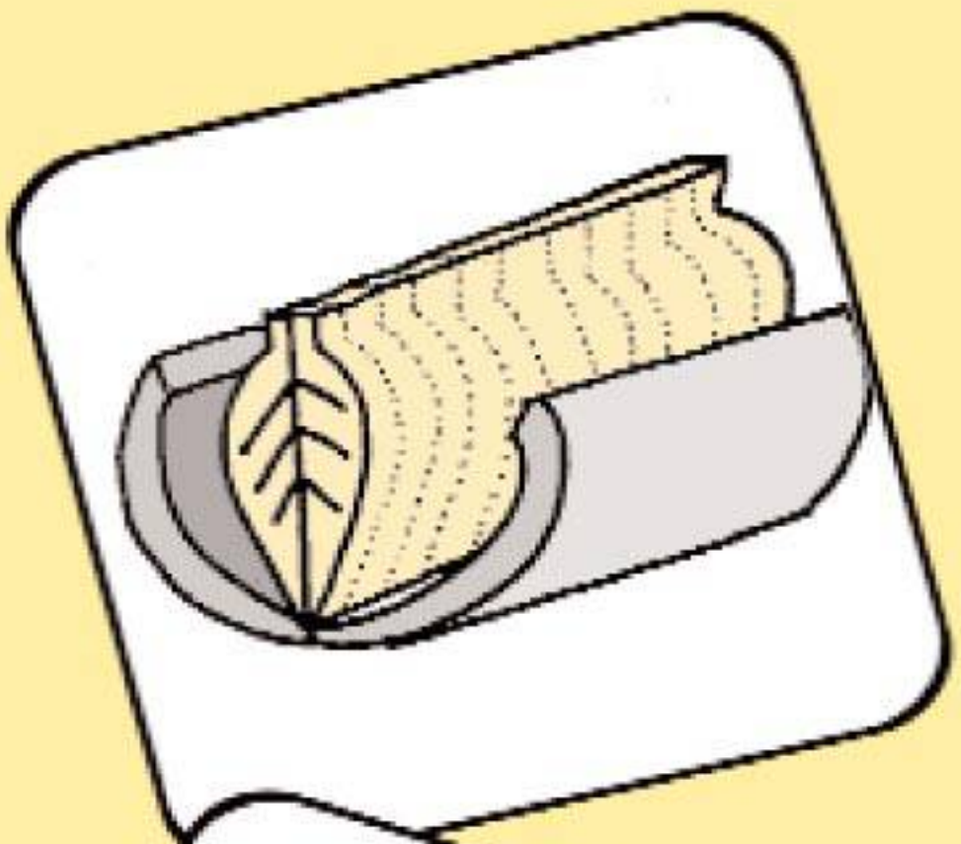

सामग्री : क्ले, पोस्टर कलर, चाकू, फॉयल पेपर, पिन, डोरी।

विधि : क्ले को अच्छी तरह गूंथ कर लंबी लोई पत्ती के आकार की बना लें। इसे फॉयल पेपर में लपेट कर सैट कर लें। सैट होने के बाद नाइफ से पतली-पतली पत्तियां काट लो। ऊपर की ओर छेद करके पत्तियों में शाखाएं बना दें तथा सूखने दें। सूखने के पश्चात मनचाहे रंग भर दीजिए। आप चाहे तो एक ही रंग भी कर सकते हैं। इन्हें डोरी में डालकर पहनिए।

art junction

क्राफ्ट पेपर के फूल

सामग्री : क्राफ्ट पेपर, टेनिस बॉल, धागा, पतला वायर।

विधि : पेपर को थोड़ी लंबाई में काट लो। टेनिस बॉल को बीच में रखकर टॉफी की तरह लपेट लें। बीच में से बॉल निकाल लें। इसी तरह सारी पत्तियां बना लें। सबको मिलाकर बीच में पतला वायर डालकर मोड़ दें। इसी तरह हर रंग के फूल बनाकर गुलदस्ते में सजाइए।

माथापच्ची

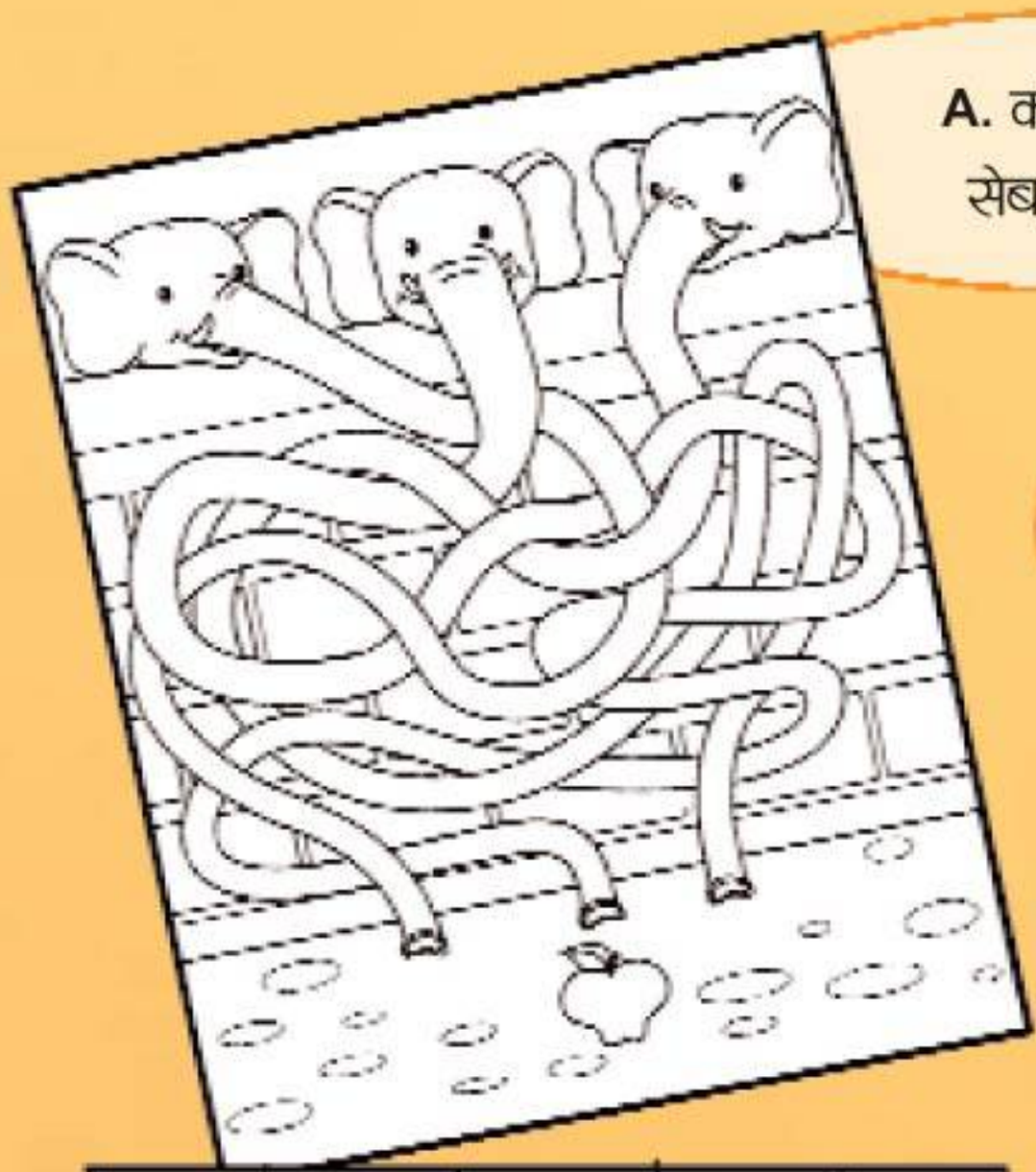

A. कौनसा हाथी सेब उठाएगा।

B. खाली चौखानों में ऐसी संख्या भरो जिसका योग सामने लिखी संख्या हो।

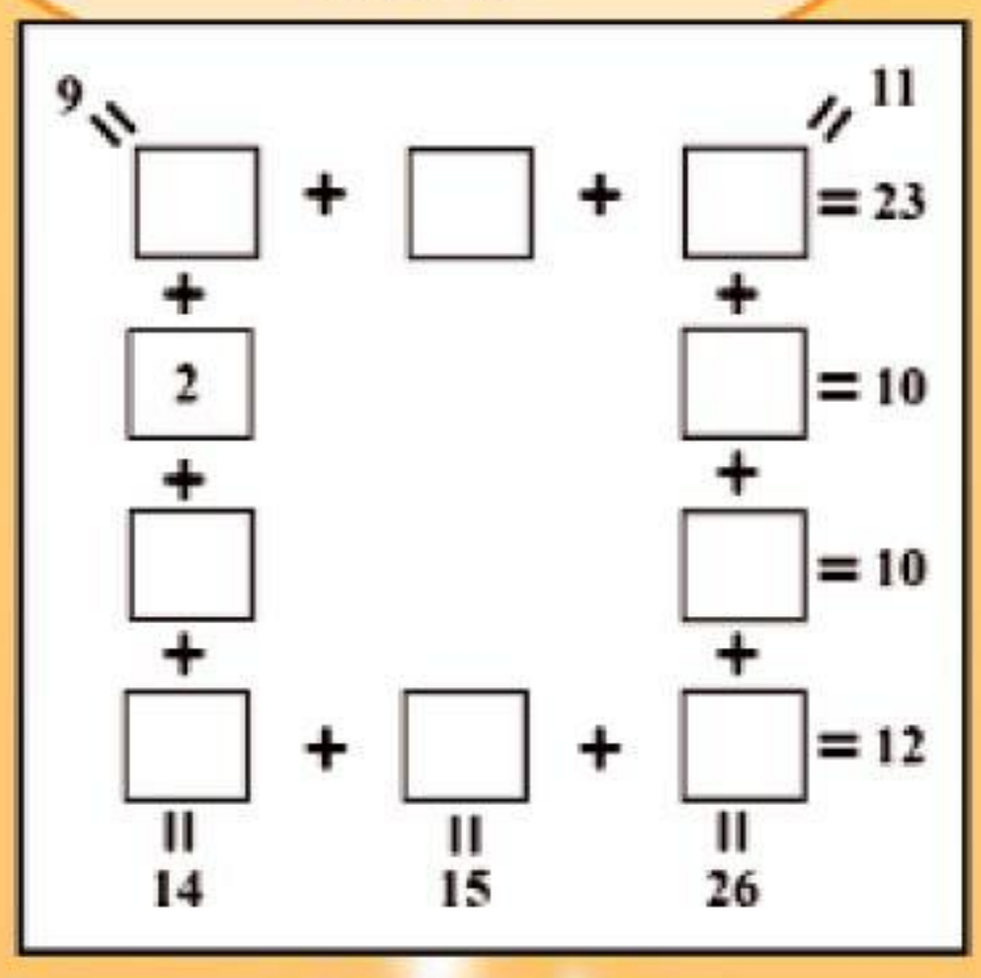

■	■	●	▲	35
→	■	▲	■	26
●	▲	●	→	36
■	→	●	●	34
29	26	45	?	?

C. प्रश्नवाचक चिह्न की जगह कौनसी संख्या आएगी तथा किस शेप का नंबर क्या है?

D. चौखानों के आधार पर चित्र बनाओ।

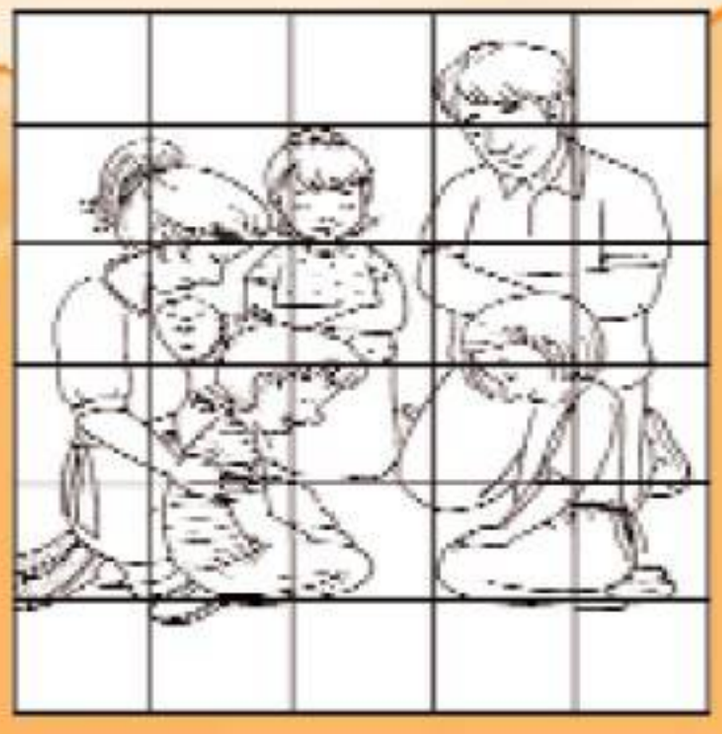

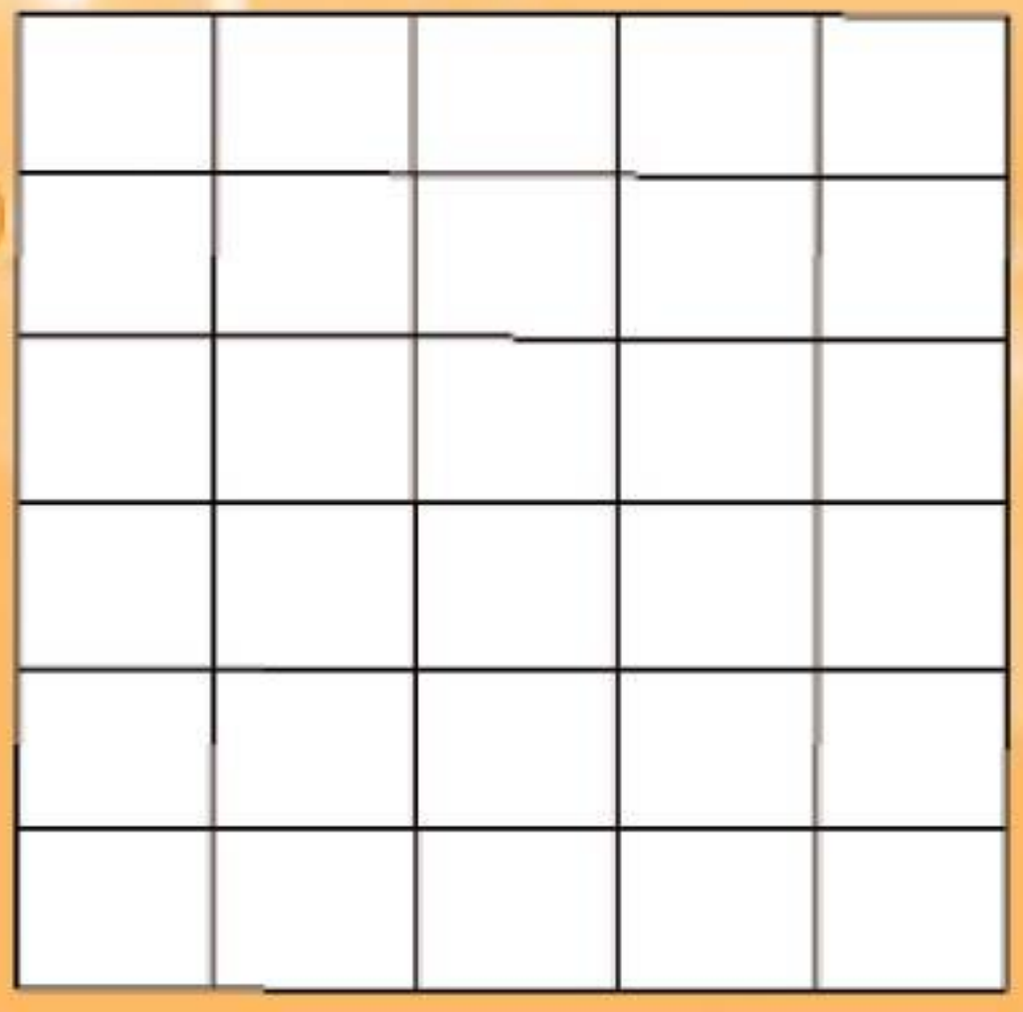

E. पेड़ पर कितने एलियन हैं?

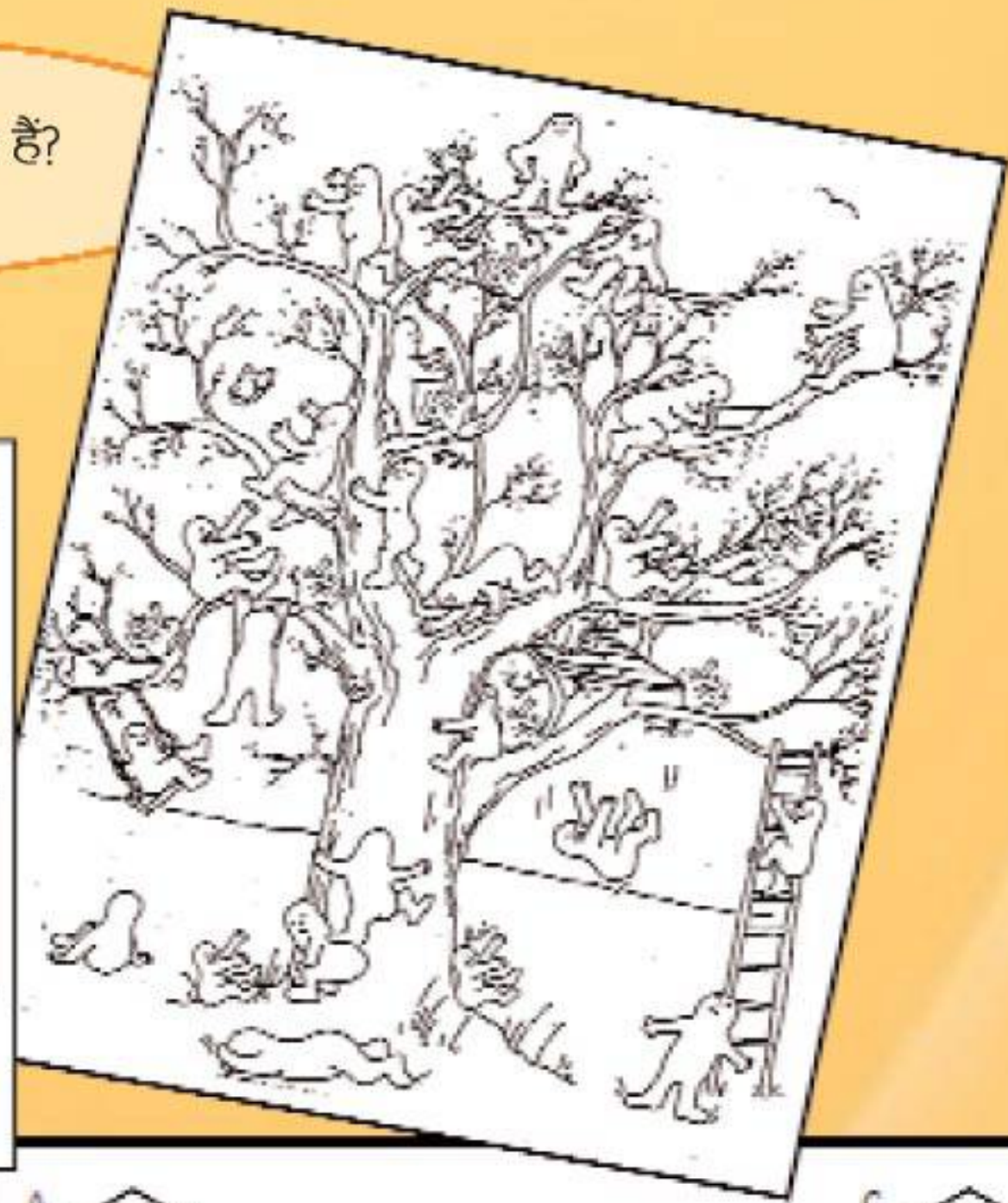

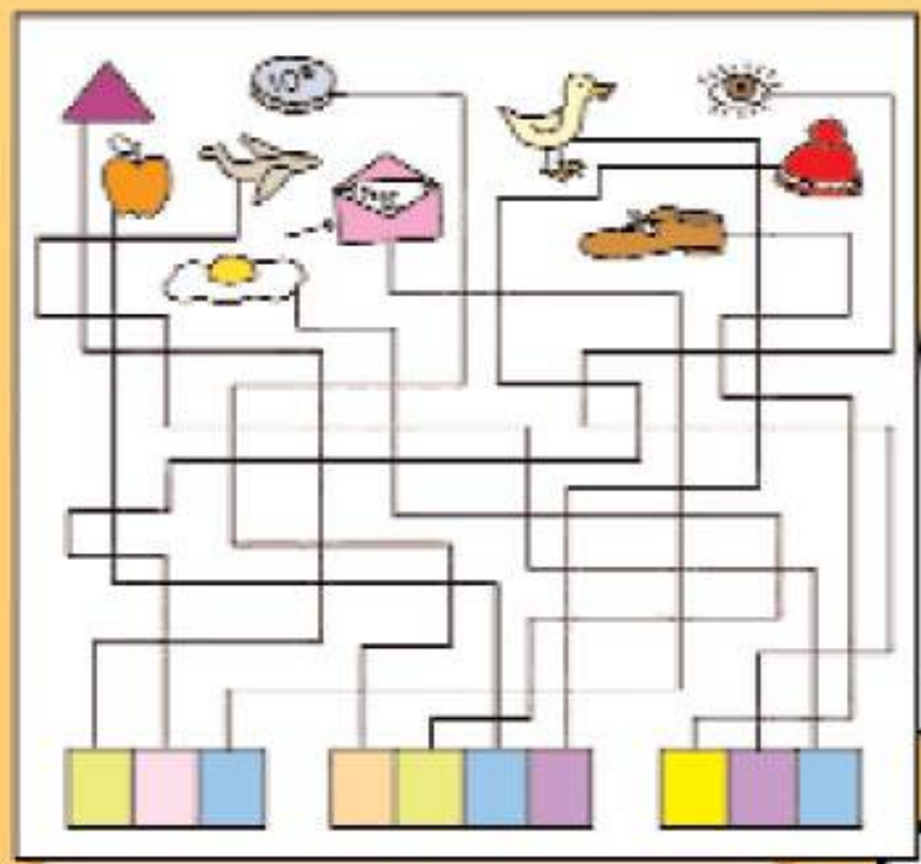

F. कौनसा डिब्बा सही है?

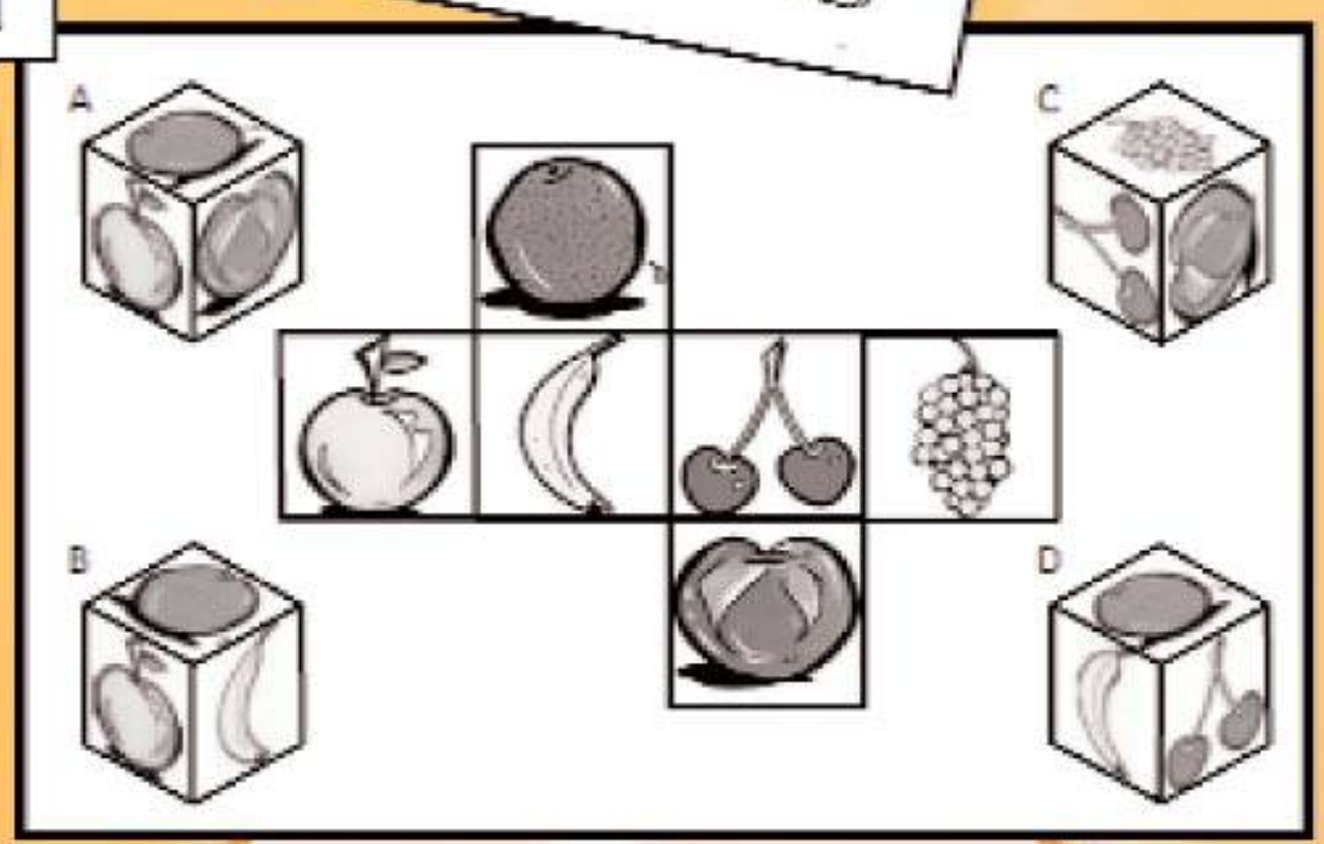

G. हर वस्तु का पहला अक्षर लिखकर देखो, क्या लिखा है?

H. कौनसा शेडो किसका है?

उत्तर

E. = 32
F. = C
G.= THE PEAD SEA
H. = 1-7, 4-10, 5-2, 8-3, 9-6

B.

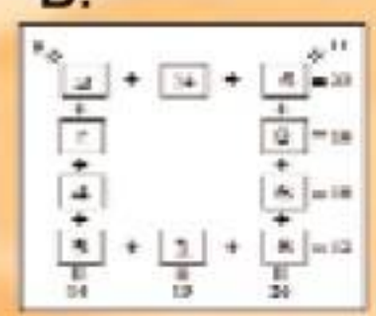

C.

KidsClub

चेतन चौधरी
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-मुण्डावरा, अलवर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

विक्रम सिंह भाटी
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-खारिया, रामसर
रुचि-पढ़ना,खेलना।

ध्रुव गौड़
उम्र- 6 वर्ष
स्थान-हापुड़ (उ.प्र.)
रुचि-खेलना, पढ़ना।

दीपक कुमार पटेल
उम्र- 11 वर्ष
स्थान- कालिन्दीपुरम
रुचि-पढ़ना, खेलना।

श्रीआ शर्मा
उम्र- 8 वर्ष
स्थान-कानपुर (उ.प्र.)
रुचि-ड्रॉइंग, पढ़ना।

मुकेश वर्मा
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-तरयासुजार (उ.प्र.)
रुचि-पढ़ना, पेंटिंग।

दिनेश कुमार पटेल
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-कालिंदीपुरम
रुचि-पढ़ना, सिंगिंग।

भगवानाराम सुथार
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-जोधपुर (राज.)
रुचि-पेंटिंग,पढ़ना।

हार्दिक पीपाड़ा
उम्र- 9 वर्ष
स्थान-□यावर (राज.)
रुचि-पढ़ना, घूमना।

गोपाल पुष्पकर
उम्र- 14 वर्ष
स्थान-सिहुला (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

विराट भारती
उम्र- 12 वर्ष
स्थान-आजमगढ़ (राज.)
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

कमलेश देवासी
उम्र- 12 वर्ष
स्थान-मडगांव, जालोर
रुचि-पढ़ना, क्रिकेट।

विराट बाबू माथुर
उम्र- 13 वर्ष
स्थान-चैनपुर (बिहार)
रुचि-पढ़ना, क□प्यूटिंग।

मुस्कान बानो
उम्र- 7 वर्ष
स्थान-वजीरपुर
रुचि-पढ़ना, खेलना।

यशस्वी श्रीवास्तव
उम्र- 12 वर्ष
स्थान-सहादतगंज (उ.प्र.)
रुचि-शास्त्रीय गायन-नृत्य।

शिव करन
उम्र- 10 वर्ष
स्थान-कालिंदीपुरम (उ.प्र.)
रुचि-साइकलिंग, पढ़ना।

बिन्दु से बिन्दु

मिलाएं बिन्दु से बिन्दु। देखें क्या बनता है!

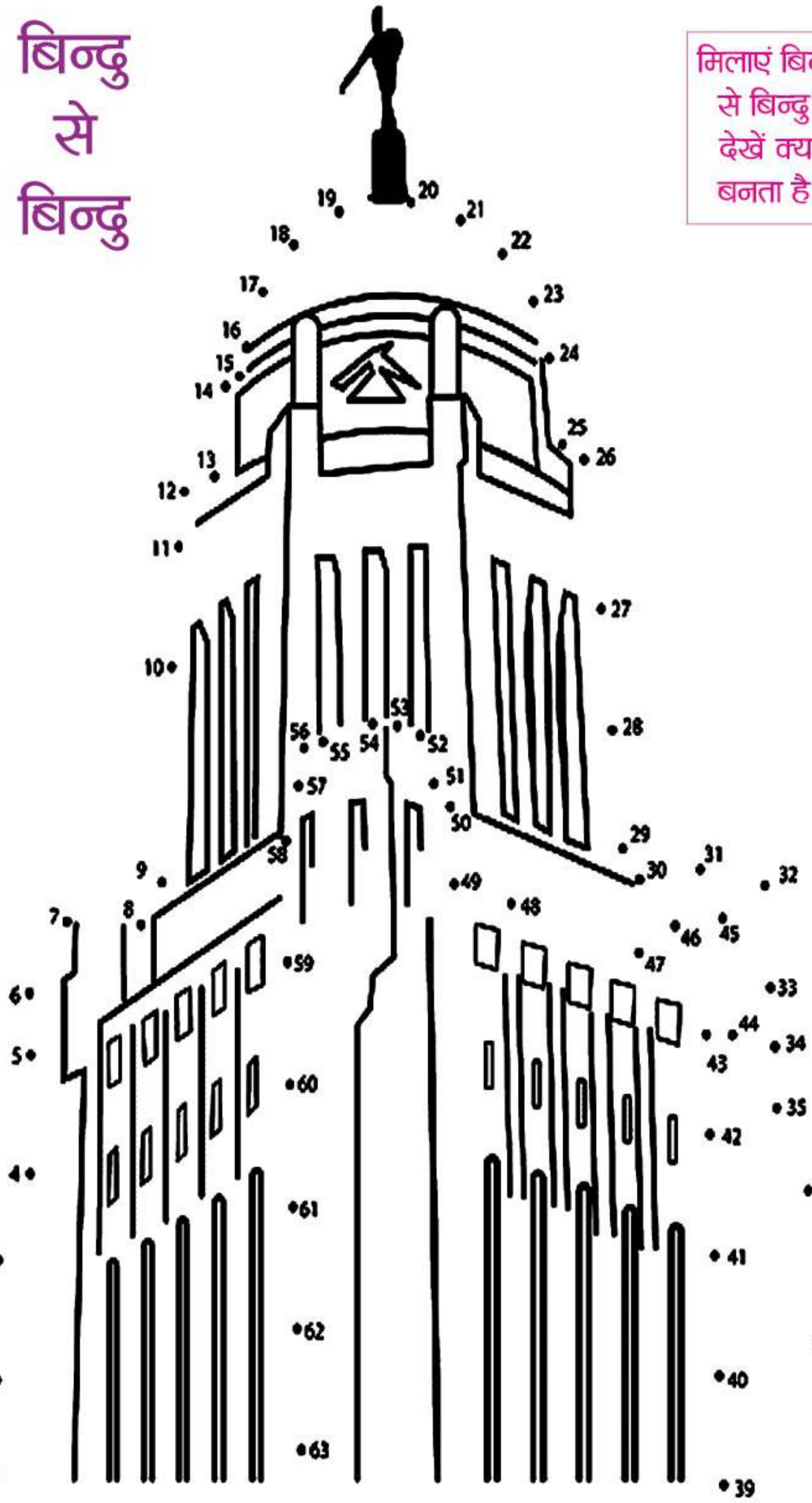

जंतु संसार के ठग!

जानवरों की कई प्रजातियां ऐसी हैं, जो शिकारी को धोखा देने या किसी का शिकार बनने से खुद को बचाने के लिए विभिन्न तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं। इनमें से कुछ तकनीक इतनी उत्कृष्ट होती हैं कि उन्हें सच मानना बहुत मुश्किल होता है। उनका आकार और व्यवहार बेहद आश्चर्यजनक ढंग से बदला है, जिसकी व्याख्या करना भी बहुत मुश्किल है। इनमें से कुछ जानवर ऐसे हैं, जिनके बारे में लोग बहुत ज्यादा नहीं जानते हैं और अक्सर उनकी छवि को उनसे जुड़ी दंतकथाओं ने काफी बदल दिया है। उन्होंने अपना अस्तित्व बचाने का आधार झूठ को बनाया है।

लीफ इंसे□ट एक ऐसा जानवर है जिसके पास अपने बचाव के लिए कोई हथियार नहीं होता है। इसका बाहरी कवच बेहद नाजुक होता है और इसके बाद कोई डंक या किसी तरह का जहर या फिर खुद को बचाने का कोई जरिया नहीं होता है। इसका सबसे अच्छा और इकलौता रक्षात्मक हथियार है, छिपे रहना। खुद को शिकारी जानवरों से बचाने के लिए वह खुद को प□ी के रंग में ढाल लेते हैं। वह ऐसा इतने बेहतरीन ढंग से करते हैं कि उन्हें असली प□ियों में पहचानना मुश्किल हो जाता है।

लीफ फिश में रंग बदलने के कई सारे पैटर्न होते हैं, लेकिन ये हमेशा अनियमित होते हैं। वह जानबूझकर धीरे-धीरे सड़ रहे पेड़-पौधों का रंग लेते हैं। प□ी की तरह दिखना पानी के नीचे काफी फायदेमंद साबित हो सकता है। इससे मांसाहारी शिकारी इसके करीब नहीं आते, और शाकाहारी शिकारी को भी मृत प□ी खाने में दिलचस्पी नहीं होती। संभावित शिकारियों से छिपने के लिए नकल करने की कला में इसे महारत हासिल है।

केकड़ों में भी कई ऐसी प्रजातियां हैं, जो बड़ी खूबसूरती से नकल करती हैं। लेकिन उनमें से सबसे बेहतर है डेकोरेटर केकड़ा। डेकोरेटर केकड़े को हर मौके के लिए अच्छी तरह तैयार होना आता है यानी यह अच्छी तरह जानता है कि किस प्रकार के प्राकृतिक वास में उसे कैसा कवच धारण करना है। इसलिए जब भी यह पुराना स□त कवच छोड़ता है तो नए माहौल के अनुसार ही नया कवच धारण करता है।

चट्टानों को तोड़े बिना उससे शैवाल दूर करने के लिए यह अपने पिंसर्स का इस्तेमाल करता है। उसके बाद यह उसे अपने मुंह से अच्छी तरह साफ कर उस जीवित शैवाल को अपने कवच पर लगा लेता है। डेकोरेटर केकड़े के शरीर की पूरी सतह पर छोटे-छोटे हुक लगे होते हैं, जो वेलक्रो की तरह काम करते हैं, जिससे पौधों के रेशे को अच्छी तरह बांधा जा सके।

तितलियां भी धोखा देती हैं। इसकी नाजुकता और असहायता ने इसकी ऐसी छवि बना दी है, जैसी यह वास्तविकता में बिल्कुल भी नहीं है। इसके पंखों पर मौजूद गोल ध□बे शरारती आंखों की तरह दिखते हैं। इन पर सफेद रंग से कुछ बना भी होता है, जो रोशनी की एक किरण छोड़ती है। ऐसा इसलिए, □योंकि तितलियों का शिकार करने वाले सभी पक्षियों को पता होता है कि उन्हें उल्लू की आंखों से काफी दूर रहना चाहिए।

एलिगेटर स्नैपिंग टर्टल जानवरों की दुनिया का असाधारण मामला है। इस कछुए के मुंह के अंदर का हिस्सा छद्मावरण होता है और वास्तव में इसकी जीभ का सिरा 'कीड़े के आकार' जैसा होता है, जिसका इस्तेमाल यह मछलियों को फांसने के लिए करता है। यह कछुआ पानी में बिना हिले एक ही अवस्था में मुंह खोलकर पड़े रहकर शिकार करता है। इसकी जीभ का सिरा कीड़े की ही तरह हरकत करता है, जिसके पीछे शिकार खुद कछुए के मुंह में चला आता है। शिकार के मुंह में आते ही कछुआ

रैटल स्नेक जब भी गुस्सा होता है तो आमतौर पर अपनी पूंछ बहुत तेजी से जमीन पर पटकता है। जब इसका सामना किसी शत्रु से होता है तो यह उसका ध्यान अपने शरीर के सबसे कम संवेदनशील हिस्से यानी पूंछ की ओर आकर्षित करता है। रैटल स्नेक का नाम उसकी पूंछ के सिरे पर लगे रैटल से आया है, जिसमें कंपन होने पर बेहद तेज आवाज आती है, जो इसके शिकारी को डराती है और इसके पास से गुजरने वालों को इसकी मौजूदगी की चेतावनी देती है।

मैक्सिकन मोकासिंस ने शिकार तकनीक में अपनी पूंछ का इस्तेमाल करने में महारत हासिल कर ली है। यह प्रजाति अपने आसपास के माहौल के रंग में खुद को ढाल लेती है, लेकिन इसकी पूंछ का सिरा सफेद ही रहता है और उतनी तेजी से हिलता नहीं है। यह अपनी पूंछ को बेहद धीरे-धीरे मोड़ता है, जैसे कि कोई कीड़ा मुड़ रहा हो और इस तरह यह पक्षियों, छिपकलियों

नीचे दिये गए सवाल का सही जवाब दें, और एनिमल प्लेनेट से इनाम पाएं।

- **रैटल स्नेक के शरीर का कौन-सा भाग शिकारी को विचलित करने/शिकारी का ध्यान भंग करने के लिए आवाज करता है?**

(A) सिर
(B) पूंछ
(C) त्वचा
(D) जीभ

Name.....

Address.....

City.....Pin.....Phone.....

Date of birth...../...../ .....

एंट्री फॉर्म को पूरा भरें और इसे इस पते पर भेज दें-

Animal Planet- Balhans Contest
P.O. Box No. 10534, New Delhi- 110 067

जीव-जंतुओं की ऐसी ही अद्भुत आदतों और व्यवहारों के बारे में और जानकारी के लिए एनिमल प्लेनेट पर हर शाम 6 बजे देखना न भूलें 'एनिमल प्लेनेट सफारी।'

पिछले बार पूछे गए सवाल, 'चिंपांजी के दोस्त कौन होते हैं?' का सही जवाब है – गोरिल्ला

शर्तें : कृपया प्रवेश पत्र में अपने विवरण भरें, सही जवाबों पर निशान लगाएं और ऊपर दिये गए पते पर सामान्य डाक से भेजें। इस प्रतियोगिता के छपने के दस दिन के अंदर डिस्कवरी कम्यूनिकेशन्स इंडिया (डीसीआईएन) द्वारा प्राप्त सही एंट्रियों में से विजेताओं का चुनाव किया जाएगा। यदि कई एंट्री सही निकलती हैं, तो डीसीआईएन किन्हीं पांच प्रतियोगियों को रैंडम आधार पर चुनेगा और उन्हें विजेता घोषित करेगा। विजेताओं और प्रतियोगिता के नियमों के सिलसिले में डीसीआईएन का फैसला अंतिम और बाध्य होगा। इस प्रतियोगिता से जुड़े सारे नियम जानने के लिए कृपया देखें।

www.discoverychannel.co.in/animalplanet-balhans contest

रंग दे प्रतियोगिता परिणाम

अक्टूबर द्वितीय, 2014

1. **बजरंग कुमार,** गोपालगंज (बिहार)
2. **संध्या शर्मा,** सहारनपुर (उ.प्र.)
3. **समर्थ मिश्रा,** लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)
4. **तन्वी राठी,** इन्दौर (म.प्र.)
5. **अन्नु कुमारी,** सिन्दरी, धनबाद (झारखंड)
6. **रुचिता सिसोदिया,** मंगलपुरा, झालावाड़ (राज.)
7. **अतुल सैन,** छापोली, झुंझुनूं (राज.)
8. **तुषार सोनगरा,** सरदार शहर, चूरू (राज.)
9. **आरती पारीक,** डीडवाना, नागौर (राज.)

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

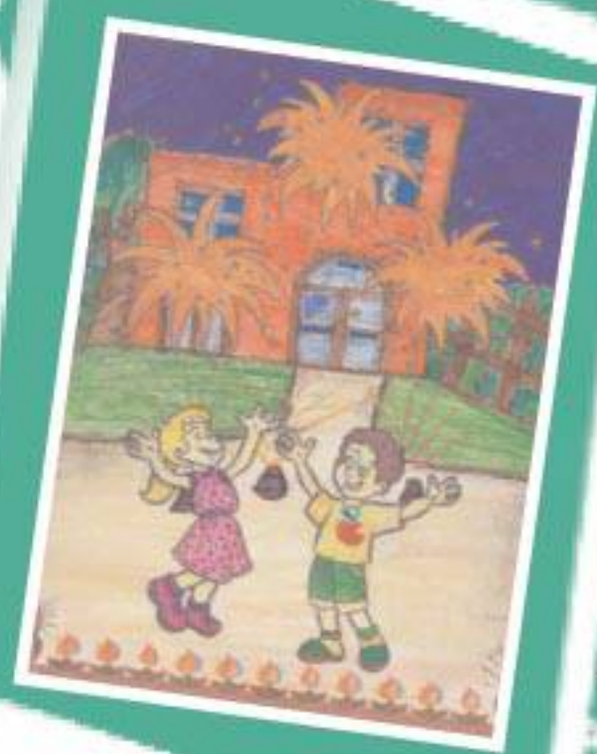

सराहनीय प्रयास

1. **सागर,** पटना (बिहार)
2. **फरहा वसीम,** बूंदी (राज.)
3. **कुमार अनुज,** रोहतास (बिहार)
4. **अकरम मोह□मद,** झालावाड़ (राज.)
5. **राजकुमार शर्मा,** लबाना, जयपुर (राज.)
6. **आशुतोष मौर्य,** आजमगढ़ (उ.प्र.)
7. **राकेश यादव,** मऊ (राज.)
8. **पूजा कुमारी,** बेगूसराय (बिहार)
9. **देवव्रत शर्मा,** गूगलकोटा (राज.)
10. **प्रकाश मिश्रा,** दरभंगा (बिहार)
11. **नितिन सोनी,** उदयपुर (राज.)
12. **आरती वर्मा,** श्रीगंगानगर (राज.)
13. **विनय कुमार पटेल,** इलाहाबाद (उ.प्र.)
14. **कल्याण सिंह,** लखनऊ (उ.प्र.)
15. **विपिन कुमार पटेल,** झालावाड़ (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 360 का परिणाम

1. **भव्या गौड़,** हापुड़ (उ.प्र.)
2. **नीरजा प्रधान,** लाडपुर, कोटा (राज.)
3. **प्रखर अग्रवाल,** आगरा (उ.प्र.)
4. **आर्यन अग्रवाल,** मुज□फरनगर (उ.प्र.)
5. **रुकमणी,** भोपाल (म.प्र.)
6. **अक्षत सिंह पंवार,** मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
7. **ममता सालवी,** बावड़ी गुआर, राजसमंद (राज.)
8. **तेजबीर सिंह,** लखनऊ (उ.प्र.)
9. **ध्रुव पालीवाल,** उदयपुर (राज.)
10. **दुष्यंत सिहं चौहान,** गिन्नाणी, बीकानेर (राज.)

ज्ञान प्रतियोगिता- 360 का सही हल

अजय देवगन,
ऋतिक रोशन,
ईशा देओल-
हेमामालिनी,
करीना कपूर,
अमृता राय।

1. उर्मिला
2. लंका में
3. ऋष्यमूक
4. रामायण
5. अंजना

(विजेताओं को सौ-सौ रुपए पुरस्कारस्वरूप भेजे जा रहे हैं)

विशेषः कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

ज्ञान प्रतियोगिता

363 परखो ज्ञान, पाओ इनाम

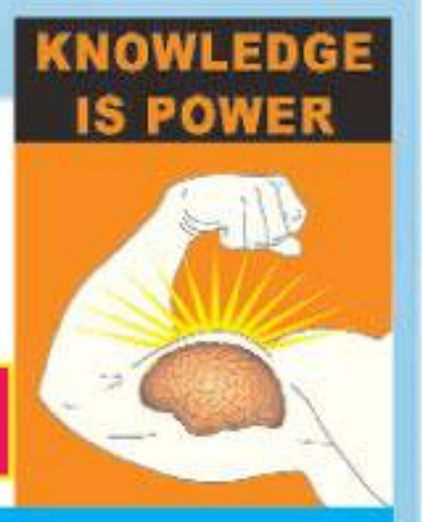

1. यदि आप लोटस टेपल को देख रहे हैं, तो आप किस शहर में हैं ?

(अ) दिल्ली

(ब) चैन्नई

(स) कोलकाता

2. विजय स्तंभ किस शहर में स्थित है?

(अ) पटना

(ब) लखनऊ

(स) चिौड़गढ़

3. जंजीरा किला किस प्रदेश में स्थित है ?

(अ) महाराष्ट्र

(ब) छीसगढ़

(स) झारखंड

4. शिवाजी टर्मिनस किस शहर में है ?

(अ) पणजी

(ब) मुबई

(स) दिल्ली

5. स्वर्ण मंदिर देखने के लिए आपको कहां जाना होगा?

(अ) ग्वालियर

(ब) अमृतसर

(स) वाराणसी

नीचे चित्रों में राजनैतिक हस्तियों के चित्र हैं। जरा इनके नाम व पदनाम तो लिखिये जरा।

.....

.....

.....

.....

ज्ञान प्रतियोगिता- 363

नाम.....

पता.....

.....पोस्ट .....

जिला.....

राज्य.....पिनकोड.....

विशेषः कृपया अपना पता पूरा लिखें। पिनकोड नंबर अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी।

जीतो 1000 रुपए के नकद पुरस्कार

चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए (प्रत्येक को सौ रुपए) भेजे जाएंगे।

हमारा पता बालहंस, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राजस्थान)

रंग दे

1000 रुपए के पुरस्कार

दोस्तो, इस चित्र में आपको भरने हैं, प्यारे-प्यारे रंग। चटख रंगों को भर कर, चित्र को काटकर (बालहंस कार्यालय, राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, 5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर) में दिनांक 10 दिसम्बर, 2014 तक भिजवाना है। अगर आपकी उम्र 15 वर्ष या इससे कम है, तभी आप इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। अपना नाम, आयु व पूरा पता साफ-साफ लिखना। पते में पिनकोड अवश्य लिखें। बिना पिनकोड के प्रविष्टि स्वीकार नहीं की जाएगी। सिर्फ डाक से भेजी गई प्रविष्टियां ही स्वीकार की जाएंगी। चयनित दस प्रविष्टियों को 100-100 रुपए भेजे जाएंगे।

नाम.....

पता.....

.....

पोस्ट.....

जिला व राज्य.....

पिनकोड.....

दूंढो तो...

नीचे लिखी गई आकृतियों को चित्र में दूंढ़ना है। इतना करके चित्र में रंग भी तो भरो, देखो कितना मजा आता है!

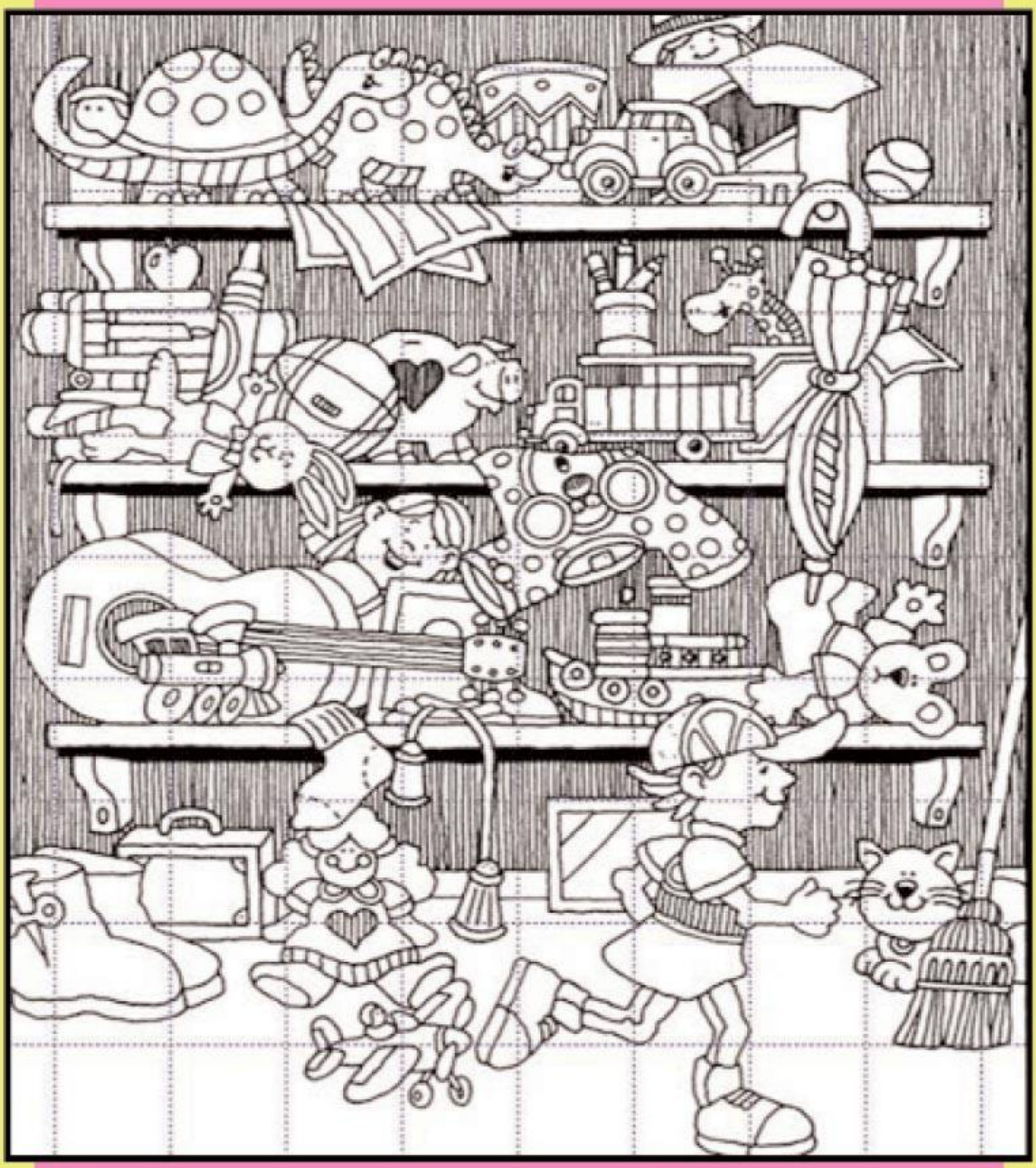

candle	canoe	comb
crown	key	mallet
orange slice	ring	rugby ball
saltshaker	spectacles	teacup
toothbrush	torch	turtle

भीखू

बंदर का डर

कॉन्सेप्ट- **उन्नी**
ड्रॉइंग- **सिमि मुहम्मा**

अंतर बताओ

1. टोस्टर में टोस्ट नहीं है।
2. खिड़की में गमला नहीं रखा।
3. माइक्रोवेव में रखा केक बड़ा है।
4. गैस पर रखे बर्तन में धुआं उठ रहा है।
5. प्रेस में छेद कम हैं।
6. गैस के चूल्हे में चार बर्नर हैं।
7. कुर्सी का बैक दिखाई नहीं दे रहा।
8. सिगरेट केस में सिगरेट ज्यादा है।
9. केबिनेट के कुंदे गायब हैं।
10. टोस्टर का वायर बीच में से टूटा हुआ है।

उत्तर

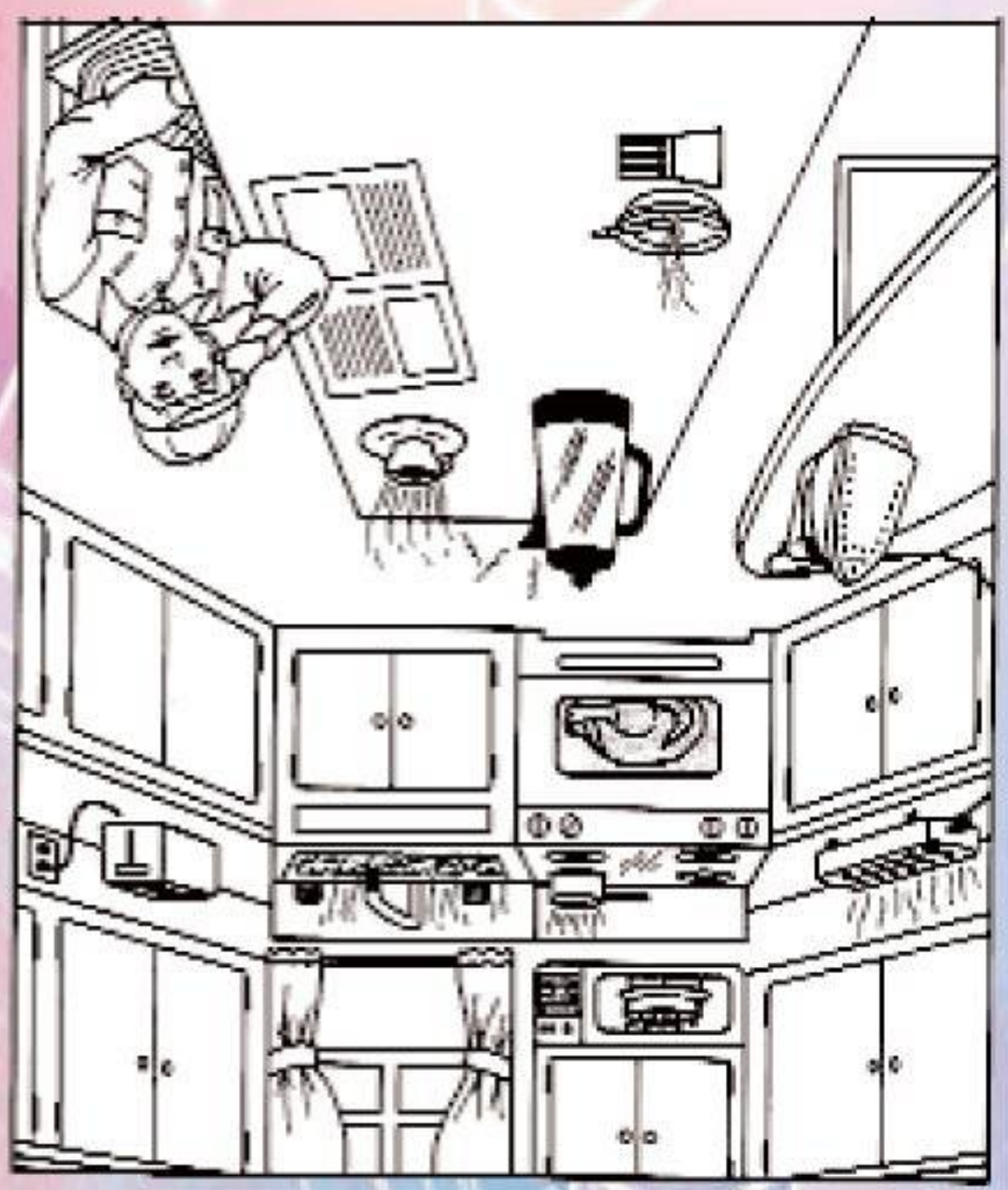

1. गमले में फूल कम हैं।
2. तितली की डिजाइन दूसरी है।
3. बास्केट में फूल की डाली नहीं है।
4. खरगोश ने कैप लगा रखी है।
5. खरगोश के पीछे फ्लॉवर पॉट रखा है।
6. चिड़िया के बच्चे की जगह फूलों का गुच्छा रखा है।
7. नीचे रखे फूल खिले हुए हैं।
8. बड़े वाले फूलों के गुच्छे में रिबन नहीं बंधा।
9. गमले पर रिबन का डिजाइन बना है।
10. बास्केट पर तितली की जगह फूल बने हैं।

उत्तर

उससे दोस्ती करने की कोशिश मत करना।
अरे, कहीं हम उसके पास तो नहीं जा रहे!
लगता है, अब हमारे बुरे दिन आने वाले हैं।
और हां, तुम्हारे डॉक्टर का क्या कहना है?
उसने कहा कि मुझे कछुआ फ्लू होने वाला है।
क्या...ओह...
और यदि मैं कछुआ बन गया तो, इस तालाब में रहूंगा...।
तुम मुझे यहां रोज मिलने आना... सुबक... सुबक...
तुम चिंता मत करो...
तुम्हें किसने बताया कि कछुआ फ्लू से तुम कछुआ बन जाओगे।
एक कछुआ!

ठीक है, इसकी दवाइयां क्या हैं?
इसके लिए तुम्हें सवा पाव गूजबेरी और सवा पाव स्ट्रॉबेरी के जूस को मिलाकर दिन में दो बार लेना चाहिए।
इस जूस को लेने के लिए घास के ढेर से एक स्ट्रॉ ले लेता हूं।
इसके बाद बेरीज ही लेनी बाकी रहेगी।
ओह नहीं...मकाक
तू वहीं रुक, तुझे छोड़ूंगा नहीं...तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर

(समाप्त)

नव□बर प्रथम, 2014

मैं बालहंस को गत चार सालों से पढ़ रहा हूं। मुझे इसकी कहानियां बहुत अच्छी लगती हैं। इसके अलावा आर्ट एंड क्रा□ट, वर्ग पहेली, चित्रकथाएं, सामान्य ज्ञान और नॉलेज बैंक भी बहुत अच्छे लगते हैं। इस अंक में मुझे चित्रकथा यूं मित्र बने हनुमान-सुग्रीव, उल्टी अ□ल, सैरसपाटा में मैसूर, कैसे चुने जाते हैं पोप, ऐसे बनता है ड्राई मिल्क, सीख सुहानी, बालहंस न्यूज, सामान्य ज्ञान में आगरा का किला, एलिफेंटा की गुफाएं, कहानियां सहित सभी कुछ रोचक और ज्ञानवर्द्धक लगा।

-अवनीश कुमार झा,
मुज□जरपुर (बिहार)

मैं बालहंस की नियमित पाठिका हूं। गत पांच वर्षों से इसे पढ़ रही हूं। यह एक ज्ञानवर्द्धक, मनोरंजक-रोचक मैगजीन है। इसकी कहानियां, गुदगुदी, आर्ट एंड क्रा□ट, चित्रकथाएं, सीख सुहानी, नॉलेज बैंक, बोलें अंग्रेजी में दी जाने जानकारियां मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। इसे साप्ताहिक कर दें।

-गरिमा भारद्वाज, अजमेर (राज.)

बालहंस हमें लगता है प्यारा
प्यारा और हम सभी का है दुलारा।
सिखाता हमेशा अच्छी-अच्छी बातें
कथाएं-कहानी और ज्ञान की बातें।
बड़े प्यार से मुझे समझाता
कभी भी ना वो मुझे सताता।
जानकारियां बहुत अच्छी लगतीं
खूब सुहाती बालहंस की दोस्ती।
मुझे लगता है प्यारा, वो हम सब का
है दुलारा, मेरा दोस्त बालहंस प्यारा।

-रि□की सम्राट,
इस्लामपुर (बिहार)

इनके पत्र भी मिले

-शालिनी माहेश्वरी, चौमूं, जयपुर
-सुशील डांगा, चावंडिया कलां
-एकता रानी, उझानी, बदायूं (उ.प्र.)
-आशुतोष कुमार शर्मा, अनवल, छपरा
-दीप गुप्ता, इन्दौर (म.प्र.)
-सोनू कुमार, पूर्वी च□पारण (बिहार)
-ऋषभ डेसरडा, गंगापुर, भीलवाड़ा
-किशोर कुमार, कुड़ला, बाड़मेर
-राजेन्द्र गोयल, सरदारपुरा, बाड़मेर
-आबिद, जहानाबाद (बिहार)
-प्रदीप मीणा, बबाई (राज.)
-ब्रजेश पाण्डेय, तुतबारी, गया
-निजामुद्दीन अंसारी, जूनापुर, सिवार

सब्सक्रिप्शन फॉर्म

बालहंस

ग्राहक का नाम.....

पता (जिस पते पर बालहंस चाहिए)-

नाम.....पता.....

.....

पोस्ट.....जिला.....राज्य.....

कितने समय के लिए- द्वैवार्षिक (480/-रुपए)..... वार्षिक (240/-रुपए) ..... अर्द्धवार्षिक (120/-रुपए).....

ड्राफ्ट संख्या .....मनीऑर्डर संख्या .....

कृपया ग्राहक शुल्क (सब्सक्रिप्शन) की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से **बालहंस, जयपुर** के नाम भिजवाएं। ड्राफ्ट के साथ इस फॉर्म को भी संलग्न कर भेज सकते हैं।

सब्सक्रिप्शन व वितरण संबंधी पूछताछ के लिए कृपया फोन नं. 0141-3005825 पर संपर्क करें।

राशि इस पते पर भेजें-

बालहंस (पाक्षिक)
वितरण विभाग
राजस्थान पत्रिका प्रकाशन,
5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र,
जयपुर (राजस्थान), पिन- 302 004

.....
ग्राहक का पूरा नाम व हस्ताक्षर

नोटः बालहंस पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। डाक अव्यवस्था के कारण अंक न मिल पाने की सूचना एक माह के भीतर दे देवें। अंक उपलब्ध होने पर ही दुबारा भेजा जाएगा। देर से भेजी गई आपत्तियां अस्वीकार होंगी।

कार्टून कोना

स्वत्वाधिकारी राजस्थान पत्रिका प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक व प्रकाशकः रघुनाथ सिंह द्वारा राजस्थान पत्रिका प्रा. लि., केसरगढ़, जे.एल.एन. मार्ग/5-ई, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं. 73-74, रीको औद्योगिक क्षेत्र, झोटवाड़ा, जयपुर (राज.) से मुद्रित। आर.एन.आई. नं. 46292/86, सम्पादकः आनन्द प्रकाश जोशी

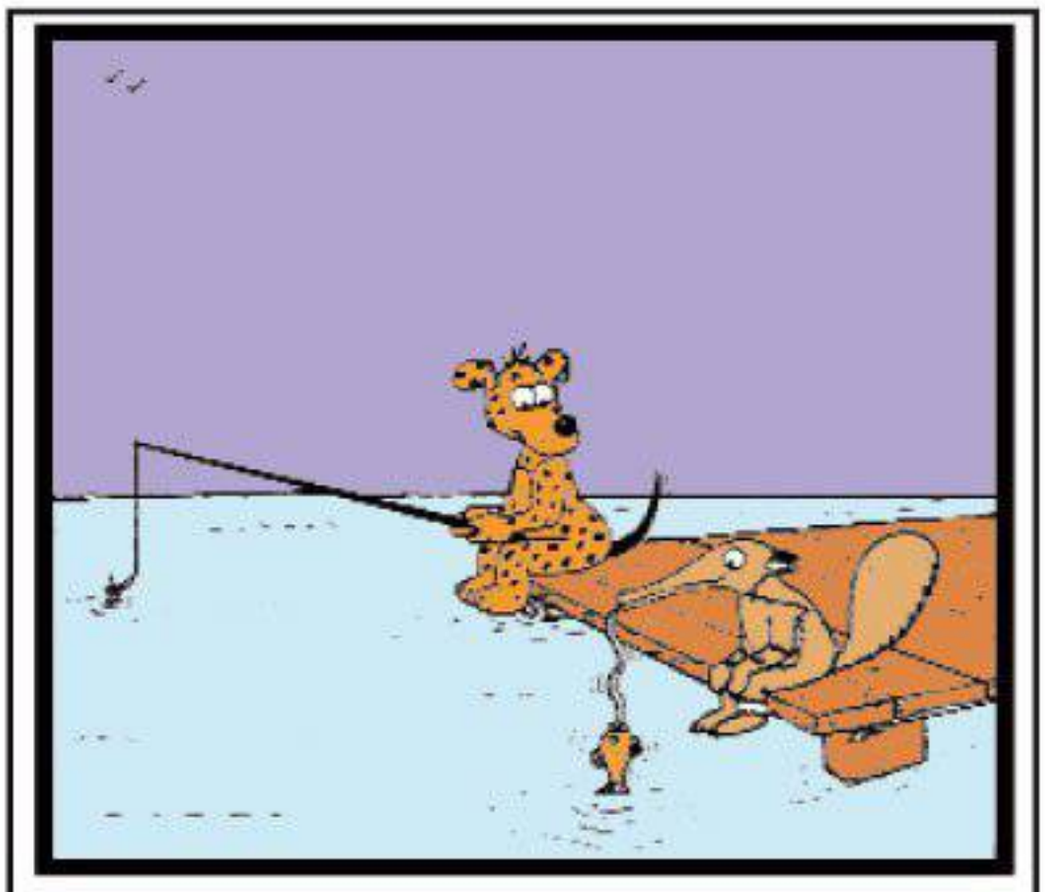

अरे, इसे तो कृत्रिम कांटे की जरूरत ही नहीं है!

अंतरिक्ष में तो हाथी मामा भी भारहीन हो गये हैं!

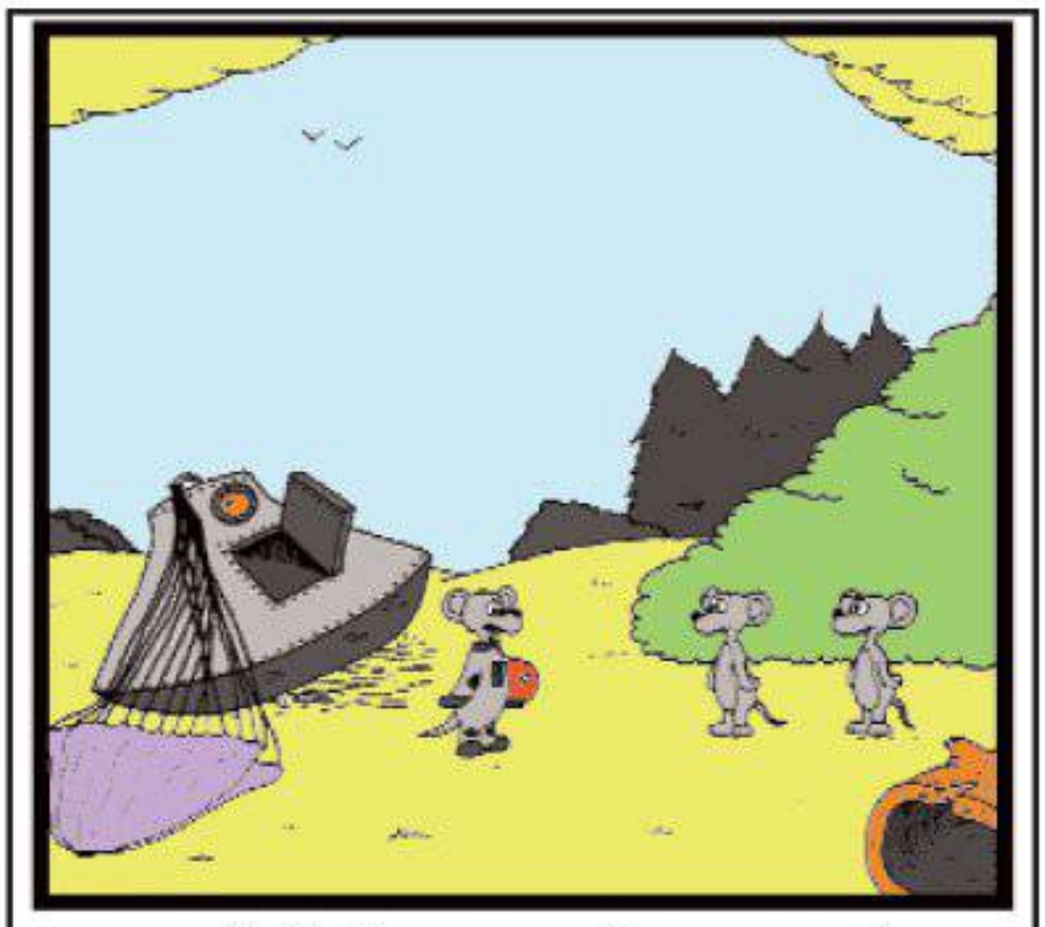

बच्चो, मैं चांद पर जाकर चैक कर आया हूं,
वह पनीर का बना हुआ नहीं है।

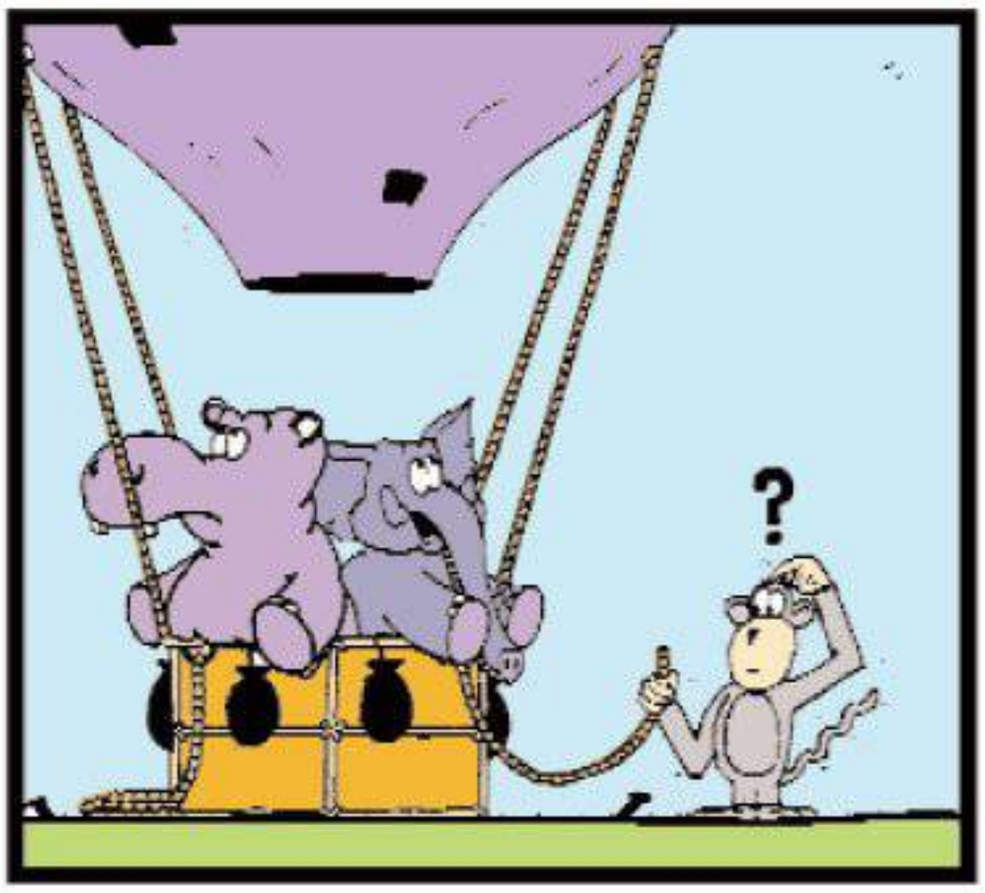

कहा था न, दोनों मत बैठना। अब यह कैसे उड़ेगा!

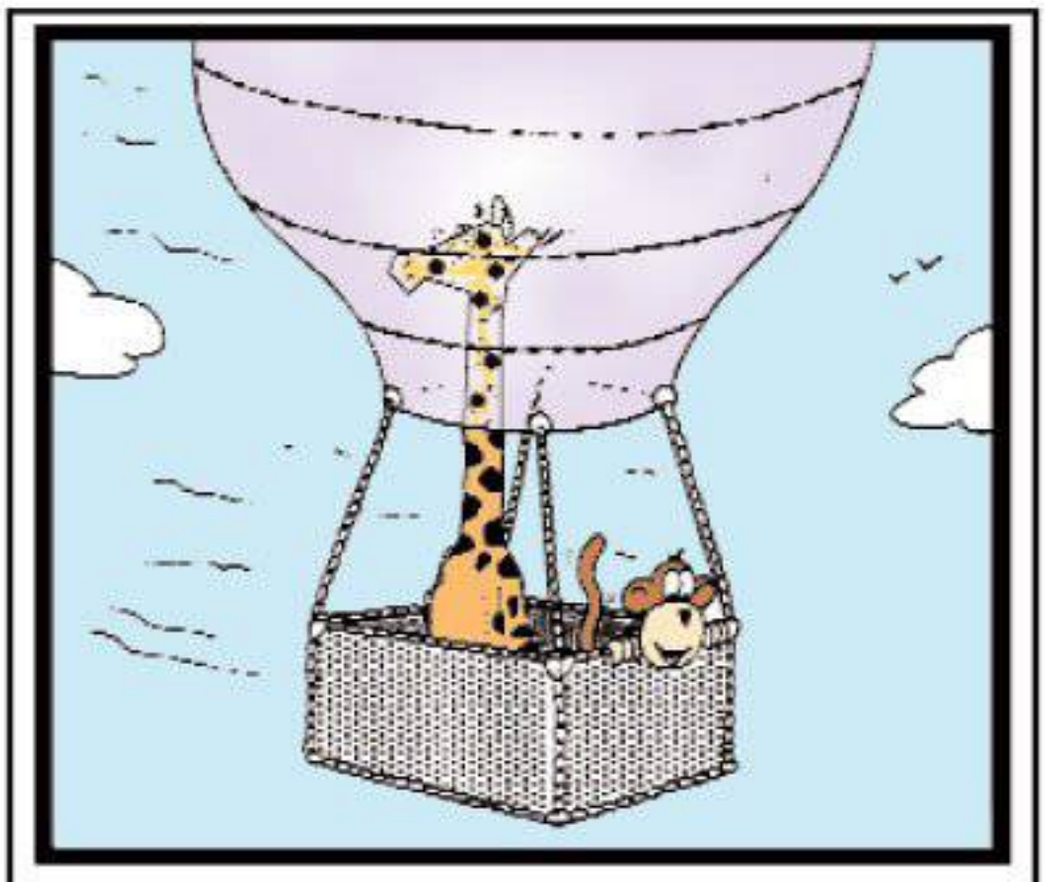

अरे देखो तो जिराफ महाशय, क्या नजारा है!

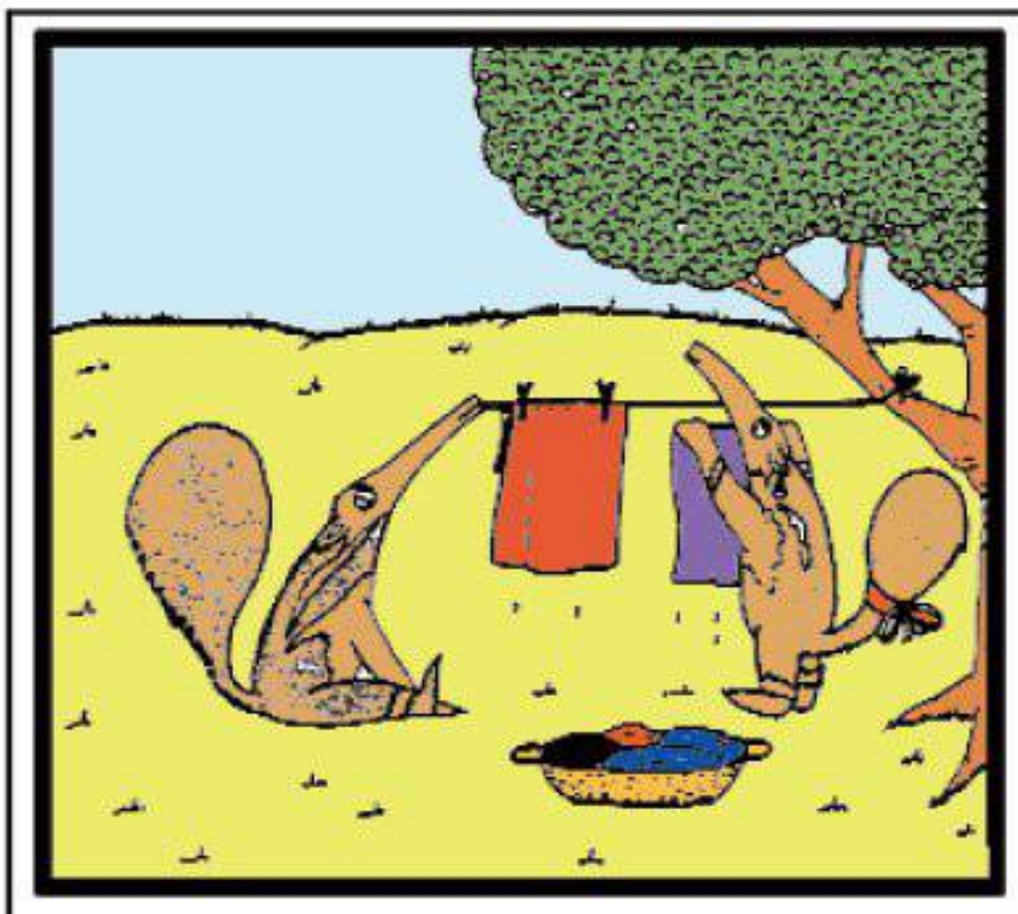

जिस दिन कपड़े धुलते हैं, यही नजारा होता है!